अन्तरा शब्दशक्ति

मई-2018

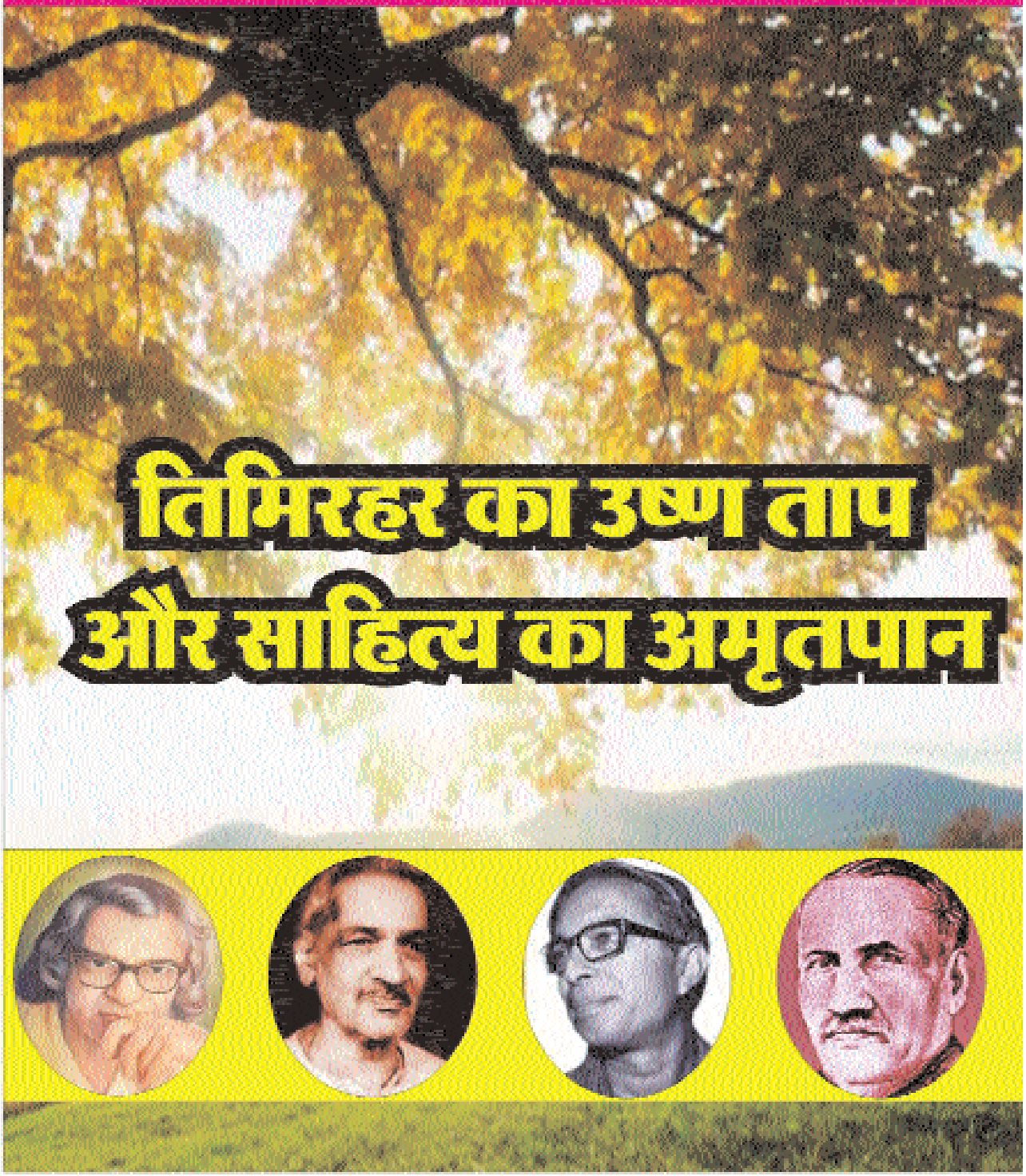

मासिक वेब पत्रिका

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,

सादर प्रणाम,

क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।

आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी, लेख, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएं आमंत्रित हैं।

आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) matrubhashaa@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में) को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-	प्रकाशन-
साहित्यिक उपनाम-	सम्मान-
जन्मतिथि	ब्लॉग-
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)	अन्य उपलब्धियाँ-
शिक्षा-	लेखन का उद्देश्य-
कार्यक्षेत्र-	एक मौलिक रचना
विधा -	ईमेल-
मोबाइल/वाट्स ऐप -	छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान, क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

हिन्दीग्राम — www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

प्रधान संपादक
डॉ.प्रीति सुराना

तकनीकी सम्पादक
डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सम्पादकीय सलाहकार
श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री देवेन्द्र सोनी
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिक्स
मृदुल जोशी
सुश्री मीना कौशल

राजकीय प्रतिनिधी
सुश्री सोमा विश्वास- दिल्ली
सुश्री वसुधरा रॉय- महाराष्ट्र
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जम्मू एवं कश्मीर
मंगल प्रसाद पासवान- उत्तरप्रदेश
प्रकाश कायस्थ- आसाम
तपन कुमार पैन- पश्चिम बंगाल
अनिल कुमार शर्मा 'चिंतित'- हरियाणा
रिषभचंद संका- राजस्थान
श्रीमन्नारायण चारी- तेलंगाना
सुश्री विभा श्रीवास्तव-बिहार
सुश्री पूजा टाक- तमिलनाडु
सुश्री अर्चना शर्मा-गोआ

*-पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी हैं।

अ अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-1 अंक-11 मूल्य-25 रुपए
मई-2018

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	4
2.	प्रकाशित पुस्तकें ही हैं लेखक की पहचान	5
3.	हर सिक्के के दो पहलू होते हैं	6
4.	हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार	7
5.	सीरिया में ट्रंप का शीर्षासन महत्वपूर्ण है विद्यार्थियों की उपस्थिति	8
6.	25 एनजीओ पर तलवार	9
7	नतोहम्	10
8.	गाँधी कुछ प्रश्न कुछ उत्तर	12
9.	न भूतो न भविष्यति	13
10.	गवरी, सांस्कृतिक अवमूल्यन	14
11.	फिर क्यों आई हो?	15
12.	रिश्तों की अहमियत समझें	16
13.	बेचारीपन या बेहयापन	17
14.	वाकई, इस चमत्कार को नमस्कार	18
15.	इतनी सारी पृथ्वियां	19
16.	साहित्य के उन्नयन में गालियां	21
17.	बुद्धिमान व्यक्ति जीवनभर अध्ययन करता है	22
18.	मृत्युभोज का सामाजिक बहिष्कार हो	23
19.	पुस्तक- समीक्षा	25-27
20.	मामला भाषा का नहीं, मातृभाषा का है	28
21.	हिन्दी को जनभाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध हिन्दी ग्राम	30
22	10 भारतीय परंपराएं	33
23.	सिद्धपीठ मंदिर	36
24.	कच्चा और पक्का उपवास	39
25.	कितनी सुरक्षित आपकी बेटी	40
26.	पॉक्सो एक्ट क्या है?	43

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिक्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु.

www.antrashabdshakti.com

संपादकीय

तिमिरहर का उष्ण ताप और साहित्य का अमृतपान

डॉ. प्रीति सुराना
प्रधान संपादक

ज्यों-ज्यों सूर्य के तेवर बढ़ रहे हैं, भौंहें चढ़ रही हैं, त्यों-त्यों प्रकृति पर उष्णता और ताप बढ़ता ही जा रहा है। यह ताप मानस के मस्तिष्क में उतनी ही तीव्रता से प्रभाव डाल रहे हैं, जितनी तीव्रता से एक पात्र में खौलता पानी। राष्ट्र की विगत एक माह की गतिविधियों एवं खबरों पर यदि समसरी निगाह से भी देखा जाए तो मानवीयता की हत्या के साथ मनुष्यता के दुष्कर्म से यह राष्ट्र भी अछूता नहीं रहा।

अबोध बालिका, बच्चियां, नादान परियों के घरौंदों पर व्यभिचारियों की गिद्ध दृष्टि संस्कृति प्रधान विश्व गुरु जहां माँ की कोख से ही संस्कार सींचे जाते हों, उस पर लानत से कम नहीं है। विगत माह में कठुआ, उन्नाव, इंदौर जैसे शहरों में हुए बच्चियों के साथ दुष्कर्म ने सांस्कृतिक पतन की सारी पराकाष्ठा लांघ दी और इस राष्ट्र के नाम पर ही कलंक के काले टीके को लगाकर हमारी अस्मिता को तार-तार कर दिया। क्या, मानवता की मृत्यु के बाद जीवन के होने की संभावना बच जाती है? यकीनन नहीं, किन्तु इस तरह की घटनाएं आए दिन सरेआम होना हमारी संस्कृति के, संस्कारों के, नष्ट होने की सूचना मात्र तो नहीं? हमें पुनः मातृभाषा से मातृभूमि तक, माँ से महिला तक, मन से मान तक संस्कार सींचन की नैतिक शिक्षा वाली किताब बस्ते में शामिल करवानी होगी। वरना आज किसी और की बच्ची थी, कल आपकी बहन या बेटी, माँ या पत्नी इन हवस के भेड़ियों का शिकार बनेगी और हो भी सकता है कि वह हवस का भेड़िया आपके या हमारे परिवार से ही कोई निकल जाए?

भगवान बुद्ध शरणागत को क्षमा और विश्व को शांति का संदेश देते हुए चिर-निर्वाण की बात कह गए। हमें भी अपने जीवन की शाश्वत इकाइयों में भगवान बुद्ध की इन्हीं शिक्षाओं का समावेश करना न केवल आवश्यक है, बल्कि अनिवार्य ही है। विश्व 'शांति से युद्ध' की ओर बढ़ रहा है। इसका मतलब साफ है कि कब-कौन-कहां-कैसे आपके ही घर का भेदी बनकर पीठ पर वार कर जाएगा और राष्ट्र युद्ध के दावानल में झोंक दिया जाएगा, मालूम नहीं पड़ेगा। हमें भगवान बुद्ध के बताए रास्तों पर चलकर विश्व शांति की ओर अग्रसर होते हुए परमधाम की यात्रा निर्बाध रूप से करनी चाहिए, क्योंकि प्रत्येक जीवन का लक्ष्य मृत्यु न होकर परमपिता परमात्मा के चरणों की अनुभूति होना है।

ज्येष्ठ की गर्मी की तपन के साथ-साथ ही इसी माह में छायावाद के प्रमुख स्तंभ में से एक सुमित्रानंदन पंत की जन्म जयंती है।

बार-बार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन,
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन?
व्याप्त हो गए जन-मन में तुम आज महात्मन्,
नव-प्रकाश बन आलोकित कर
नवजगजीवन।
पार कर चुके थे निश्चय तुम, औ-निधन,
इसलिए बन सके आज तुम दिव्य जागरण।
श्रद्धानत् अंतिम प्रणाम करता तुमको मन,
हे भारत की आत्मा, नवजीवन के जीवन।

इन्हीं पंक्तियों में पंत ने जीवन के तिमिर के ताप को प्रणाम किया और यही सत्य भी सनातन है।

उपन्यास के वृहद आकाश में एक नक्षत्र हजारीप्रसाद द्विवेदी भी रहे। जो इसी माह हम साहित्यनवांकुरों से बिछड़-से गए। बनारसीदास चतुर्वेदी, पदुमलाल पन्नालाल बख्शी, पं. गोपाल प्रसाद व्यास, पं. रामकिलास शर्मा, व्यंग्यकार शरद जोशी, मंगलेश डबराल जैसे हिन्दी साहित्य के नक्षत्रों को याद करने का माह है-मई।

अंतरा शब्द शक्ति ने अपनी यात्रा में इसी माह प्रकाशन के पंख लगाकर लगभग 40 किताबों का प्रकाशन किया। यह उपलब्धि न केवल प्रथम पायदान है, बल्कि साहित्य सेवा का सुअवसर भी।

मार्च-अप्रैल के संयुक्तांक जब आप सब सुधी पाठकों के हाथ में पहुंचा और आपके प्रतिक्रिया रूपी संदेश प्राप्त हुए तब अंतरा शब्द शक्ति परिवार अभिभूत और गर्वित भी हो चला। आपकी प्रतिक्रियाएं, समीक्षाएं और पत्र निश्चित तौर पर अंतरा शब्द शक्ति की साहित्य साधना की शक्ति भी है और प्राण भी। यकीनन, आपका यह स्नेह और विश्वास अंतरा को इसी तरह आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है और सबलता भी देता है। आप यूं ही स्नेह की वर्षा करते रहे तो मई की उष्णता कम हो जाएगी और अंतरा शब्द शक्ति प्रगति की नई शब्दावलियों को गढ़ने की चेष्टा करते हुए आगे बढ़ता रहेगा।

प्रकाशित पुस्तकें ही है लेखक की पहचान

डॉ.अर्पण जैन
'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

पुस्तक सर्वदा बहुत अच्छी मित्र होती है, इसके पीछे एक कारण यह है कि पुस्तक ही किसी सृजक के उपलब्ध ज्ञान का निष्कर्ष होती है।

जब तक लेखक किसी विषय को गहनता से अध्ययन नहीं कर लेता उस पर लेखन उसके लिए संभव नहीं है और गहराई से ग्रहण किए ज्ञान का निचोड़ ही उसके सृजन में उसकी मेधा का परिचय देता है।

वर्तमान समय में प्रत्येक पांचवाँ व्यक्ति एक कवि, लेखक या अन्य विधा का सृजक बनता जा रहा है, क्योंकि इस समय चलन है इंटरनेट व सोशल मीडिया का। बात यदि हिन्दी लेखन की ही की जाए तो वर्तमान में 2000 से अधिक अंतरताने उपलब्ध हैं जहाँ आप अपनी रचनाओं को स्थान दिलवा सकते है, जैसे अमरउजाला.कॉम, हिन्दीलेखक, गद्यकोश, मातृभाषा.कॉम, प्रतिलिपी, कविताकोश, प्रवक्ता, भारतवार्ता, आदि के साथ-साथ फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम भी है परन्तु इन सबके अतिरिक्त एक शौकिया या व्यावसायिक लेखक के तौर पर मिलने वाली पहचान की मुहर आपके द्वारा लिखी पुस्तक से ही मिल सकती है।

और वर्तमान समय में वो दौर भी खत्म सा हो गया जब प्रकाशक ही लेखकों को खोजते थे, अब लेखक स्वयं भी प्रकाशक खोज सकते हैं।

ई एल जेम्स, ह्यूघ हॉवी और आमांडा हॉकिंग्स सफल प्रकाशक हो सकते हैं, तब कोई भी कारण नहीं है कि आप वह नहीं हो सकते। एक लेखक के रुप में आप कितने अच्छे हैं, वह सबसे अधिक महत्व रखता है। यद्यपि स्वयं-प्रकाशक के रुप में आपके लेखन की सफलता भी प्रकाशकों के दृष्टिकोण बदल सकती है और तब आपका लाखों में खेल सकते हैं।

लेखक की सृजनशीलता का माफदण्ड, उसका आभामंडल, उसका पाठक वर्ग और उसका किरदार भी उसके द्वारा लिखी पुस्तक से ही आँका जा सकता है।

जब आपको कोई प्रकाशन प्रकाशित नहीं कर रहा है तो इसका कारण यह बिलकुल भी नहीं है कि आपका लेखन कमजोर है, बल्कि प्रकाशक की व्यावसायिक मजबूरियाँ भी उत्तरदायी होती हैं, क्योंकि जब तक आप सम्मानित या स्थापित साहित्यकारों की श्रेणी में नहीं आते तब तक आपकी पुस्तक कोई क्यों खरीदेगा?

दुनिया नाम के पीछे भागती है, और ऐसे में स्वयं प्रकाशन एक बेहतर उपलब्ध विकल्प है, जिसके माध्यम से आप बतौर रचनाकार या लेखक अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवा कर अपना पाठक वर्ग खोज सकते है।

कई लोग आज भी ये सोचते है कि स्वयं प्रकाशन योजना एक अत्यधिक खर्चीला प्रकाशन प्रकल्प है, और अत्यधिक पैसा लगा कर ही स्वान्तय सुखाय पुस्तकें प्रकाशित करवाई जा सकती है, जबकि ऐसा हमेशा सही नहीं होता।

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले से एक महिला साहित्यकार डॉ.प्रीति सुराना द्वारा संचालित *अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन* ने इस तरह के तमाम सारे मिथक तोड़ दिए हैं।

उनका प्रकाशन छोटी पुस्तकों के प्रकाशन और ईबुक से रचनाकार के सृजन के प्रचार की कई योजनाएं लाया है, जिसमें महज 1500 रु से भी कम खर्च में 16 पृष्ठ की छोटी पुस्तकें प्रकाशित करवाई जा सकती हैं।

और उस पर आईएसबीएन भी लिया जा सकता हैं। ये योजना एक रचनाकार के लिए सोने पर सुहागा है, क्योंकि पुस्तकों का आकार या पृष्ठ संख्या उतनी मायने नहीं रखती जितनी आपके परिचय में जुड़ी प्रत्येक पुस्तक।

यही प्रकाशित पुस्तक आपकी पहचान होती है।

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्यम से डॉ.प्रीति सुराना जी द्वारा सैकड़ों या कहें हजारों गुमनाम और अनायास भय से आक्रान्तित (जिन्हें स्वयं प्रकाशन खर्चीला जान पड़ता था) सृजकों को एक अदद पहचान मुहैय्या करवाई जा रही है।

मानो आप एक साझा संग्रह का ही हिस्सा बनने जा रहें हो तो वहाँ जुड़ने का खर्च 500 रुपये से लेकर 2500 रुपये तो होगा ही, वहाँ पर यह राशि देने के बाद भी परिचय में साझा संग्रह ही जुड़ेगा जबकि इतने ही खर्च में आप स्वयं की पुस्तक प्रकाशित करवा सकते है और उस प्रकाशित पुस्तक का ईबुक संस्करण भी आपके लिए पाठक खोज लाएगा, जब आपके विश्वास हो जाए कि आपके पास पर्याप्त पाठक हो रहे हैं तो आप स्वयं की पुस्तकें ज्यादा छपवा कर विक्रय भी कर सकते है, जिससे आपको आय भी प्राप्त होगी या फिर निजी अन्तरताना (वेबसाईट या ब्लॉग) बना कर पाठक बढ़ा सकते है, जिससे गूगल एडसेंस के माध्यम से भी आय प्राप्त होगी, इसके लिए लेखकों को www.antrashabdshakti.com पर पंजीकरण करवाना होता है, पाण्डुलीपि भेजना और फिर आकर्षक कवर के साथ पुस्तकों का प्रकाशन हो जाता है, मय संपादन के।

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यह छोटी पुस्तकों और ईबुक के माध्यम से रचनाकारों के प्रचार की पहल निश्चित तौर पर हिन्दुस्तान के साहित्य आकाश में कई सितारे तो देगी ही वरना साहित्यकारों को स्वयं प्रकाशन योजना में उलझाने वाले प्रकाशकों और लेखक की बजाय प्रकाशकों के नाम को प्रकाशित करने वाले कुनबें से भी दूर करेगी।

वैसे साहित्य की कितनी महिमा होती है ये तो महाकवि रामधारी सिंह दिनकर ने यह कहकर ही प्रतिपादित कर दिया था कि जब-जब राजनीति लड़खड़ाई है, साहित्य ने ही उसे संभाला है

यह अक्षरशः सत्य भी है, इसीलिए साहित्य सृजन जारी रखें और एक बार स्वयं की छोटी पुस्तकों के प्रकाशन के बारें में जरूर सोचे.. क्योंकि ये प्रकाशित पुस्तकें ही साहित्यकार होने की शर्त भी और पहचान भी हैं।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं

डॉ. प्रीति सुराना

आज का विषय ''हर सिक्के के दो पहलू होते हैं'' इस बात पर अपना मत रखने के लिए आज कर सबसे ज्यादा उपयोग किये जा रहे और साथ ही सब से ज्यादा कोसे जा रहे साधन सोशल मीडिया के दोनों पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास मात्र कर रही हूँ, जरूरी नहीं कि सब सहमत हो फिर भी विषय से जोड़ने की एक कोशिश...

सोशल मीडिया का जीवन पर प्रभाव

पिछले 8 सालो से सोशल मीडिया से जुड़ी हूं और लगभग हर पड़ाव के बाद मैंने सोशल मीडिया को केंद्रित करके कभी कविता, कभी कहानी, कभी लेख कुछ न कुछ लिखा है। आज फिर एक बार वही प्रयास है कि सोशल मीडिया का जीवन पर प्रभाव क्या और कितना?

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, सकारात्मक और नकारात्मक।

मानव समाज को प्रभावित करने वाले चार कारक तन-मन-धन-जन । इन सभी कारकों पर सोशल मीडिया के दोनों पहलुओं का असर है। हम समाज की इकाई होने के नाते प्रभावित हुए बिना नही रह सकते। आज मैं अपनी बात इन्ही चार कारकों के सकारात्मक और नकारात्मक बिंदुओं को क्रमानुसार लेकर कहूंगी।

तन-सोशल मीडिया एक "लत" है जो मोबाइल कंप्यूटर जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लगातार संपर्क में रहने से आंखों , रीढ़ की हड्डी संबंधी समस्याओं और मोटापे का सीधा सीधा उत्प्रेरक है। साथ ही इससे निकलने वाले रेडियेशन का भी शरीर पर बहुत बुरा असर होता है।

लेकिन यही उपकरण शारीरिक श्रम और समय की बचत भी करता है। कार्य क्षमता सरलता से उपलब्ध जानकारियों की वजह से कई गुना बढ़ी है। दूरियों के कारण जिन कामों को करने की सूचना भी मुमकिन नही था वही काम घर बैठे आसानी से हो जाते हैं। यातायात से होने वाले खर्च और थकान से भी शरीर को अपेक्षाकृत राहत मिलती है।

जो लोग इसे बुराई की जड़ मानते हैं उनके लिए मेरी एक ही सोच की "बुराई और अच्छाई एक ही सिक्के के दो पहलू हैं अपने क्या देखा क्या चुना ये आपकी पसंद का परिणाम है।"

मन-विदेश में बसा बच्चा जिसे देखने को मां बाप की आंखें तरस जाती थी वो इसी सोशल मीडिया की वजह से उसे रोज देख पाते हैं सुन पाते हैं सुख दुख में शामिल हो पाते हैं। पास रहकर जिन रिश्तों में दूरियों का दुख सालता है वो दूर रहकर भी इन्ही माध्यमों के चलते सुख में बदलते देखा जा सकता है।

एक ओर सोशल मीडिया ने एक नया ही परिवार और समाज गढ़ डाला है जहाँ आभासी दुनिया जैसा कुछ भी नही। सब कुछ वैसा ही है जैसा वास्तविक जीवन में है।

लोग वो फोटो जरूर शेयर करते है जिसमे एक साथ बैठकर सभी अपने मोबाइल में व्यस्त है क्या कभी ये सोचा कि मोबाइल की वजह से सब घर पर एक साथ रहते और एक साथ बैठते तो हैं। घर से बाहर जाने के बहाने ढूंढने से बेहतर है घर पर रहकर भी अपनी अलग जिंदगी जी लेना।

आभासी दुनिया के आभासी सुख वास्तविक जीवन के दुख और परिस्थितियों से लड़ने का हौसला बढ़ाते हैं। कला और वाणिज्य को एक ऐसा नया धरातल मिला है जो काम पहचान मान सम्मान के कई रास्ते खोलता है। चार दीवारों की भीतर भी इतनी संभावनाएं इसी नये समाज जिसे सोशल मीडिया या आभासी दुनिया कहते है ने ही दी है । अकेले रहकर अकेलापन हावी न हो मन अवसाद से न घिरे इसलिए सबके बीच अकेला रहकर आभासी दुनिया मे जी लेने मे क्या बुराई है।

मोबाइल एक तरफ झूठ बोलने की मशीन है पर ये भी सोचिए जिन चीजों के लिए और जिन शौक और रुचियों के साधन दुनिया भर में ढूंढते फिरते थे वो सब कुछ हमारी जेब में है। घर बैठे बिजली का बिल भी और आज रिलीज हुई मूवी भी। पिज्जा और बर्गर भी और दवाई और अन्य सहायता भी।

इसलिए फिर कहना चाहूंगी जिन्हें सिर्फ काला दिखता है वो उजाले से अंधेरों को देख रहे होंगे, मैंने अपने अंधेरों में रहकर रोशनी तलाशी है।

धन-आय, कला और शिक्षा के अनगिनत साधन और सुविधाएं घर बैठे सोशल मीडिया के माध्यम से ही संभव है। आज डिजिटल इंडिया की कल्पना में तरक्की की संभावनाएं अपार है। धन के साथ ईंधन की भी बचत भी होती है और जो ये कहते हैं बिजली की खपत बढ़ती है तो वे अनुमान लगाकर देखें कोई काम खुद जाकर करने से ज्यादा मोबाइल या इंटरनेट के माध्यम से किये जाने में श्रम, लागत, व्यय और समय की बचत की अपेक्षा से बिजली और रिचार्ज की सुविधा का खर्च कितना सस्ता है। उदाहरण के लिए बिजली बिल टेलीफोन बिल, टेक्सेस रेलवे टिकिट, बैंकिंग, ट्यूशन सबकुछ घर बैठे हो रहा इससे जो खर्च आने जाने में समय और पैसे का बचता है वही दूसरे कामों में या अपने के लिए या अपने अपनो के लिए उपयोग किया जा सकता है।

फिर मेरा विचार ये कि बचत को शौक पूरे करके खत्म करना है या भविष्य मजबूत करना है ये आपकी आर्थिक स्थिति और मानसिकता पर निर्भर करता है। यदि परिस्थिति कमजोर है तो और अधिक काम किया जाए और अच्छी है तो सपने और शौक पूरे किए जाएं या फिर समाज के उत्थान के लिए काम किया जाए।

और अब अंतिम बिंदु

जन-जिसके लिए मैं कुछ भी नही कहूंगी। क्योंकि लोकतंत्र में विपक्ष का विशेष महत्व है क्योंकि विपक्ष बुराइयां न बताए तो अच्छाइयां पता कैसे चलेंगी। लोग सामने बैठ कर टॉर्च जला जला कर आपको अंधेरे में छुपी चीजें दिखाते रहेंगे अब ये तो आप सोचें कि अंधेरा देखकर डरना है या चलें कुछ कदम उन अंधेरों की ओर अपने साथ थोड़ा उजाला लिए ये गुनगुनाते हुए...

कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना,
छोड़ो बेकार की बातों में, बिन न जाए रैना।
अंत मे एक बात
कैमिकल से पके फल, सब्जियां और अनाज खाकर जी रहे हैं,
प्रदूषण, ओजोन की किरणें और कई नुकसान उठाकर जी रहे हैं,
खुशबू डियो या परफ्यूम से आए या फिर कागज के फूल से,
मायने ये रखता है कि
आभासी दुनिया में ही सही कुछ पल हर गम भुलाकर जी रहे हैं।

हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार

–हरप्रसाद पुष्पक

भारतीय संस्कृति सदैव सहिष्णुता के साथ सद्भावना/समरसता/दया ,प्रेम के मार्ग का अनुसरण करते हुए प्रकृति और जीव जन्तुओं सभी को संरक्षण प्रदान करती है । सूर्य ,चन्द्र ,जल ,वायु ,पृथ्वी ,पशु ,पक्षी ,जन सम्पदा, वृक्ष सभी को देवतुल्य मानकर श्रद्धा से सब का सम्मान करती है ।या इस प्रकार कहे कि हिन्दू सस्कृति संस्कारों में मानव का स्थान सबके बाद आता है ।

गऊ, गंगा , गीता ,हमारी हिन्दू संस्कृति के पोषक है।कोई भी मंगल कार्य के लिये गाय के गोबर का लेपन , गंगाजल के पश्चात ही शुद्धता का प्रतीक है।यहां तक की दूब घास तक शुभ कार्य में महत्व पूर्ण है। पैरों के नीचे आने वाली दूब घास भी शुभकार्यों मे पूजनीय है ।

दान , ध्यान ,यज्ञ मनकी शान्ति ,परिवार,समाज और

राष्ट्र के कल्याण की भावना के लिये किया जाता है । होम यज्ञ की आहूतियों से वायुमंडल शुद्ध होता है । शास्त्रों में

जन कल्याण के लिये हवन यज्ञ को अति महत्व पूर्ण बताया गया है –।अतिथि देवो भव – हमारी संस्कृति सदभावना/समरसता/का भाव प्रसारित करता है।दीन हीन की सेवा /दान पुण्य से आत्मिक सुख शान्ति और संतोष प्राप्त होता है।हमें अपनी अर्जित आय का कुछ अंश दीन दुखियों में दान के रूप में आवश्य त्याग करना चाहिये। ऐसा शास्त्रों में कहा गया है ।

प्रश्न महत्वपूर्ण है स्वर्ग क्या है ?क्या स्वर्ग किसी ने देखा है? क्या इस नश्वर संसार में भौतिक सुखों की सम्पन्नता अथवा भोगविलास को ही स्वर्गिक आनन्द कहा जाता है? क्या अर्थ से सभी सुखों को अर्जित किया जा सकता है ? कदापि नहीं यदि ऐसा सम्भव होता तो संसार के सभी धनाढ्य सम्पन्नता के साथ साथ सुखी जीवन व्यतीत करते । परन्तु ऐसा सम्भव नही है ।अर्थ के विस्तार से भौतिक सुख सुविधाओं विलासता में तो वृद्धि हो सकती है । परन्तु मानसिक सुख प्राप्त नही किया जा सकता। मानसिक सुख तो सदाचरण,सदभाव,समरता,

सादगी,संयम ,शिष्टाचार ,प्रेम ,जनभलाई ,परोपकार से ही प्राप्त हो सकता है। तो स्वर्ग क्या है? जब आप स्वेच्छा ,श्रद्धा ,निश्छ हृदयभाव से बिना किसी प्रतिफल की कामना के प्रसन्नता से परोपकार का कार्य करते है ।उससे जो आप को आत्मसंतोष ,सुख की अनुभूति होती है वही स्वर्ग है ।

नरक क्या है? जब आपका कुत्सित, निकृष्ट चिंतन स्वार्थमय होकर अहंकारी हो जाता है और निर्बल दुर्बल

पर अत्याचार करने के लिये निरंकुश हो बीभत्सता के साथ उसका दमन करता है । स्वार्थवश किया गया एक

ऐसा पाप जो स्वंय का चित्त भी आत्मग्लानि से भर देता है और अन्तरमुखी होकर जीवनभर आत्मग्लानी में जीता है। कभी स्वंय भी सुख चैन से नही रह पाता नरक ही तो है ।

स्वर्ग/नर्क किसी ने नही देखा। परन्तु कर्मों के आधार पर

मानव लोक में नैतिक आचरण का अनुसरण करने पर जो सुख संतोष की अनुभूति होती है वही स्वर्ग है ।इसके विपरीत दुष्कर्मों के कारण चित्त का सदैव असहज रहना ही नर्क है।

धर्म एक दृष्टि

पुष्पा शर्मा

मेरा राय में धर्म एक जीवन दृष्टि है। सभी प्राणियों मे श्रेष्ठतर संवेदनशील मानव को। अपने सर्वोत्तम की खोज उसे पाने का प्रयत्न एवं आत्म साक्षात्कार के रूप में उस परम शक्ति की अनुभूति यही है धर्म का ध्येय। मानव मन की विभिन्न रुचियों के अनुसार कई मत-मतान्तर प्रचलित है। विभिन्न नदियों का मार्ग अलग है गंतव्य एक ही अगाध समुद्र।

हाथी के विभिन्न अंगों का आकार दृष्टिहीनों द्वारा अलग- अलग बताए जाने पर भी सत्य स्वरूप हाथी एक ही है।

मानवता के आधार गुणों का मानव में प्रतिस्थापन करना धर्म है। समाज में मानवीय सम्बन्धों का संतुलित सुव्यवस्थित संचालन धर्म है। सभी धर्मों की शिक्षाएँ प्राय: नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन करती है। सच्चे धार्मिक के लिए यह विश्व परिवार स्वरूप है। हमारे सनातन धर्म का यही सिद्धांत है। विश्व कल्याण की कामना ही धार्मिक की सच्ची मनोकामना है।

हंसी के फव्वारे...

हमारे देश में केवल एक आदमी ऐसा है..
जो..
चेंज के लिये अकेला लड़ रहा है..
वो है..
बस कंडक्टर!!
00000
अंग्रेजी बोलने का भूत जब दिमाग पर
चढ़ता है तो कुछ इस प्रकार का माहौल बन जाता है..
टीचर- कल तुम कोचिंग नहीं आये कहाँ थे..?
स्टुडेंट- वो कल हमारे यहां मंदिर में
ब्युटीफुल ट्रेजडी था ना, इसलिए नहीं आ पाया।
टीचर- ब्युटीफुल ट्रेजडी से मतलब ?
स्टुडेंट- मतलब सुन्दर काण्ड था।
टीचर अभी भी सदमें है।

सीरिया में ट्रंप का शीर्षासन

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन ने मिलकर सीरिया पर जो मिसाइल बरसाए हैं, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अब शीर्षासन की मुद्रा में आ गए हैं। यही ट्रंप जब राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रहे थे, तब ओबामा को 'बेवकूफ' कह रहे थे, क्योंकि वे सीरिया में अमेरिकी खून और डॉलर बहा रहे थे। ट्रंप तब वादा कर रहे थे कि वे जैसे ही राष्ट्रपति पद संभालेंगे, अमेरिकी फौजों को सीरिया से वापस बुला लेंगे। वे तो अभी भी कह रहे हैं कि अपने 2000 सिपाहियों को वापस बुलाने के लिए वे वचनबद्ध हैं।

पिछले साल भी उन्होंने सीरिया पर 59 मिसाइल मारे थे और इस बार 100 मिसाइल इसलिए मारे के सीरिया की राजधानी दमिश्क के पास स्थित दौमा में रासायनिक हथियारों का एक कारखाना उन्हें नष्ट करना था। यहां बननेवाले रासायनिक हथियारों के हमले से कुछ लोगों की मौत हो गई थी। इसके जवाबी हमले में ट्रंप ने ब्रिटेन और फ्रांस को भी घसीट लिया। इन तीनों देशों के अनेक अखबार, टीवी चैनल और विरोधी नेतागण इस मिसाइल आक्रमण की निंदा कर रहे हैं। वे यह आशंका भी जाहिर कर रहे हैं कि कहीं सीरिया ही तीसरे विश्व-युद्ध की स्थली न बन जाए। यदि रुस भी सीरिया की ओर से जवाबी हमला कर दे तो ये महाशक्ति एक-दूसरे से सीधी भिड़ जाएंगी।

वैसे पश्चिमी शक्तियों ने यह सावधानी तो रखी है कि उनके मिसाइलों से सीरिया के शासक बशर-अल-अस्साद या रुसी फौजों का कोई सीधा नुकसान नहीं हुआ है लेकिन इन राष्ट्रों का यह दोष तो स्पष्ट ही है कि इस हमले के पहले इन्होंने अपनी कार्रवाई पर संयुक्तराष्ट्र संघ की मुहर नहीं लगवाई और उससे भी ज्यादा यह दोष कि रासायनिक हथियारों पर प्रतिबंध लगानेवाले संगठन द्वारा इस मामले की जांच करने के पहले ही हमला बोल दिया। यह अंतरराष्ट्रीय कानून का स्पष्ट उल्लंघन है। आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस तथाकथित इस्लामी आतंकवाद से लड़ने के बहाने ट्रंप सत्तारुढ़ हुए हैं, सीरिया में वे उसी आतंकवाद की रक्षा में डटे हुए मालूम पड़ रहे हैं। उन्हें सीरिया से क्या लेना-देना ? वे रुसी वर्चस्व का मुकाबला करने के लिए सीरिया में शीर्षासन के लिए भी तैयार हो गए हैं।

महत्वपूर्ण है विद्यार्थियों की उपस्थिति

मानक लाल 'मनु'

एक विद्यालय सिर्फ किसी भवन की चारदिवारी को नहीं कहा जा सकता,सिर्फ शिक्षक और भौतिक वस्तुओं का होना भी विद्यालय की परिकल्पना को साबित नहीं करता है,विद्यालय का मूल केन्द बिंदु है उसके विद्यार्थी और उनकी संख्या। साथ ही उनकी उपस्थिति वो भी कितने समय तक क्योंकि,जब विद्यार्थी अपनी कक्षा(शाला) में पूरे समय रहेगा,तब ही उसके समग्र विकास की बात की जा सकती है।

विद्यार्थी की उपस्थिति एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है,जिससे ही उस विद्यालय की शैक्षणिक,खेल और व्यायाम सहित अन्य गतिविधियों को आगे बढ़ाया जा सकता है। अगर सम्पूर्ण शाला में आने वाले बच्चों की उपस्थिति का प्रतिशत अधिक है तो स्वाभाविक तौर पर स्तर भी अच्छा होगा। मुख्य बात ये है कि विद्यार्थियों की हाजरी को सुनिश्चित करने के तरीके क्या हैं। यह निम्न हो सकते हैं-

जो विद्यार्थी शाला में नहीं आ रहे हैं,उनके घर पर सम्पर्क करना,उनकी आने वाले परेशानी जैसे-आवागमन, खान-पान,रहन-सहन,शुल्क,और अन्य चीजों की उपलब्धता को देखना,पारिवारिक परिवेश को बच्चों के पढ़ने के अनुकूल बनाने का प्रयास जो उस बच्चे के पालक,पोषक,अभिभावक से मिलकर किया जा सकता है। शाला का वातावरण उनके मन-मस्तिष्क के अनुरूप हो,पुस्तकों का रखरखाव आदि पर ध्यान दिया जाए,भौतिक जरुरतों की पूर्ति जैसे पीने के पानी की व्यवस्था,स्वच्छ शौचालय,बैठकर खाने का स्थान,खेल के लिए सामग्री,पठन-पाठन के लिए अन्य मनोरंजक पुस्तकें होना,बाल सभा,बाल मेला,बाल सम्वाद आदि को किया जाना,जिससे उसका मनोरंजन हो और ज्ञान को बढ़ाया जा सके। जैसे बच्चे स्वभाव से ही नाजुक और खेल,पत्ती,फूल, चिड़िया,खिलौने,मिट्टी आदि से लगाव रखते हैं,तो उनकी पठन-पाठन की सामग्री भी उनकी पहचान के अनुरूप रखी जाए। बच्चों को शाला में ठहराव के लिए उनके मन-मस्तिष्क से ये बात मिटाना कि,कोई डर है भय है या पढ़ना अथवा विद्यालय जाना बहुत कठिन काम है,को एकदम सरलतम और आसान बनाना और बताना कि यह सब आसान है।

बच्चों की मनस्थिति और परिस्थिति को समझकर ही सम्वाद किया जाए,तब जाकर हम विद्यार्थियों को जोड़ने में सफल हो पाएंगे। उनके आचार-विचार और व्यवहार को समझकर पठन-पाठन किया जाए। एक सफल विद्यालय की परिकल्पना को इस तरह सच किया जा सकता है।

एफसीआरए के बहाने 25 एनजीओ पर तलवार

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

जाकिर नाइक की संस्था इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन सहित अनेक संस्थाओं पर विदेश से चंदा लेने और उसका राजनैतिक उपयोग करने पर केन्द्र सरकार की सख्ती बढ़ती जा रही है। इससे विदेशों से चंदा लेकर अपना कामकाज चलाने वाले 25 एनजीओ के सामने आर्थिक परेशानी खड़ी हो गई है, क्योंकि गृह मंत्रालय ने फॉरेन कंट्रीब्यूशन रेग्यूलेशन एक्ट (एफसीआरए) के तहत इन एनजीओ की फंडिंग पर रोक लगा दी है। गृह विभाग के प्रवक्ता का कहना है कि इस तरह की फंडिंग 'राष्ट्रीय हित में नहीं है'। गृह मंत्रालय ने इन एनजीओ की सूची अभी तक जारी नहीं की है, लेकिन माना जाता है कि इनमें से कई ऐसे संगठन है, जो मानव अधिकारों के लिए कार्य करते हैं।

विदेशी चंदा लेने पर लगी रोक से ये एनजीओ वाले सरकार से नाराज हैं। इनका कहना है कि सरकार के इस फैसले से मानव अधिकारों के क्षेत्र में कार्य करने वाले संगठनों के सामने परेशानी खड़ी होगी। एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया के कार्यकारी निदेशक आकार पटेल ने आरोप लगाया है कि गृह मंत्रालय ने जो फैसला किया है, वह अनुचित और तर्कपूर्ण है। अगर सरकार ने यह रोक लगाई है, तो उसे यह बताना चाहिए कि रोक किस कारण से लगाई गई है, एनजीओ पर क्या आरोप हैं।

सेंटर फॉर प्रमोशन ऑफ सोशल कंसर्न (पीपुल्स वॉच) के एक प्रवक्ता के अनुसार एफसीआरए के अंतर्गत उनका विदेशी मुद्रा में चंदा लेने का लायसेंस नवीनीकरण से रोक दिया गया है। इस लायसेंस के बिना यह संस्था विदेशों से चंदा नहीं ले सकती। उसे भी चंदा रोकने का कोई कारण नहीं बताया गया। इसके पहले 2012 और 2013 में भी इस संस्था की विदेशी फंडिंग पर तीन बार रोक लगाई गई थी। इस संस्था का बैंक खाता में फ्रीज किया गया था। 18 महीने के संघर्ष के बाद दिल्ली हाई कोर्ट के निर्देश पर इस लायसेंस का नवीनीकरण किया गया।

कई एनजीओ को गृह मंत्रालय की तरफ से सिर्फ एक लाइन का ई-मेल संदेश मिला है, जिसमें कहा गया है कि आपकी संस्था को मिलने वाला लायसेंस रोक दिया गया है। गृह मंत्रालय के प्रवक्ता ने साफ-साफ कहा है कि हमने 11 हजार 319 एनजीओ का एफसीआरए लायसेंस रोक दिया है क्योंकि इन्होंने 30 जून की डेड लाइन बीतने के बाद भी आवेदन नहीं किया। 1736 एनजीओ ने अपने दस्तावेजों के साथ शपथ पत्र जमा नहीं किया। इन्हें 8 नवंबर तक का मौका दिया गया था कि ये अपने दस्तावेज पेश कर दें, लेकिन फिर भी इन्होंने अपने दस्तावेज पेश नहीं किए।

सरकार के इस फैसले पर एनजीओ से जुड़े संगठनों का कहना है कि वर्तमान सरकार एफसीआरए का उपयोग राजनैतिक हथियार के रूप में अपने विरोधियों को दबाने के लिए कर रही है। जवाब में यह लोग सिर्फ यही कहते है कि उन्होंने 'जनहित' अथवा 'राष्ट्रहित' में यह निर्णय लिया है, इसके बारे में खुलकर बातें नहीं बताते। इंदिरा जयसिंह और आनंद ग्रोवर जैसे जाने-माने वकीलों से जुड़े संगठन को भी एफसीआरए के तहत प्रतिबंध का सामना करना पड़ा। यह संगठन तीस्ता सितलवाड़ और प्रिया पिल्लई जैसी सामाजिक कार्यकर्ताओं का समर्थन करता है। इन कार्यकर्ताओं ने गुजरात के कथित साम्प्रदायिक दंगों के बारे में सरकार की भूमिका पर बार-बार सवाल खड़े किए।

गृह मंत्रालय के फैसले के खिलाफ एनजीओ बार-बार कोर्ट में जाते है, जहां आमतौर पर उनके पक्ष में फैसले होते है। कोर्ट बार-बार यही दोहराते है कि सरकार इस कानून का राजनैतिक उपयोग बंद करे। इन सामाजिक कार्यकर्ताओं का अधिकार है कि वे जनता से जुड़े मुद्दों के बारे में दुनियाभर को जानकारी दें। ऐसे संगठनों के कार्यकर्ताओं को विदेश जाने से रोकने की वारदातें भी हुई है। एनजीओ से जुड़े संगठनों का कहना है कि सरकार से जुड़े इस फैसले से मानव अधिकारों का हनन होता है। ये मानव अधिकार हमारे संविधान द्वारा दिए गए है और उनका हनन किसी भी दशा में नहीं होना चाहिए।

गृह मंत्रालय और भारत सरकार एनजीओ निगरानी रखे और वहां भ्रष्टाचार न होने दे, इस पर तो कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सरकार अपने अधिकारों का दुरूपयोग न करें। एनजीओ लगातार एफसीआरए को रद्द करने की वकालत भी करते रहते है, लेकिन सरकार ने मार्च में ही इस कानून में बदलाव किए है और यह बदलाव पिछली तारीखों से लागू किए गए है। ताकि विदेशी संस्थाएं और लोग भारत में राजनैतिक पार्टियों को चंदा न दे सके। चुनाव में विदेशी हितों की रक्षा की कोशिशें रोकी जाना गलत बात नहीं है, लेकिन एनजीओ को परेशानी का सामना करना पड़े, यह अच्छी बात नहीं है। एक तरफ तो सरकार तमाम आधारभूत उद्योगों में विदेशी निवेश को बढ़ावा दे रही है, दूसरी तरफ मानव अधिकार जैसे क्षेत्र में विदेशी सहयोग पर अंकुश लगाने की कोई कोशिश नहीं छोड़ती।

'नतोहम्'

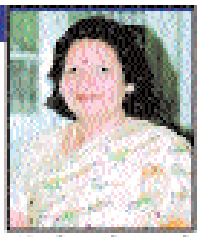
डॉ. मीनाक्षी स्वामी

लेखन के क्षेत्र में डॉ. मीनाक्षी स्वामी का नाम अपरिचित नहीं है। एम.ए. तथा पीएच.डी.(मुस्लिम महिलाओं की बदलती हुई स्थिति पर) तक शिक्षित डॉ. स्वामी की सम्प्रति प्राध्यापक पेशे से होकर आपको सतत तीस वर्ष का प्राध्यापकीय अनुभव है। आप इंदौर के दीनदयाल नगर(सुखलिया) में निवासरत हैं।

आज सुबह आँख खुलने के साथ ही एल्विस को काकी की याद आई। वैसे काकी की याद तो उसे रोज ही आती थी, मगर आज रात उसने सपने में काकी को देखा था। वे कह रही थीं- 'बेटा, मैं शिप्रा के प्रवाह में हूँ शिप्रा की लहरों में तुम मेरी वाणी सुन सकते हो।' जागते ही एल्विस ने तय कर लिया था कि सभी काम छोड़कर आज का दिन तो मैं काकी के साथ ही बिताऊँगा।

वह काकी के पास पहुँचा, काकी भी उसे देखकर बहुत खुश हुई।

'आज अपन राजस्थान का खास खाना खाएंगे।' वे बाल सुलभ उत्साह से छलकती बोलीं।

'यॉव काकी', एल्विस पर भी उस उत्साह की बूँदें पड़ीं।

भीड़ में जगह बनाते हुए दोनों काकी दूर भूखी माता मंदिर के घाट की तरफ निकल आए।

यहां राजस्थानी शैली के द्वार तोरण देखकर एल्विस अपनी भूख ही भूल गया। उसने झटपट कैमरा निकाला, तस्वीरें खींचने लगा। यहां के स्वादिष्ट भोजन के लिए भक्तों की लंबी कतार लगी थी। महिलाओं और पुरुषों की अलग-अलग कतार थी। काकी तो कतार में खड़ी हो गई। एल्विस फोटो खींचने में ही व्यस्त और मस्त रहा, डूबा रहा।

काकी ने उसे बुलाना चाहा, मगर फिर सोचा 'वह तरह-तरह के द्वारों और तोरणों के फोटो ले रहा है, विघ्न डालना ठीक नहीं।'

द्वार, तोरण, भीड़ सभी की तस्वीरें खींचने के बाद एल्विस ने गहरी सांस ली। फिर महिलाओं की कतार में काकी को खोजने लगा। अब उसे तेज भूख भी महसूस होने लगी थी। तब तक वे काफी आगे पहुंच गई थी। एल्विस बेचैनी और व्यग्रता से उन्हें खोजता रहा, मगर वे उसे नहीं दिखी। वे भी उसे ही खोज रही थी, मगर उन्हें भी वह नहीं दिखा। उन्हें चिंता होने लगी।

तभी अचानक काकी की निगाह उस पर पड़ी।

'एल्विस' काकी ने उसे आवाज दी, मगर भीड़-भाड़ और शोर में काकी की आवाज नक्कारखाने की तूती-सी होकर रह गई।

'वो भी तो मुझे ही ढूंढ रहा है, उसके पास जाकर बता दूं।' लाइन में अपने आगे-पीछे खड़ी महिलाओं से अपनी जगह का ध्यान रखने का कहकर वे भीड़ में किसी तरह जगह बनाती उसके पास पहुंची। उन्हें देख एल्विस को गर्मी में शीतल फुहारों की-सी राहत मिली।

'मैं आवाज लगा रही थी, तुमने सुना ही नहीं ?'

'मुझे तो सुनाई ही नहीं दिया, शायद शोर के कारण।'

'मेरे पीछे आओ' काकी के पीछे चल दिया एल्विस।

'एल्विस, औरतों वाली लाइन तो बहुत आगे आ गई है। तुम्हारी लाइन तो बहुत लम्बी है।' काकी ने लाइन को देखा तो चिंतित हो गई।

एल्विस ने पुरुषों की लाइन की तरफ उधर नजर डाली- 'ओह ! यहां तो मेरा नंबर आधी रात तक आने से रहा।' वह चिंतित हो गया।

'कोई बात नहीं, मैं और किसी दिन आकर यहां का खाना टेस्ट कर लूंगा।'

'अरे, ऐसा थोड़ी होता है। अपन कोई रास्ता निकालेंगे।'

'छोड़ो काकी, आप भी बेवजह परेशान हो रही हैं। आप खा लीजिए, मैं गेस्ट हाउस जाकर खा लूंगा।'

'अरे ! मैं अकेली थोड़ी खा सकती हूँ।' काकी ने फैसला सुनाया।

'यही तो अपनापन है। यूं तो ये मेरी कोई नहीं हैं। फिर भी मुझे इतना अपना मानती हैं। मेरे देश में तो अपनों में भी इतना अपनापन नहीं होता। ये गैर होकर भी रखे हैं। यही है भारतीयों की भावनात्मक ऊर्जा के ऊंचे स्तर का राज। यह बात तो इनके संस्कारों में ही रच-बस गई है।' एल्विस सोचने लगा।

काकी इधर-उधर देखने लगी। एल्विस भी उनके साथ ही आ जाए, इसके लिए कोशिश करने लगी। उन्होंने अपने साथ कतार में लगी अन्य महिलाओं से बात करके उन्हें तैयार भी कर लिया, मगर इतनी भीड़ की व्यवस्था के लिए पुलिस का इंतजाम था, वो भी बहुत कड़ा। मगर काकी

ने एक बार ठान लिया, सो ठान लिया। वे एक तरफ खड़े पुलिस वाले के पास गई। उससे न जाने क्या कहा कि वो उनके साथ आया और एल्विस को उनके साथ भीतर ले गया।

बाद में एल्विस ने पूछा तो उन्होंने बताया- 'मैंने सिपाही को तुम्हारे बारे में बताया था। उसे समझाया कि वह अपने देश के सिंहस्थ के नजारों की तस्वीरें खींचकर किताब बनाने के लिए इतनी दूर से आया है। वो फोटो खींचने में लगा था इसलिए पीछे रह गया। अब हम भोजन प्रसाद लेंगें तो साथ में, नहीं तो बिना लिए ही जाना होगा। तब वो मदद के लिए तैयार हो गया।'

'और क्या काकी, देश प्रेम में पुलिस वाले पीछे थोड़ी रहेंगें।' पंडाल के भीतर बहुत ही ठंडक थी। चारों तरफ कूलर चल रहे थे। साफ-सुथरी, गोबर लीपी जमीन पर सफेद पट्टियां बिछी थी। इनके आगे पटिये रखे थे। बीच-बीच में अगरबत्ती जल रही थी। उनकी खुशबू से वातावरण महक रहा था। पत्तलों में गरम-गरम भोजन परोसा जा रहा था। अनेक कार्यकर्ता आत्मीय मनुहार करते हुए मुस्तैदी से भोजन परोस रहे थे।

एल्विस, काकी के साथ बैठ गया। उनके आगे पत्तल- दोने रखे गए। एक आदमी आकर उन पर पानी छिड़क गया। काकी ने बताया कि इससे पत्तल शुध्द होती है। पानी के गिलास रखने के बाद भोजन परोसने का सिलसिला शुरू हुआ। गरम-गरम बाजरे का खिचड़ा, कढ़ी, गट्टे की सब्जी, दाल-बाटी, चूरमा। खिचड़े में खूब सारा घी भी डाला गया। एल्विस को सबसे अधिक पसंद आया चूरमा और कढ़ी । जब काकी ने उसे बताया कि गरम कढ़ी पीने से सर्दी-जुकाम में आराम मिलता है तो वह हैरान हो गया। 'और पता है बाजरे का खिचड़ा खाने से नींद अच्छी आती है। भूख भी बढ़ती है। पाचन से जुड़ी शिकायतें दूर होती हैं। हमारे यहां के भोजन में सारे औषधीय तत्व होते हैं।'

'स्वाद का स्वाद और दवा की दवा।' पास बैठी महिला ने काकी की बात का समर्थन किया।

'तभी तो काकी, सोचता हूं कि मैं यहां पैदा क्यों नहीं हुआ !' काकी ने उसके गाल पर प्यार से चपत लगाई और वह हंसने लगा। आज का दिन काकी के साथ बिताकर उसे बहुत अच्छा लगा।

घूमता हुआ एल्विस भैरोगढ़ झोन की तरफ निकल आया। सुना था कि 'उधर बहुत आगे एक प्लाट पर बहुत से विदेशी युवक-युवतियों ने डेरा डाल रखा है। उनमें एक युवती बांस को मुंह से बांसुरी की तरह बजाती है।'

वहां जाकर देखा, स्पेन से विदेशियों का एक समूह आया हुआ था। इन्होंने एक प्लाट पर संतों की ही तरह आश्रम बना रखा था। बात करने पर पता चला कि ये लोग उत्सुकतावश इलाहाबाद के कुंभ में आए थे। वहां भारतीय दर्शन और अध्यात्म से इतने प्रभावित हुए कि इंडिया फेन्स नाम का एक क्लब बना लिया। क्लब के सदस्य सिंहस्थ में भी आए थे और परमानंद का लाभ ले रहे थे। इसी क्लब की सदस्य एक युवती के पास बांस का एक लंबा -सा वाद्य यंत्र था। इसे वह सांस खींचकर बजा रही थी।

एल्विस ने सुना तो मंत्रमुग्ध हो गया।

'यह कौन-सा वाद्य यंत्र है?' उसने पूछा

'इसका नाम तो मैंने नहीं रखा। इसे बजाना यहीं भारत में ही सीखा है।'

'यह तो बांसुरी के आधार पर ही बना है। बजाने का तरीका भी लगभग वैसा ही है।' एल्विस ने सोचा। फिर उनसे पूछा- 'यहां कैसा लग रहा है ?'

'हम लोग सिंहस्थ में खूब घूम रहे हैं। मेला देख रहे हैं। मेले में भारतीय संस्कृति को भी जान रहे हैं। रोज तरह-तरह के लोगों से मिल रहे हैं। साधुओं से मिल रहे हैं। राम कथा, श्रीमद् भागवत गीता और प्रवचन सुनते हैं। रासलीला, रामलीला, सांस्कृतिक कार्यक्रम देखते हैं। संगीत के आयोजनों का आनंद लेते हैं। भजन, कीर्तन, योगासन, ध्यान में भागीदारी करते हैं। हमें भारतीय दर्शन, आध्यात्म और जीवन की बहुत-सी नई-नई बातें जानने को मिल रही हैं। हमारी जिज्ञासाओं का समाधान हो रहा है। इससे हमें बहुत शांति मिल रही है।' एक सदस्य ने कहा।

दूसरे सदस्य ने कहा- 'मैं तो चकित हो जाता हूं जब भव्य पंडालों को और उनकी सजावट को देखता हूं। लोग इतनी दूर-दूर से, इतनी धूप में इतनी तकलीफ उठाकर आते हैं, मगर उनके माथे पर शिकन तक नहीं उल्टे वे तो ताजगी और ऊर्जा से भरे आनंदित रहते हैं।'

'यह भक्ति की शक्ति है दोस्त ।' कहते हुए एल्विस भावुक हो गया।

'कैसी शक्ति है भक्ति की कि लोग अपना काम-धंधा छोड़कर यहां साधु-संतों के दर्शन और सेवा में लगकर आनंदित हो रहे हैं। सच इंट्रेस्टिंग मारवलस..। ये बिल्कुल अनोखी दुनिया है।' एक ने कहा।

एक सदस्य इतने बड़े पैमाने पर चलने वाले अन्न क्षेत्र का मैनेजमेंट देखकर चमत्कृत थे 'जिस आश्रम और अखाड़े में देखो, एक-से-बढ़कर एक पकवान। और आने वाले बेअंदाज, बेहिसाब और अनलिमिटेड। फिर भी सब मैनेज हो जाता है। वो भी इतने स्वादिष्ट, गर्मागर्म, बिल्कुल ताजा और पौष्टिक भी। तरह-तरह की सब्जियां, पूरी, रोटी, दाल, चावल, इडली, सांभर, साबूदाने की खीर और खिचड़ी, राजगीरे-सिंघाड़े के आटे की पूरी, मोहन, कचौड़ी, गुलाबजामुन, श्रीखंड और भी कितनी तरह की मिठाइयां ! और मालवा की दाल-बाटी तो वाह ! मुंह में पानी आ गया, बात करते हुए। और पोहे, जलेबी कितने नाम गिनाएं। इनके सामने तो हमारे फास्ट फूड कुछ भी नहीं। हमारे यहां तो ऐसा खाना मिलने का कोई चांस ही नहीं है।'

'सो तो है। यहां आकर ही तो हमें पता चला कि भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊपर भी कोई टारगेट होते हैं। उन्हें पाने के लिए इतनी विकट साधना की जाती है। ये तो कोई और ही दुनिया लगती है। यहां आए तो पता चला कि इस देश में इतने साधु-संत है। ओ रियली इंडिया इज ग्रेट !'

एक ने कहा- 'मुझे तो लगता है सिंहस्थ रोज होना चाहिए। रोज न भी हो सके, तो कम-से-कम साल में एक बार तो जरूर होना ही चाहिए।'

'वो तो मुझे भी लगता है पर भाई, ऐसा नहीं होता है। सिंहस्थ तो बारह साल में एक बार ही आता है।' एल्विस हंसने लगा।

गाँधी कुछ प्रश्न,कुछ उत्तर

परिचय- डॉ. मोहसिन खान (लेफ्टिनेंट) नवाब भरूच(गुजरात)के निवासी हैं। आप 1975 में जन्मे और मध्यप्रदेश(वर्तमान में महाराष्ट्र)के रतलाम से हैं। आपकी शैक्षणिक योग्यता शोधोपाधि(प्रगतिवादी समीक्षक और डॉ. रामविलास शर्मा) सहित एमफिल(दिनकर का कुरुक्षेत्र और मानवतावाद),एमए(हिन्दी)और बीएड है।

डॉ. मोहसिन खान

कुछ लोगों का मानना है कि गांधी की हत्या गोडसे ने की,लेकिन यह जायज हत्या नहीं है। वो भी गांधी जैसे व्यक्तित्व की हत्या? मेरा प्रश्न है कि गांधी के संदर्भ में हत्या भी क्या कभी जायज हुआ करती है ? गांधी जी की हत्या को जायज और नाजायज कैसे ठहराया जा सकता है? हत्या तो हत्या ही है। हिंसा, नफरत और असहिष्णुता ही व्यक्ति को हत्या की तरफ ले जाती है। अब आप ही बताएं गांधी जी की हत्या जायज और नाजायज कैसे हो सकती है ?

कई विरोधी और मतांध बुद्धि के लोगों का यह मानना है कि गांधी ने कोई विशेष बात नहीं की और न ही कोई विशेष प्रकार के सिद्धांत दिए हैं। गांधी ने सच है कि,कोई विशेष बात नहीं की,यह उनकी दृष्टि में है,लेकिन गांधी खुद अपने विषय में कहते है कि 'मैं कोई विशेष और नई बात नहीं कह रहा हूं जो शास्त्रों में लिखा है जो मानवीय मूल्य और समाज के लिए आवश्यक बातें हैं,उन्हीं को मैं दोहरा रहा हूं। मैं कोई नई सिद्धांतों की रचना नहीं कर रहा हूं गांधी खुद कहते हैं मैं विशेष कुछ नहीं कह रहा।' गांधी के विषय में एक बहुत मजाकिया किस्म की धारणा भी समाज में प्रचलित हो गई है। कुछ कहते हैं कि गांधी बहुत पहुंची हुई चीज थे। पहुंची हुई चीज थे इससे क्या आशय लगाया जाए यह वास्तव में एक इस प्रकार का जुमला है जिसके माध्यम से गांधी के व्यक्तित्व को बिगाड़ने का प्रयास किया जाता है या शंका की दृष्टि से देखना उन्हें नजर में आता है। गांधी पहुंची हुई चीज न थे, बल्कि साधारण होने की प्रक्रिया में थे।

किसी किसी का मानना है कि,गांधी ने जनता को मोड़ दिया और अपने पक्ष में कर लिया। मैं कहता हूं उन्होंने गांधी को ना तो पढ़ा है और ना गांधी को समझा।वह यह मानकर चलते हैं कि गांधी ने आधी जनता को अपनी तरफ करने के लिए विशेष प्रकार के भाषणों का प्रयोग किया,विशेष प्रकार की नाजुक स्थितियों को मुद्दा बनाने का प्रयास किया। मैं कहता हूं कि उन्होंने इस प्रकार का कोई प्रयास नहीं किया,बल्कि लोगों को उन्होंने जागृति प्रदान की और राष्ट्र की वास्तविक स्थिति से परिचय कराया और एकजुट होकर सभी को राष्ट्रीय आंदोलनों में जनभागीदारी के तहत संघर्ष करना सिखाया। गांधी ने जनता को मोड़ा नहीं, बल्कि जगाया है।

एक और प्रश्न भी लोग करते हैं कि गांधी की हत्या एक हिंसा का काम है,लेकिन मैं यह कहता हूं जो हत्यारे हैं वह तो हिंसक है ही और राष्ट्रद्रोह के प्रतीक भी हैं, लेकिन गांधी ने कभी भी हिंसा का समर्थन नहीं किया,इसलिए गांधी का दूसरा पर्याय अहिंसा है,गांधी अहिंसा का नाम है।

कुछ लोग गांधी को भगवान का दर्जा देने लगते हैं या उनको महिमामंडन करने के लिए भगवान,मिथक और पुराणों की भी बात करते हैं कि वह इस प्रकार से एक युग के नायक अवतार हैं,जैसे कभी कृष्ण अर्जुन या राम ही रहे होंगे। मैं कहता हूं गांधी पिछली सदी का एक मानवीय गौरव है जिसने मानवता को गौरव प्रदान किया और उच्चता की ओर मानवता को ले गए। वह भगवान नहीं, बल्कि आम जनता के बीच से एक ऐसा जननायक है,जिसने आम जनता को उसकी महिमा को मान्यता के साथ जोड़ा है, इसलिए गांधी को भगवान की महिमा से न जोड़ें।

गांधी के विषय में भी एक धारणा प्रचलित हो गई है कि,उनके सारे आश्रम उनकी संपत्ति है। वह अबोध और अज्ञानी हैं। यदि वह संपत्ति बनाते तो अपना आधा भाग नंगा नहीं रखते। गांधी भौतिक संपत्ति के हकदार नहीं,बल्कि उनकी संपत्ति तो सारा भारत और भारत के संपूर्ण वासी ही हैं। गांधी के नाम पर कोई संपत्ति नहीं,वो मालिक नहीं सेवक थे।

एक और प्रश्न भी किया करते हैं कि, गांधी ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया, लेकिन अपनी वाणी को पहुंचाने के लिए माइक और रेडियो का सहारा लिया। उन्होंने क्यों नहीं इसका विरोध किया ? मैं कहता हूं कि, गांधी संचार साधनों का उपयोग करते हैं इसलिए वह वैज्ञानिक पद्धति को महत्व देते हैं। वह व्यवसायिक नहीं थे। यदि व्यवसायिक होते तो उन पर आक्षेप लगाना लाजमी होता। संचार और व्यवसाय में फर्क है।

इतिहास की अबोधता के कारण लोग गांधी को दोषी ठहराते हैं कि,गांधी ने ही पाकिस्तान की नींव रखी। जिन्ना को भूल जाते हैं। मुस्लिम तुष्टिकरण का दोष और ठीकरा भी गांधी के सिर पर फोड़कर खुश होते हैं। वह लोग इतिहास उठाकर देखें कि गांधी की मंशा क्या थी। दोष देना और जिम्मेदार ठहराना बड़ा आसान है,लेकिन गांधी के स्तर पर खड़े होकर सोचना कठिन है जो प्रायः लोग कर नहीं पाते है। गांधी ने पाकिस्तान बनाने का विरोध किया था। गांधी के बारे में एक हास्यास्पद यह बात भी जोड़ दी जाती है कि,हम सबका बाप गांधी है। मैं कहता हूं हम सबका बाप नहीं,बल्कि राष्ट्रपिता गांधी हैं। गांधी बाप नहीं,बापू हैं।

कुछ विरोधी और भटके हुए लोगों का यह मानना है कि,गांधी की हत्या करके गोडसे ने गांधी को अमर बना दिया। मुझे बहुत हँसी आती है कि कोई किसी की हत्या करके किसी को अमर कैसे बना सकता है ? व्यक्ति के अपने कर्म, सिद्धांत, मानवीय मूल्य,सौहार्द, सहिष्णुता, उदारता, विश्व व्यापक दृष्टि ही उसे महान बनाती है और अमर बनाती है।

गोडसे ने गांधी को अमर नहीं किया, गांधी हत्या से अमर नहीं हुए, विचारों और राष्ट्रीय संघर्ष से अमर हैं।

न भूतो न भविष्यति, राजा भोज यथा दूजा राजा

हेमेन्द्र क्षीरसागर

शौर्य और ऐश्वर्य युगीन राजा भोज का नाम याद आते ही सत्य,साहस,ज्ञान,कौशल और जलाभिषेक का बोध होने लगता है। सम्यक कालजयी बनाकर भूतो न भविष्यति,राजा भोज यथा दूजा राजा की मीमांसा में राजा-महाराजाओं के देश में राजा भोज राजाओं के राजा कहलाए। इनके राज में प्रजा को सच्चा न्याय और जीने का वाजिब हक मिला। ऐसे महाप्रतापी शूरवीर राजा भोज का जन्म वसंत पंचमी को संवत् 1037 में उज्जैन के परमार (पंवार) राजवंश में हुआ। उनके पिता सिंधुराज तथा माता महारानी सावित्री देवी थीं। पत्नि महारानी लीलावती उन्हीं की तरह बहुत बड़ी विदुषी थीं। उज्जैन,धार के परमार (पंवार) कुल के 24 राजाओं में वे नवें राजा कहलाए जो सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हुए।

यथार्थ,पंवार राजवंशी राजा भोज का राजकाल 1000 से 1055 तक था। उन्होंने अपनी राजधानी उज्जैन से धार स्थानान्तरित की थी। राजा भोज पहले राजा हुए,जिन्होंने भारतीय समाज को संगठित कर बाहरी हमलों का सामना किया। वे हिन्दू धर्म के संरक्षक थे। एक योद्धा की भांति हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए सर्वस्व हुंकार भरी। उन्होंने सोमनाथ, केदारनाथ,रामेश्वरम आदि मंदिरों का नवनिर्माण कर धर्मपीठों को सशक्त बनाया था। उनकी मृत्यु 13 संवत् 1112 को हुई। पंवार वंश का पताका लहराकर राजा भोज दैदीप्यमान आदर्श हिन्दू सम्राट के रूप में भारतीय इतिहास में अमर हो गए।

अमरगाथा का परचम यहीं नहीं थमता,बल्कि आगे तीव्र गति से बढ़ता है। निहाजा,चक्रवर्ती सम्राट राजा भोज मध्ययुगीन भारत के इतिहास में सम्राट अशोक तथा विक्रमादित्य के समान कुशल शासक,विद्वान कवि,दानी, ज्ञानी,त्यागी,धार्मिक,सदाचारी थे। साथ ही ज्ञान-विज्ञान, कला-साहित्य के पुरस्कर्ता होने के अलावा लोक सुख-समृद्धि के बारे सदैव तत्पर सुरक्षा दक्ष प्रजा में अगाध लोकप्रिय अद्वितीय चक्रवर्ती राजा हुए।

प्रत्युत,राजा भोज महान व्यक्तित्व से विभूषित थे। उन्हें माहिषराज परमेश्वर,सार्वभौम आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया था। उनका राज उत्तर में हिमालय से दक्षिण में मलय तक व पूर्व में बंगाल से पश्चिम में गुजरात तक था। राजा भोज सभी प्रकार के शस्त्र तथा शास्त्रों में निपुण थे। उन्होंने संस्कृत और प्राकृत भाषा में 84 ग्रंथ लिखे। कथा धर्म,खगोल विद्या,कला,वास्तुकला,भवन निर्माण,काव्य और औषधी शास्त्र आदि विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखी,जो अभी भी विद्यमान हैं।

स्वतः,राजा भोज ने बहुत से युद्ध किए और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की,जिससे सिद्ध होता है कि,उनमें असाधारण योग्यता थी। यद्यपि उनके जीवन का अधिकांश समय युद्धक्षेत्र में बीता,तथापि उन्होंने अपने राज्य की उन्नति में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न होने नहीं दी। उन्होंने मालवा के नगरों व ग्रामों में बहुत से मंदिर और जलाशय बनवाए। गोया उनमें से अब तक बहुत कम का ही पता चल पाया। ऐसे विविध युगीन,विविध नृपों में उपलब्ध होने वाले गुणों का समाहार किए हुए राजा भोज भारतीय संस्कृति के प्रतीक और अनमोल धरोहर बन गए।

यथेष्ट,वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल को राजा भोज ने ही बसाया था। तब उसका नाम भोजपाल नगर था। जो कालांतर में भूपाल और फिर भोपाल हो गया। अब भोजपाल करने का गुंजार हो चुका है,देखना यह है कि,कब सराबोर होता है। राजा भोज ने भोजपाल नगर के पास ही एक समुद्र के समान विशाल तालाब का निर्माण कराया था,जो पूर्व और दक्षिण में भोजपुर में विशाल शिव मंदिर तक जाता था। आज भी भोजपुर जाते समय रास्ते में शिव मंदिर के पास उस तालाब की पत्थरों की बनी विशाल पाल दिखाई पड़ती है।

सम्यक उस तालाब के पानी को बहुत पवित्र और बीमारियों को ठीक करने वाला माना जाता था। गौरतलब हो कि राजा भोज को चर्म रोग हो गया था। तब किसी ऋषि या वैद्य ने उन्हें इस तालाब के पानी में स्नान करने और उसे पीने की सलाह दी थी,जिससे उनका चर्म रोग ठीक हो गया था। अभिभूत,अलौकिक ज्ञानपुंज और पराक्रम से सराबोर दानवीर राजा भोज के जीवन का प्रत्येक अंश भूतो न भविष्यति,राजा भोज यथा दूजा राजा का भावार्थ परिलक्षित करता है। सचमुच ही राजा भोज का यशोगान है।

खत्म

डॉ. सरिता नारायण

1. दस साल की बच्ची होस्टल में, घर से नेपाली नौकर उसे घर ले जाने को आया, बोला- बाबा घर चलो आपका पापा खत्म हो गया, उसने कहा मैं जा कर क्या करूंगा? अरे बाबा उसको खत्म करना है।

अब उसको समझ में ये बात नहीं आ रही है कि जो चीज खत्म हो गया, उसे फिर से क्यों खत्म करना है?

2. अब हमारे बीच अब कुछ न रहा ,सब खत्म हो गया, कोर्ट में मिलते है, पर क्यूं ? अरे बाबा सब खत्म करने के लिए, वो अपनी बड़ी बड़ी आँखों से उसे देखती रह गयी, और उसकी समझ में नहीं आया, जो खत्म हो गयी उसे फिर से क्यूं खत्म करना है?

गवरी

आदिवासी भीलो का अनुस्थानिक नृत्य

गुलाबचन्द पटेल

परिचय-गांधी नगर निवासी गुलाबचन्द पटेल की पहचान कवि,लेखक और अनुवादक के साथ ही गुजरात में नशा मुक्ति अभियान के प्रणेता की भी है। हरि कृपा काव्य संग्रह हिन्दी और गुजराती भाषा में प्रकाशित हुआ है तो,'मौत का मुकाबला' अनुवादित किया है। आपकी कहानियाँ अनुवादित होने के साथ ही प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

लोक जीवन और सांस्कृतिक विरासत बाल पाठको एवं आम लोगों को परिचित करानेवाली शृंखला में प्रथम पुस्तक गवरी महेंद्र भाना वत लेखक की पुस्तक आज 17 अप्रैल को प्राप्त हुई. बड़ी प्रसन्नता हुई

राज कुमार जैन राजन संपादक, प्रकाशक लेखक एवं चित्र प्रकाशन अकोला का नईदिशा में प्रयाण करने के लिए हम दिल से अभिनंदन करते है

प्रथम श्रेणी की प्रथम पुस्तक के रूप में डॉ महेंद्र भाना वत की गवरी पुस्तक प्रकाशित हुई है उन्हे भी बधाई देना चाहते है।

राजस्थान में बसे भीलोका परम्परागत नाट्य संस्कृति गवरी को बच्चों और लोक मानस तक पहुच अनेका उम्दा कार्य डॉ. महेंद्र ने किया किया है।

लोक कला, लोक जीवन, लोक संस्कृति के बारे में भी पुस्तके पब्लिश होगी जानकारी मिली है।

गवरी नृत्य की प्रमुख भूमिका रही है, शिव तथा भस्मासुर की कथा गवरीमें है।

जानकारी प्राप्त कर सके है शिव-पार्वती की कथा भी इसमें आती है

गवरी में माँ कालका के दो रूप देखने को मिलता है, चौराई या आँगन में संगीत होता है 45 दिन तक चलता है, 100 के करीब अभिनेता होते हैं भारत में एसा कही और देखने को नहीं मिला है गवरी संस्कृति की विरासत ही है

सांस्कृतिक अवमूल्यन

हरीश शर्मा

वर्तमान भारत में अधिकांश भारतीयों को इस बात का अफसोस रहता है कि भारतीयों की वृहद सांस्कृतिक विरासत का दिन ब दिन अवमूल्यन होता जा रहा है सोशल मीडिया के इस दौर में हम लोग डिजिटल रिश्तों को जी रहे है व वास्तविक रिश्तों में 'खोखलापन ' उभर कर सामने आ रहा है परन्तु यदि हम इस पूरे परिदृश्य पर एक गंभीर दृष्टि डाले तो हम यह समझ पायेंगे की इस पूरे 'संक्रमण' में हमारे जैसे कई किरदार अपनी भूमिका का निर्वाहन पूरी गंभीरता से नहीं कर रहे है तात्पर्य यह है कि यह अवमूल्यन यकायक नहीं हुआ है समय के साथ शनेः शनेः हमने अपने सांस्कृतिक आधार को खोया है जिसके जिम्मेदार हम सभी है। आज के दौर में समयाभाव के चलते व जीजिविषा के अभाव में हम लोग शार्टकट अपनाने लगे है जिसके कारण घर जाकर मिलने के स्थान पर फोन व फोन के स्थान पर एक कामन व्हाट्स अप, फेसबुक मेसेज के माध्यम से शुभकामनाओं की रैली चल पड़ी है जो एक मोबाइल से दूसरे मोबाइल तक होते हुए बहुतायत तक पहुँचती जा रही है यदि समय रहते इस बहाव को नहीं रोका गया तो (जो कि निकट भविष्य में सभंव भी नहीं दिखता) एक दिन जब हम पीछे मुडकर देखगे तो पछतावे के सिवाय कोई विकल्प भी नहीं दिखेगा।

यदि हम इस सांस्कृतिक गिरावट को थामना चाहते है तो हमें स्वयं को सबसे पहले हमारी सांस्कृतिक परंपराओं का सही अनुपालन सुनिश्चित करना होगा जिसके लिए जरूरी है परिवार व पारिवारिक संस्कारों हेतु कुछ समय निकालना , जब हम स्वयं गंभीरता से हमारी सांस्कृतिक विचारधाराओं का सम्मान करेंगे तो ऐसा करते हुए देखने पर शायद विडियो गेम्स मोबाइल, टी.वी व इन्टरनेट के मकड़जाल में फँसी हमारी युवा पौध शायद थोड़ा उस जकड़न से बाहर निकलकर सांस्कृतिक मूल्यों को समझने लगे , हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि जिन परम्पराओं का हमारे बुजुर्गों ने पालन किया तथा हम तक पहुँचाया, उन्हे हम भी उसी जिम्मेदारी से उसके मूल रूप में हमारी आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाए व उसका मूल्य भी उन्हें समझाये और यह तभी संभव होगा जब हम स्वयं पूरी जिम्मेदारी से उन परम्पराओं का पालन करे तथा उनके क्रियान्वयन हेतु वास्तविक व सार्थक प्रयास करे, क्योंकि बोले हुए शब्दों से ज्यादा असर वास्तविक घटनाओं का होता है, जब हम स्वयं हमारे बड़ों को यथोचित सम्मान व समय देगें तो उसे देखकर हमारे युवा भी भविष्य में ऐसा करने के लिए प्रेरित होगें।

फिर क्यों आई हो?

शंकरलाल माहेश्वरी

परिचय-शंकरलाल माहेश्वरी की जन्मतिथि-18 मार्च 1936 तथा जन्मस्थान-ग्रामआगूचा जिला भीलवाड़ा(राजस्थान)है आप अभी आगूचा में ही रहते हैं। शिक्षा-एम.ए,बी.एड. सहित साहित्य रत्न है। आप जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे है। आपका कार्यक्षेत्र-लेखन,शिक्षा सेवा और समाजसेवा है।

बार-बार इनकार करने पर भी पीछा नहीं छोड़ती, तुम समय व स्थान का भी अनुमान नहीं लगाती, कब कौन-कहाँ-कैसी भी अवस्था में हो, तुम तपाक से आ जाती हो। लाख मना करने पर भी तुम्हारे कानों पर जूं नहीं रेंगती। उस दिन स्टेशन की सूनी बेंच पर तुम आकर बैठ गई। और तो और,बापू की धर्मसभा में भी तुमने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। हजारों धर्मप्रेमियों के मध्य तुमने वहाँ आकर अच्छा नहीं किया। दोपहर की तेज गर्मी हो या बरसाती बयार,मौसम की नरमी हो या सुहानी साँझ। सदैव मेरी छाया-सी बनी रहती हो,ऐसा क्या हो गया है तुम्हें ?

तुम्हें तो मान-सम्मान की कोई परवाह है नहीं,गेरी तो कोई प्रतिष्ठा होगी न,तुम न रात देखती हो-न दिन। मेरे कार्यालय तक की तुम्हारी पहुँचने की हिम्मत कैसे हो जाती है,मेरे साथी कार्यकर्ता क्या सोचते होंगे,कभी सोचा है तुमने ? घर-परिवार के लोग मुझे सदा कोसते रहते हैं,उलाहना देते हैं,झगड़ा करते हैं फिर भी तुम इतनी ढीठ हो कि स्थिति को समझे बिना चली आती हो।

उस दिन मेरे निकटतम मेहमान आए थे,रात देर तक हम बतियाते रहे और तुम आ धमकी,क्या सोचा होगा उन्होंने ? लोग बातें बनाते हैं,गली-मोहल्ले में चर्चा का बाजार गरम हो जाता है, मेरे बाहर जाते-आते लोग अंगुलियां उठाते है,बातें करते है,नाक-भौं सिकोड़ते है। मैं शर्म के मारे पानी-पानी हो जाता हूँ,फिर भी तुम अपनी मेल-मुलाकात कम नहीं कर पाती,ऐसा क्यों ? पागल हो गई हो क्या ?

घर में बीवी-बच्चे-बहुएँ सभी हैं,लड़के-लड़कियों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता,उनके बीच अपमानित होना पड़ता है मुझे। कई बार 'तू-तू-मैं-मैं' हो जाती है,झगड़ा बढ़ जाता है,तो गली-मोहल्ले के लोग दर्शनार्थी बन जाते हैं। खिल्लियाँ उड़ाते हैं,इतना सब-कुछ होते हुए भी तुम्हारा दिल नहीं पसीजता,ऐसा क्या है जो तुम सन्तुलित नहीं हो पाती।

उस दिन एकादशी का व्रत था। पाठ-पूजा में बैठा था। माला-जाप चल रहा था। वहाँ भी तुम आ गई। क्यों? मेले में भी तुमने पीछा नहीं छोड़ा। सुबह-शाम,दिन-दोपहर कुछ भी नहीं देखा,और वहीं की वहीं बनी रहती हो। सारे मेलार्थी दाँतों-तले अंगुली दबाते रहे। कथा करने वाले स्वामीजी ने मुझे अलग से टोका और ढेर सारा उपदेश दे डाला,पर करता भी क्या? शर्म से गरदन नीची करके उपदेश सुनता रहा और तुम्हें कोसता रहा। आखिर मैंने क्या बिगाड़ा है तेरा? उस दिन होटल में बैठा ही था कि,तुम आ गई। समीप वाले ने खरी-खोटी सुनाई और कह दिया कि कुछ तो शर्म करो यार! तभी दूसरे सभी ठहाका लगाकर हँसने लगे और मेरा सिर नीचा का नीचा रह गया। तुम कितनी जिद्दी हो,तुम तो इतनी निष्ठुर और निकम्मी निकली कि अपनों की पीड़ा भी नहीं समझ पाती।

तुम कभी विचार तो करो,इस तरह कभी भी अचानक तुम्हारा आना,लम्बे समय तक ठहरना,भीड़ भरे सभा-सम्मेलनों में भी तुम्हारी उपस्थिति कितनी दुखदाई हो जाती है मेरे लिए। हाँ,इतना जरूर है कि मैंने तुम्हें अपनाया,साथ दिया,मान-सम्मान दिया,भरपूर समय दिया,तुम्हारे आ जाने के बाद किसी भी प्रकार का व्यवधान मुझे बर्दाश्त नहीं होता। यह जरूर है कि तुम्हारे न आने पर चिड़चिड़ा स्वभाव भी बन जाता है,सिरदर्द होना,बैचेनी बढ़ना,थकान और भयराहट होना सभी कुछ हो जाता है,फिर भी मर्यादा भी सामाजिक दस्तूर तो है न ! लोग मेरी हँसी उड़ाएं,बातें बनाएं,चिढ़ाएं,पीठ पीछे गालियां दें,अपमानित करें,क्या तुम्हें अच्छा लगता है ? बोलो जवाब दो।

तुम्हें संयमित होना चाहिए,मर्यादा का पालन करना चाहिए, लोक-लाज से डरना चाहिए,समाज की नीति के अनुकूल बनना चाहिए,समय देखकर आना चाहिए। फिर लम्बे समय का ठहराव भी तो उचित नहीं

लगता,कुछ समझा करो। सभी लोगों की यह स्थिति नहीं है। उनके पास भी तुम्हारी ही तरह आवाजाही रहती है,किन्तु निश्चित समय सीमा में। यों तुम्हारी तरह कभी भी-कहीं भी उनके पास इस तरह कोई आती-जाती नहीं हैं। देर रात में आकर जल्दी चले जाने का स्वभाव होता है उनका। यदि तुम भी रात के अँधेरे में जब कोई नहीं हो सभी का अलगाव हो जाए,तब धीरे से आकर ठहर जाओ,तो किसी को कोई एतराज नहीं होगा। फिर जल्दी भोर में चले जाना तुम्हारे और मेरे लिए लिहाजन होगा। अगर थोड़ी बहुत भी समझ है,तो दिन में कभी मत आना। जब रिश्तेदार,मित्र-परिजन साथ हों तो देखा करो,तुरन्त चले जाना। हठधर्मी करके आसन मत जमा लेना,ऐसा करोगी तो तुम्हारा मान-सम्मान बढ़ेगा। उस दिन बस स्टैण्ड के मुसाफिरखाने में मैं अपने मित्रों के साथ बैठा,कुछ आप-बीती घटनाओं का वर्णन कर रहा था,तुम अचानक आ गई।

मैंने तुमसे बचने की खूब कोशिश की,फिर भी साथियों को तुम्हारा एहसास हो गया और वे हतप्रभ रह गए। जब मैं अचानक चौंक उठा,तो उन्होंने कह दिया-कभी-कभी ऐसा ही होता है,भविष्य में ध्यान रखने की सीख देते हुए वे आई बस में बैठकर चले गए। तुम्हें याद होगा,उस दिन मैं भारी बुखार से पीड़ित था। सिर में जोर का दर्द था। श्वांस रोग से अत्यधिक विचलित हो गया। हाथ-पैरों ने काम करना बन्द-सा कर दिया। चिकित्सकों का ताँता लग गया,तब तुम नहीं आई। चार दिन तक पीड़ा भोगता रहा,किन्तु तुम्हारे दर्शन न रात में-न दिन में हो पाए। ऐसा क्यों ? दुःख के दिनों में तुम मुझे बिलकुल भूल गई।

वस्तुतः तुम अत्यधिक स्वार्थी हो,अपना सुख ही तुम्हारे लिए सर्वोपरि है। तुम उन दिनों अपना मुँह तक नहीं दिखा पाई, फिर भला तुमसे क्या अपेक्षा की जा सकती है। यदि उस समय दिन में एक बार भी तुम आ जाती तो मुझे सुख मिलता। बीमार के लिए पलभर का सुख भी कम नहीं होता है,ठीक है कि नहीं।

एक दिन तो तुमने हद ही कर दी। आधी रात के भयंकर अँधेरे में मुझे साथ चलने को मजबूर कर दिया। मैं गाँव की गलियों में अनमना मौन साथे तुम्हें साथ लिए चलता रहा,फिर चलता रहा, चलता रहा। तभी किसी के सामने से आने की जोर की आहट सुनी तो अवाक रह गया और तेजी से भागकर वहीं पहुँचा,जहाँ से प्रस्थान किया था। याद हैं न तुम्हें ? बताओ फिर क्यों आई हो !

मेरी मानो तो एक बात कहूँ,तुम पढ़ो समय किसी विद्यार्थी के पास,माल बेचते समय व्यापारी के पास,पूजा करते समय पुजारी के पास,खेत जोतते समय कृषक के पास,सीमा पर पहरा देते सैनिक के पास तथा वाहन चलाने वाले चालक के पास और देश चलाने वाले नेता के पास बेसमय मत आया करो,ताकि वे देश का काम निर्बाध रूप से करते रहें,समझी न !

सुनो ! अब ध्यान रखना,जब आओ तो धीरे से आना,हो-हल्ला हो रहा हो तो कहीं ठहर जाना। सभी चलें जाएं,तब आना और पूरा समय साथ रहकर रात के अन्तिम प्रहर में ही चले जाना। अच्छा,अलविदा,बुरा मत मानना।

कहा-सुना माफ करना निंदिया रानी !

रिश्तों की अहमियत समझें

श्रीमती माला ठाकुर

आज एक पुरानी सहेली से बात हुई। बातो ही बातो में वो फूट फूट कर रोने लगी। मै आश्चर्यचकित थी। हम महाविद्यालय में साथ ही थे, हमारा ग्रुप ऑक्सिजन गैंग के नाम से प्रसिद्ध था। हमने कभी उसे रोते हुए, परेशान होते हुए नही देखा। बड़ी से बड़ी बात पर बेफिक्र हंसती खिलखिलाती, हमेशा मुस्कुराती रहने वाली, दुसरो को हंसाने वाली ऐसी थी प्रांजली। आज अचानक मुझे कुछ समझ आता इसके पहले, वो फोन के दूसरी ओर से फफकते-फफकते बोली तूने बोला था न, कभी कुछ लगे तो बताना। आज मुझे लगा, की मुझे तुझे कुछ बताना है। उसने कहना शुरू किया, मेरी सासु माँ मुझे रोज ताने देती है, और पति को कहती है जबसे औरत आई है तू बदल गया। रोज-रोज की तनातनी अब मुझसे बर्दाश्त नही होती। ऐसा कोई दिन नही जाता जब मुझे सुनना न पड़े। छोटी से छोटी बात कब राई का पहाड़ बनके झगड़े में तब्दील हो जाती है, पता ही नही लगता। इतना ही नही इन सबका प्रभाव हम पति-पत्नी के रिश्तो पर पड़ रहा है। कल झगड़ा बहुत बढ़ गया था, मैंने आत्महत्या की कोशिश, लेकिन बस अपने छोटे से बच्चे के बारे में सोच के हमेशा पैर पीछे कर लेती हूँ। बस अब नही सहा जाता। लगातार उसकी सिसकिया मुझे भी परेशान कर रही थी।

जो बात मैंने प्रांजली से साझा की, आप सभी बहनो से भी साझा करना चाहती हूँ, स्वभाविक बात है, एक लड़की अपना घर-परिवार सब छोड़कर अपने पति के घर आती है, आदते एकदम नही बदलती, जो कोशिश करती है की सबकी चहेती बने, सुबह शाम इसलिए प्रयास भी करती है, उस नए घर में उसे कोई थोड़ा अपना सा लगता है, तो वो उसके पतिदेव, जिनसे वो सब बाते साझा करना चाहती है, पति-पत्नि का रिश्ता बहुत अलग ढंग से ईश्वर ने बनाया है। सभी परिवार जनो को यह सोचने की आवश्यकता है।

वही दूसरी ओर एक माँ जिसने एक बच्चे को जन्म दिया, इतने वर्षो में पाला-पोसा बड़ा किया, हर परिस्थिति में अपने निश्छल प्रेम से उसे ओतप्रोत रखा। अचानक उसका महत्व कुछ कम होता है, तो स्वभाविक है, वो कुछ परेशान तो होगी ही।

पति के लिए जरूरी है की वो अपने पति के रिश्तों को महत्व दे। जिस माँ से वो हर क्षण जुड़ा रहा है, उसका अधिकार कभी समाप्त नही हो सकता। और एक माँ को भी चाहिए की नई नवेली को भी रिश्तो को समझने के लिए थोड़ा स्थान दे। पति पत्नि के नितांत व्यक्तिगत रिश्ते को समझे। बस अगर दोनों लोग अपनी अपनी भूमिका समझ ले और आपस में गिले-शिकवे स्वयं ही साझा करने लगे तो रिश्तों में खटास कभी नहीं आएगी। आइये नई शुरुआत करे, रिश्तों की अहमियत समझे और उनका आदर करना शुरू करे।

बेबाकीपन या बेहयापन

ब्रजेन्द्र नाथ मिश्र

आज कल एक अजीब चलन चल गया है। शिष्टता की सीमा लांघना, बेबाकीपन और बोल्ड कहा जाने लगा है। अगर उसे कोई स्त्री , स्त्री विमर्श से जोड़कर उसे महिमामंडित करे तो वह बड़ी खबर बन जाती है। उसे वैश्विक स्तर पर भी स्वागत किया जाने लगा है।

आप जन लेखक या जनसंवाद स्थापित करने वाले रचनाकार कहलाने लगते हैं, अगर आप व्यवस्था को इतनी गालियां देते है कि पिछले कई दशकों तक नहीं दी गई होंगी। आप लानत मलामत भेजने की होड़ में काफी आगे निकल पाते हैं।

रातों रात मशहूर होने के बड़े आसान समीकरण का प्रचलन चल पड़ा है। चली आ रही दस्तूरों, दकियानूसियों से नवाड़ी जाने लगी हैं। मातृभूमि को गाली देना समाचार बन जाता है। मातृभूमि के लिए गोली खाना कोई समाचार नहीं बन पाता।

हमें पोर्न अच्छा लगता है, क्योंकि इंटरनेट पर पोर्न 70 प्रतिशत से अधिक छाया हुआ है। अब साहित्य में अश्लीलता की चर्चा ही बेकार है। अब कामायनी, उर्वशी या शाकुन्तलम् में हम श्रृंगार नहीं ढूढते। हम पेटीकोट और में श्रृंगार ढूढते है। अफसोस तब होता है जब समाज को दिशा देने वाले साहित्यकार या प्रबुद्ध वर्ग भी सस्ती लोकप्रियता की चाह में हवा के उसी रुख में उड़ते हुए दीखते हैं।

समाज की विद्रूपताओं को स्त्री के अंतरवस्त्रों(मैं यहाँ उनके नाम गिनाने से परहेज कर रहा हूँ) से जोड़कर स्त्री रचनाकारों के द्वारा प्रस्तुत किया जाना उन कतिपय तथाकथित लोगों को भले ही चटपटा, तीखा और स्वादिष्ट लगता हो, लेकिन स्त्री विमर्श की कबालत करने वालों को भी शिष्ट तो नही लगता होगा। हाल में एक कविता चर्चित हो गई।

उसके भाव कुछ इस तरह थे-

उसने दरोगा के कहने पर पेटीकोट नहीं उतारा,

उसकी दुधमुंही बच्ची अपनी बूढ़ी दादी के सूखे स्तनों को चूसती रही, वगैरह, वगैरह...

यहां साहित्य बेबाकीपन का आवरण लिए जनसंवाद स्थापित करने को बेचैन दिखता है, ऐसा ही सन्देश देने का प्रयास किया जा रहा है। इसमें इसतरह का तथाकथित बेबाकीपन किस हदतक बेहयापन के करीब पहुँच गया लगता है, इसका आभास बहुतों को होते हुए भी वे सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के प्रयास में उस हद तक अपने को गिरने - गिराने में कोई भी संकोच करना नहीं चाहते। इसमें वे बोल्ड, बेबाक का खिताब भी हासिल करने में सफल हो ही जाते हैं।

साहित्य अगर न भी कहें तो आजकल का लेखन इस बात में होड़ करने में लगा है कि किसने सेक्स की रोशनाई में अपनी कलम कितनी डुबाई है और उसके बाद उसे कितने बोल्ड ढंग से कागजों पर उतारा है। आज का श्रृंगार रस, श्रृंगार से उतना अलंकृत नहीं होता जितना इरोटिका के रस से ओतप्रोत होता है।

मैंने हाल में लिखी अपनी एक श्रृंगार रस की कविता की कुछ पंक्तियों को सोशल साइट फेसबुक पर डाली, यह देखने के लिए कि कैसी प्रतिक्रिया मिलती है । पंक्तियां थी..

अभिसार के क्षणों को यादों में पिरो लें।

उत्कंठित मनसे, उद्वेलित तन से,

उर्जा के प्रबलतम आवेग के क्षण से,

यौवन से जीवन का अविचारित यात्रा बन,

अंतर में टूटते तटबंध को टटोलें।

अभिसार के क्षणों को यादों में पिरो लें।

इस पर बहुत कम लोगों की प्रतिक्रिया आई। शायद मैंने भारी भरकम शब्दों में कसकर श्रृंगार को व्यक्त करने की कोशिश की थी जो इस समय की ग्रहणशीलता के अनुरूप नहीं है। अगर मैं उसे व्यक्त करने के स्तर को थोड़ा नीचे ले आकर साफ्ट पोर्न के आसपास रखता, तो शायद ज्यादा स्वीकार किया जा सकता था। बड़ी अजीब बात है जहां अभिज्ञान शाकुन्तलम, कामायनी, उर्वशी जैसे श्रृंगार रस से सराबोर उत्तम रचनाएँ रची गई हों वहां आज का पाठक वर्ग श्रृंगार रस की कतिपय पंक्तियों के प्रति भी ग्रहणशील नहीं है।

इस समय अगर आदरणीय जयशंकर प्रसाद भी अपनी कामायनी को पुनर्मुद्रित करवाने को आएं तो प्रकाशक उन्हें अपने काम सर्ग और वासना सर्ग का नाम बदलकर पोर्न सर्ग और एरोटिक सर्ग करने कहेंगें, तभी उनका काव्य छापने लायक समझा जायेगा। जयशंकर प्रसाद उतने बोल्ड नहीं हो सके न। उर्वशी से राजा पुरुरवा के प्रणय दृश्यों को दिनकर जी खुलकर नहीं लिख सके न। मैंने हाल ही में एक कहानी में BHMB शब्द लिखा देखा जो किसी लड़की पर कसी गई फब्तियों का एक हिस्सा था। बाद में जब लड़की ने अपने सूत्रों से इसका मतलब जानना चाहा तो पता लगा कि इसका मतलब होता है, बड़ा होकर मॉल बनेगी, और यह मतलब जानने के बाद लड़की शर्मिंदा नहीं महसूस कर , खुश होती है। और ऐसी कहानियाँ और किस्से खूब पढ़ी जाती हैं।

यह वैसे ही होता है जैसे अगर कहा जाय कि इसे मत देखो, या इसे मत पढ़ो, तो उसे लोग जरुर देखते या पढ़ते हैं। उसी तरह का है बोल्ड लेखन।

बेबाकीपन अब बेहयापन की हद पार करने लग गया है। रचनाकर्मियों का भी कोई दायित्व होता है, उसे समझने की जरूरत है।

तो इसे आप क्या कहेंगें, बेबाकीपन या बेहयापन।

बोल्डनेस, फूहड़पन और बेहयापन की सीमा न लाँघ दे इसका खयाल रखा जाय, तो रचनाकार अपने सामाजिक दायित्व के निर्वहन में भी समुचित योगदान दे सकेंगे।

वाकई !

इस चमत्कार को नमस्कार है !!

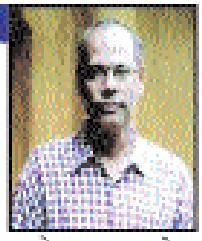

तारकेश कुमार ओझा

क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि कोई बिल्कुल आम शहरी युवक बमुश्किल चंद दिनों के भीतर इतनी ऊंची हैसियत हासिल कर लें कि वह उसी माहौल में लौटने में बेचारगी की हद तक असहायता महसूस करे, जहां से उसने सफलता की उड़ान भरी थी। मैं बात कर रहा हूं। भारतीय क्रिकेट टीम के सफलतम कप्तान महेन्द्र सिंह धौनी की। जिन्होंने महज 12 साल के करियर में क्रिकेट की बदौलत वह मुकाम हासिल कर लिया कि उनकी जिंदगी पर फिल्म बन कर भी तैयार हो गई। सचमुच यह चमत्कार है जिसे नमस्कार करना ही होगा।

ये 2004 के बारिश के दिन थे, जब हमने सुना कि हमारे शहर खड़गपुर के प्रतिभाशाली क्रिकेट खिलाड़ियों में शामिल और रेलवे में टिकट कलेक्टर महेन्द्र सिंह धौनी का चयन भारतीय क्रिकेट टीम में हो गया है। चंद मैच खेल कर ही वह खासा च र्चित हो गया और देखते ही देखते सफलता के आकाश में सितारे की तरह जगमगाने लगा। हालांकि तब तक वह सेलीब्रिटीज नहीं बना था। अंतहीन खत्म होने के बाद वह नौजवान आखिरी बार शहर लौटा। सिर पर बड़ा सा हेलमेट लगा कर बाइक से घूम - घूम कर उसने अपने जरूरी कार्य निपटाए , जिनमें रेलवे की नौकरी से इस्तीफा देना भी शामिल था। हालांकि तब के तमाम बड़े अधिकारी उससे नौकरी न छोड़ने की अपील करते रहे। उसके सारे कलेम पर विचार करने का आश्वासन देते रहे। लेकिन वह नहीं माना। उसने नौकरी छोड़ दी और बिल्कुल आम रेल यात्री की तरह ट्रेन में सवार होकर इस शहर को अलविदा कह दिया। शहर में उसका अपना कोई सगा तो था नहीं, अलबत्ता इष्ट - मित्रों की भरमार थी। कुछ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गए। वह शायद हावड़ा - मुंबई गीतांजलि एक्सप्रेस थी, जिससे धौनी को सफलता के अकल्पनीय सफर पर निकलना था। जैसा देश में आम नागरिकों के साथ होता है।

रेल यात्रा आकस्मिक परिस्थितियों में हो रही थी, तो बेचारे का ट्रेन में आरक्षण भी नहीं था। साथियों ने एक टीटीई को कह कर उसे ट्रेन के एसी कोच में बैठाया कि इसमें तब के लिहाज से नामी क्रिकेट खिलाड़ी महेन्द्र सिंह धौनी को बैठाया गया है। स्टेशन छोड़ने गए साथी बताते है कि तब उस टीटीई ने झल्ला कर कहा था कि कौन धौनी और खिलाड़ी है तो क्या हुआ। इतना कह कर वह टीटीई तमतमाता हुआ आगे बढ़ गया। बस कुछ दिन बीते और घटना के चश्मदीद रहे साथी उस टीटीई को ढूंढने लगे कि भैया , एक बार सोच तो लो कि तुमने बया कहा था।

क्योंकि चंद दिनों के भीतर ही वह आम शहरी युवा व्यक्ति से परिघटना बन चुका था। वह सफलता के आकाश पर धूमकेतु की तरह चमकने लगा।जिस युवा को शहर ने अपने बीच करीब तीन साल का अंतराल व्यतीत करते देखा , वो परिदृश्य पर सितारे की तरह जगमगाने लगा। वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विज्ञापनों के लिए सबसे पसंदीदा सितारा बन चुका था। शहर को अलविदा कहने के कुछ दिन बाद ही वह शहर के नजदीक वाली राज्य की राजधानी कोलकाता में एक मैच खेलने आया। इस पर साथ खेलने - खाने वाले उसके तमाम संगी- साथी उससे मिले और कम से कम एक बार शहर आने की गुजारिश की। इस पर उसने अपनी असहाय स्थिति का हवाला देते हुए कहा कि अब उसकी गतिविधियां एक विभाग द्वारा नियंत्रित होती है। उसका कहीं आना - जाना अब लंबी औपचारिकता और प्रक्रिया की मांग करता है। क्योंकि चंद दिनों में ही वह अचानक वह आम से खास बन चुका था।

वह अर्श से फर्श पर था। उसकी अपार ख्याति और धन - प्रसिद्धि से दुनिया हैरान थी।जल्द ही मालूम हुआ कि अंतर राष्ट्रीय पत्रिका फोर्ब्स ने उसे सबसे ज्यादा कमाई करने वाला खिलाड़ी घोषित कर दिया है।उसकी सालाना कमाई कल्पना से परे हो चुकी थी। बेशक यह चमत्कार था जिसे नमस्कार किए बिना नहीं रहा जा सकता। लेकिन पता नहीं क्यों मुझे लगता है कि सफलता के शिखर तक के इस असमान्य उड़ान के पीछे उस सफल व्यक्ति से बड़ा करिश्मा क्रिकेट का है जिसके पीछे अरबों - खरबों का बाजार खड़ा है।

देश की विडंबना ही है कि समुद्र पर पुल बनाने और असाध्य रोगों का इलाज ढूंढने वालों को कोई नहीं जानता - पहचानता। लेकिन एक क्रिकेट खिलाड़ी को मैच खेलते करोड़ों लोग देखते हैं। उसकी हर स्टाइल और अदा पर कुर्बान होते हैं। मुझे नहीं लगता कि हमारे देश - समाज में क्रिकेट को छोड़ और किसी में यह क्षमता है कि वो किसी आम शहरी युवा को चंद दिनों में ही धौनी जैसा कद और हैसियत दिला सके।

इतनी सारी पृथ्वियां

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय वैमानिकी और अन्तरिक्ष प्रबंधन के लिए उत्तरदायी ऐजेंसी नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन, जिसे संक्षेप में नासा कहा जाता है, आजकल काफी लोकप्रिय होती जा रही है। वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा व रोजगार के साथ साथ अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद जैसे विषयों के समानांतर इस समय लोगों में नासा द्वारा खोजी जा रहीं नित नवीन खोजों में दिलचस्पी काफी बढ़ गई है। ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि लोगों में पहले से ही धरती से इतर की आकाशीय दुनिया को देखने, जानने और समझने का कौतुहल अपनी शैशवावस्था से तभी प्रारम्भ हो जाता है, जब वह पहली बार आकाश में सूरज, चांद और सितारों को देखते हैं। ये वो परालौकिक खण्ड होते हैं, जो पृथ्वी से कितने ही दूर होकर भी निकट अनुभूत होते हुए सदा मानव मन-मस्तिष्क में घूमते रहते हैं। भारत के वेदों और धर्म पुराणों से लेकर अन्य प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं यथा अमेरिका की प्राचीन माया सभ्यता औरमिस्र व रोमन सभ्यताओं और यहां तक सिंधु घाटी सभ्यता में भी पृथ्वी के बाहर ब्रह्माण्ड में सूर्यों और अनगिनत ग्रहों व चंद्रमाओं के अस्तित्व से संबंधित व्याख्यान और उपाख्यान भरे पड़े हैं।

अतः जब भी नासा कोई नई अंतरिक्षीय खोज करता है, तो वह कम से कम हम भारतीयों को कहीं से भी नई नहीं लगती वरन् प्रामाणिकता सिद्ध करने वाली अधिक प्रतीत होने लगती है। जब नासा को सूर्य पर ॐ की ध्वनि सुनाई देती है, जब नासा को धरती के एक और चंद्रमा के बारे में पता चलता है, जब नासा को मंगल ग्रह पर किसी महिला की तस्वीर उकरती दिखती है और जब नासा और अनेकानेक सौरमण्डलों और पृथ्वीनुमा ग्रहों की पुष्टि करता है, तब हमारे वेद कहीं न कहीं हमें एक प्रामाणिक तुष्टिकरण के गौरवबोध से भरने की चेतना जगा देते हैं।

अमेरिका में पहले अंतरिक्ष के मामलों में परामर्श या निर्णय लेने के उद्देश्य से नेशनल एडवाइज़री कमेटी फॉर ऐरोनॉटिक्स (एनएसीए) के नाम से गठित की गई यह समिति 1 अक्टूबर, 1958 को तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति ड्वाइट ईसेनहॉवर द्वारा सैक्षित संघ द्वारा प्रक्षेपित किये गए पहले कृत्रिम उपग्रह के प्रत्युत्तर में नासा के रुप में परिवर्तित कर पुनःस्थापित की गई थी। अमेरिकी अंतरिक्ष अन्वेषण के समस्त कार्यक्रमों को संचालित करने वाले नासा ने अपने अनेक अतिविशिष्ट अपोलो चन्द्रमा अभियान, स्कायलैब अंतरिक्ष स्टेशन, अंतरिक्ष शटल से लेकर इस सदी के मानवरहित चांद, मंगल व अन्य सुदूर अंतरिक्ष में भी अंतरिक्षयान प्रक्षेपण अभियानों से हिन्दी की छाती तले अंगुली दबाने वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया है। इस तरह उद्भवित दुनिया की सबसे बड़ी स्पेस एजेंसी नासा जब अपने हेडक्वार्टर वाशिंगटन से 27 फरवरी 2017 को सात नई पृथ्वियों के मिलने की घोषणा करती है, तो हमारी पूरी पृथ्वी पर इन नवीन पृथ्वियों के चर्चे छा जाते हैं।

अभी तक भी पूरी दुनिया नासा के इन सात नए लोकों के रहस्यों में उलझी हुई है। वैज्ञानिकों से लेकर आमलोगों तक हमारी पृथ्वी के विकल्प इन पृथ्वीनुमा बाह्यग्रहों में सोचे जाने लगे हैं। वैसे तो खगोलवैज्ञानिक दृष्टिकोण से ब्रह्माण्ड में आकाशगंगा में अनेक पराविश्रांत और रक्तवर्णीय बौने तारों का बाहुल्य एक आम बात मानी जाती है। इन बौनेतारों की परिक्रमा कर रहे मौजूदा ग्रहों को ढूंढकर उनके अध्ययनों से पृथ्वी जैसे ग्रहों के गठन को समझने में आसानी होती है। नासा अंतरिक्ष ऐजेंसी पृथ्वी को व्यापक स्तर पर समझने के लिए ही इस तरह के शोधों में लगी हुई है और निरंतर इस तथ्य की खोज पर बल दिया जाता है कि इस ब्रह्मांड में जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई। पिछले कुछ दिनों से नासा द्वारा खोजे गए ट्रेपिस्ट-1 नामक बौने तारे का जिक्र बहुत हो रहा है। यह एक मद्धिम रोशनी वाला पराविश्रांत तारा है, जिसकी त्रिज्या गुरु ग्रह से मात्र 1.2 गुनी अधिक है। यह हमारी धरती से करीब 40 प्रकाश वर्ष दूरी पर स्थित है। इसे नासा के वैज्ञानिकों ने एक नए सौरमंडल के अस्तित्व के रुप में प्रस्तुत किया है। ऐसा कहा जा रहा है कि हमारे सूर्य का तेज इससे कहीं बारह गुना अधिक है। इसकी सतह का तापमान केवल 2550 डिग्री केल्विन है, जो मुश्किल से हमारे सूर्य के तापमान का आधा है।

ट्रेपिस्ट-1 तारे के आसपास पिछले वर्ष मई में तीन ग्रहों को परिक्रमा लगाते पाया गया था, लेकिन अभी 22 फरवरी को वैज्ञानिकों ने अपनी गणनाओं के आधार पर स्पष्ट किया कि ट्रेपिस्ट-1 के चारों ओर तीन नहीं बल्कि कुल सात पृथ्वी के आकार के ग्रह हैं। इन सातों ग्रहों को क्रमशः ट्रेपिस्ट-1 बी, सी, डी, ई, एफ, जी एवम् एच नाम दिए गए हैं। नासा के अनुसार उसकी अब तक की खोजों में ऐसा पहली बार देखा गया है कि एक तारे के चारों तरफ इस तरह के ग्रह दिख रहे हों। ये सातों ग्रह अपने तारे ट्रेपिस्ट-1 से अतिनिकट स्थित हैं और इसलिए हमारे सौरमण्डल के ग्रहों की तुलना में अपने तारे के चारों ओर की परिक्रमा करने में इनको अपेक्षाकृत बहुत ही कम समय लगता है। ट्रेपिस्ट-1 के सबसे निकटस्थ ग्रह ट्रेपिस्ट-1 बी मात्र डेढ़ दिन में और दूरस्थ ट्रेपिस्ट-1 एच लगभग बीस दिनों में अपनी परिक्रमा पूरी कर लेते हैं। ये ग्रह आपस में भी काफी निकट दूरियों पर स्थित हैं, इनके बीच की दूरी हमारे सूर्य और बुध के बीच की दूरी से भी पांचगुना कम है। ट्रेपिस्ट-1 के सभी सातों ग्रह शैल प्रकृति के ठोस ग्रह हैं। इस सौरमण्डल के तीन ग्रह ट्रेपिस्ट-1 ई, एफ वजी आवासीय क्षेत्र में स्थित पाए गए हैं। आवासीय क्षेत्र से तात्पर्य अंतरिक्ष में किसी तारे से एक विशेष दूरी पर स्थित उसके कक्षीय उन ग्रहों की स्थिति से होता है, जिनमें जीवन की सम्भावना हो सकती है। वैज्ञानिक भाषा में इन क्षेत्रों को गोल्डीलॉक्स जोन भी कहा जाता है। कुछ प्रारम्भिक जलवायु मॉडलों के आकलन के आधार पर यह माना जा रहा है कि ये तीनों ट्रेपिस्ट-1 ग्रह तापमान के उचित संतुलन को दृष्टिगत रखते हुए अपनी-अपनी सतहों पर जलप्रवाह के लिए सक्षम साबित हो सकते हैं। जल से ही जीवन है, इस शाश्वत सत्य को मूल में रखते हुए वैज्ञानिकों में इस बात की प्रेरणा जागी है कि इन सातों ग्रहों में से इन तीन ग्रहों और विशेष रुप से ट्रेपिस्ट-1 एफ में जीवन की सम्भावना अधिक प्रतीत होती है। क्योंकि यह काफी कुछ पृथ्वी की तरह ही ठण्डा है, जिसमें उपयुक्त वातावरण और कुछ हरितग्रह गैसों के होने की सम्भावना नजर आ रही है। तो ये तो नासा के बिल्कुल हाल ही में खोजे गए वे सात पृथ्वी लोक हैं, जिन्होंने अपने अस्तित्व की पहचान करवाकर पूरे ब्रह्माण्ड को हिलाकर रख दिया है।

नासा ने इन सात पृथ्वी लोकों के अलावा भी पहले ऐसे और पृथ्वी लोक खोजकर यह सिद्ध कर दिया है कि इस अंतहीन अंतरिक्ष में हम ही अकेले नहीं हैं, वरन् भारतीय महाभारत के दौरान दिव्य नेत्रों से अर्जुन ने श्रीकृष्ण में जिन अनंत ब्रह्माण्डों और सौरमण्डलों के दर्शन किए होंगे, वे कदाचित किंवदंती तो नहीं ही कहे जा सकते। एक वैज्ञानिक अनुमान के अनुसार सिर्फ हमारी आकाशगंगा में ही 10 हजार से लेकर 10 करोड़ तक पृथ्वी सम्भावनाएं हो सकती हैं। नासा ने अपने एक अतिमहत्वाकांक्षी कैपलर मिशन के माध्यम से हमारे सौर मंडल में ही बृहस्पति ग्रह के चार चंद्रमाओं में से एक यूरोपा नामक चंद्रमा पर हमारी पृथ्वी की ही भाँति हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की उपस्थिति होने का अनुमान लगाया है। नासा के शोधों से यूरोपा में बर्फ के एक विशाल समुद्र और उसके नीचे एक बड़े से भरेपूरे संसार के होने की आशा जताई गई है। पिछले सालों में नासा मंगल ग्रह पर लवणीय जल की उपलब्धता का प्रमाण भी प्रस्तुत कर चुका है, जिससे यह संभावना प्रबल हो गई है कि मंगल अभी भी भौगोलिक रुप से सक्रिय है और वहां पर जीवन हो सकता है।

24 जून 2015 को नासा ने सौरमंडल के अंदर ही पृथ्वी की तरह एक दूसरे ग्रह 'कैप्लर 452बी' को भी खोज निकाला है। नासा के इस पृथ्वीलोक की अपने तारे जी2 से दूरी सूरज की पृथ्वी से दूरी के ही समान पाई गई। कैप्लर 452बी भी पृथ्वी की ही तरह अपने तारे का चक्कर लगाने में 385 दिन लगाता है। आकार में हमारी पृथ्वी से लगभग डेढ़ गुना बड़ा यह चट्टानी ग्रह हमसे 1400 प्रकाश वर्ष दूर है। कैप्लर 452बी का पितृतारा कैप्लर 452 छह अरब वर्ष पुराना है, जो हमारे सूरज से भी 1.5 अरब वर्ष बड़ा है और 20प्रश अधिक चमकीला है औरप्रकाश भी देता है।इसका गुरुत्व बल पृथ्वी की तुलना में दोगुना है, अतः वैज्ञानिकों का मानना है कि इतने गुरुत्वाकर्षण की स्थिति में कोई भी जीवधारी जीवित रह सकता है। यहां तक कि ऐसी परिस्थितियों में पौधे भी पनप सकते हैं। कैप्लर 452बीपर अत्यधिक मेघ और सक्रिय ज्वालामुखी होने की भी संभावना है।बल्कि यह न तो बहुत अधिक ठण्डा है और न ही बहुत अधिक गर्म है। पृथ्वी से गहरी समानता दर्शाने और जल व जीवन होने की प्रबल आशा के कारण नासा के इस पृथ्वीलोक को अर्थ 2.0 नाम दिया गया है।

इसके अलावा नासा ने हमारे सौर मंडल से बाहर भी अब तक लगभग सवा दोसौ से भी अधिक ऐसे पृथ्वीलोक जैसे ग्रह खोज निकाले हैं, जो गोल्डीलॉक्स जोन में आते हैं। इनमें पृथ्वी से 490 प्रकाश वर्ष दूर करीब 10 गुना बड़े ग्रह कैपलर 186 एफ, 20 प्रकाश वर्ष दूर लगभग दो से तीन गुना बड़ा शैलनिर्मित ग्लीस 581 जी, 22 प्रकाशवर्ष दूर लगभग साढ़े चार गुना बड़ा सुपर अर्थ नामक ग्लीस 667 सीसी ग्रह, 600 प्रकाश वर्ष दूर लगभग ढाई गुना बड़ा कैपलर-22बी और 22 प्रकाश वर्ष दुर पिक्टोर नाम के तारामंडल में स्थित एचडी 40307 ग्रह में भी जीवन की प्रबल सम्भावनाएं जताई हैं। नासा के कैपलर-22बी पृथ्वीलोक का सूरज हमारी पृथ्वी के सूर्य से बहुत मेल दर्शाता है। यहां तक कि नासा वैज्ञानिकों ने इस ग्रह पर पृथ्वी की ही भाँति हरितग्रह प्रभाव और औसत तापमान 22 डिग्री सेल्सियस पाया है। अतः नासा के इस पृथ्वीलोक में जैव अनुकूलनताओं की दृष्टि से जीवन की सम्भावना अधिक दिखाई देती है।

नासा के ये प्रमाणिक पृथ्वीलोक निःसंदेह हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति में उल्लिखित अनेक लोकों यथा सत्यलोक या ब्रह्मलोक, तपो लोक, भृगु लोक, स्वर्ग लोक, इंद्र लोक, ध्रुव लोक, सप्तऋषि लोक, जन लोक या महर लोक, भूलोक, कर्मलोक, भुवर लोक, पाताल लोक आदि की पुष्टि करते हैं। नासा के पृथ्वीलोक इस उक्ति का कहीं न कहीं समर्थन सा करते प्रतीत होते हैं कि कल्पनाओं की उड़ानों में पंख यथार्थ के ही होते हैं। कल्पनाओं की पराकाष्ठाएँ भी कहीं न कहीं यथार्थ के देखे स्वरुप से ही जन्म लेती हैं, बस प्रमाणों की कसौटियां खोजनी पड़ती हैं। नासा के खोजे पृथ्वीलोक हम भारतीयों के लिए इन कसौटियों से कम नहीं माने जा सकते हैं।

साहित्य के उन्नयन में गालियां

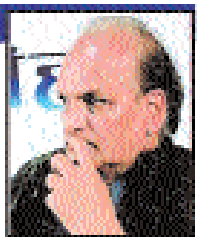

गिरीश पंकज

परिचय–साहित्य और पत्रकारिता की दुनिया में गत चार दशकों से सक्रिय रायपुर(छत्तीसगढ़) निवासी गिरीश पंकज के अब तक सात उपन्यास, पांच व्यंग्य संग्रह सहित विभिन्न विधाओं में कुल पचपन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

लोग गालियां भूल जाएं, इसलिए कुछ लेखक अपनी रचनाओं में जो खोलकर गालियों को भरपूर इस्तेमाल करते हैं। अगर गालीमार्का लेखक नहीं होते तो बेचारी गालियों का क्या होता? लोग धीरे-धीरे भूल न जाते? जब साहित्य में गालियां थोक के भाव में आएंगी तो अज्ञानी पाठक भी यही सोचेगा कि ,गालियां हमारे जीवन के लिए बहुत जरुरी है, इसलिए वह भी बात-बात में मां-बहन को 'याद' करता रहेगा। कभी-कभी कुछ लोग साहित्य में बढ़ रही गालियों को लेकर नाक-भौं सिकोड़ते हैं।मुंह बिचकाकर निंदा करते है, ये करमजले नादान लोग हैं। इनमें साहित्य की समझ नहीं है। ये पगले साहित्य के मर्म को ठीक से नहीं समझते। साहित्य का मतलब है सबके हित के साथ चलो,जब गाली देने से पाठक के मनोरंजन का हित होता हो, तो क्यों न दी जाए ? यही फंडा है इनका, इसीलिए आजकल गालियों का प्रयोग हो रहा है। क्या कहानी, क्या उपन्यास, और क्या तो फिल्मों में, जित देखो, तित गाली। और आलोचकनुमा पशु गाली-ग्रस्त कृतियों को महिमामंडित करने में लगा रहता है। जिस पुस्तक में जितनी अधिक गालियां होती है,उस पुस्तक को आलोचक उतना अधिक पसंद करता है। यह बड़े मजे का खेल है, जो साहित्य में खेला जा रहा है और जी भरकर गालियों को ठेला जा रहा है।

हमने गालियों के कारण भयंकर रूप से चर्चित किए गए एक ज्ञानी लेखक से पूछा-'भाई मेरे, क्या तुम्हारा हर पात्र गाली-गलौज के बिना एक वाक्य भी नहीं बोल पाता ?'उसने कहा- 'बोल तो लेता है लेकिन मैं बिना गाली-गलौज के लिख नहीं पाता। ससुरी कलम ही आगे नहीं बढ़ती,दो-चार गालियां लिखता हूं तब दस-बीस लाइनें बनती है बाबा और पेट भी सा? होता है। मेरे लेखन का यह अजीब फंडा है और बिना गालियों के मेरा लिखना अंडा-अंडा है, इसलिए अगर गालियां नहीं लिखूंगा तो मेरा लिखना रुक जाएगा। लिखना रुक जाएगा तो मेरा सांस लेना भी रुक जाएगा। जैसे जीवन में बिन पानी सब सून होता है न, उसी तरह मेरे लेखन में बिन गाली सब सून है।'

इतना बोल कर लेखकजी मुस्कुराए और कहने लगे-'तुम भी कहानी लिखते हो मगर तुम्हारे पात्र गालियां नहीं देते। पिछड़े कहीं के, यह ठीक बात नहीं। हमें अपने पात्रों को गालीवाला बनाना चाहिए। इससे पात्र बोल्ड हो जाते हैं..हमें साहित्य को आगे बढ़ाना है।'

मैंने कहा-'क्या हम सात्विक-संवाद बोलने वाले पात्र नहीं गढ़ सकते? क्या गांव का हर व्यक्ति गाली ही देता है? क्या कोई रिक्शा चलाने वाला गाली के बगैर बात नहीं करता ? क्या हर व्यक्ति गालियां देख कर ही अपने वाक्य पूर्ण करता है? मैंने तो ऐसा नहीं देखा। अरे, मैं भी गांव गया हूं। वहां कुछ लोग गालियां भी देते हैं लेकिन हर कोई गाली नहीं देता। आपके हर पात्र गाली बगैर बात नही करते। आपको एक सात्विक उपन्यासकार के रूप में भी याद किया जा सकता था, लेकिन अब आप बोल्डली गाली देने वाले महान लेखक बन गए हैं'।

वे बोले-'मैं सात्विक -फात्विक के फेर में नहीं पड़ता। इतना जानता हूं कि अगर लोकप्रिय होना है तो गालियां बहुत जरुरी है। आजकल इसी का ट्रेंड है। पहले का जमाना नहीं रहा। तब साहित्य बच्चा था,अब वह जवान हो गया है।वह गाली दे सकता है,और मजे की बात पाठकों को भी अच्छा लगता है,इसीलिए मेरी किताबें खूब बिकती है। ऐसे में मैं भला गालियों का प्रयोग क्यों न करूं ? गालियां लिख-लिख कर कितने सम्मान झटक लिए मैंने। जो बेचारे अपने पात्रों को शालीन बनाए रखते हैं,वे सबके सब लाछू बनकर किनारे हो गए हैं ,और हम साहित्य के केंद्र में बने हुए हैं। सोचो जरा,गालियों का कितना महत्व है? इसलिए भैया,लाख हमारी आलोचना करो,हम तो गालियों का दामन नहीं छोड़ेंगे,नहीं छोड़ेंगे। भले ही दुनिया छोड़ दें।'

मैंने महसूस किया कि,साहित्य का यह 'कुलदीपक' बड़ा सिद्धांतवादी है। वह अपने 'गालियों के सिद्धांत' से एकदम नहीं डोलेगा। हमने उसे प्रणाम किया,शुभकामनाएं दीं,और कहा-'हिन्दी साहित्य में जब कभी गालियों पर शोध होगा तो आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। आप गाली-शिरोमणि हैं, लगे रहें अपने कर्म में।साहित्य की जो नियति होगी,वह होगी,आप अपने कदम से पीछे न हटें।'

मेरी बात को उन्होंने गंभीरता से लिया। अच्छा हुआ कि,वो मेरा व्यंग्य समझ नहीं पाए। मुस्कुराकर बोले-' आप जैसे सुधी पाठक ही मेरे लेखन-कौशल को समझ सकते हैं,बाकी तो चिरकुट किस्म के लोग हैं जो मेरी निंदा करते हैं,अब करते रहें। वही कर सकते हैं। वैसे भी आप तो मानेंगे कि गालियां देना सबके बस की बात नहीं। इसके लिए बड़ा वाला कलेजा चाहिए साहब,जो मेरे पास है।बड़ी मशक्कत के बाद मुझे यह ज्ञान मिला है,इसीलिए तो आज आलोचकों की नजर में मैं नम्बर वन का लेखक हूं। बाकी सब दो नंबरी हैं। आपके पास भैया अगर कुछ नई गालियां हो,तो मुझे सप्लाई करने की कृपा करें,ताकि अपनी नई कृतियों में उन्हें शामिल कर साहित्य की सेवा कर सकूं।'

मैं कुछ देर मुस्कुराता रहा.. मैंने कहा-'आपने तो लगभग सभी का उपयोग कर लिया है। कुछ नई सुनी तो आपको 'वाट्सएप' कर दूंगा।'

वे प्रसन्न हो गए और बोले-'आपका यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगा।'

इतना सुनकर मेरे मुंह से निकलनेवाला ही था-'तेरी तो'मगर चुप रह गया। छोड़ो, बड़े लेखक के मुंह कौन लगे।

बुद्धिमान व्यक्ति जीवनभर अध्ययन करता है

-अनिल विद्यालंकार

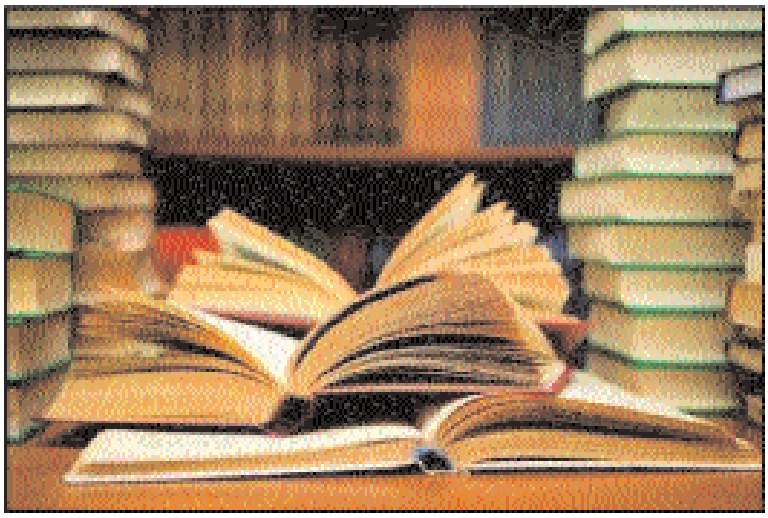

ऊपर दिया गया कथन प्राचीन ऋषियों की प्रसिद्ध उक्ति है,जो उनकी जीवन-दृष्टि का परिचायक है। मनुष्य और पशु में सबसे बड़ा अंतर उनके सीखने की क्षमता का है। कितना ही प्रयास क्यों न करें,पशुओं को हम एक सीमा से आगे नहीं सिखा सकते,पर मनुष्य के सीखने की क्षमता असीम है।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ही शिक्षार्थी को सीखने में सहायता देना है,पर आज हमारी शिक्षा बच्चों को सीखने के लिए उतना प्रोत्साहित नहीं करती,जितना रटने के लिए। परिणामस्वरूप हमारे विद्यार्थी एक के बाद एक उपाधियाँ प्राप्त कर लेते हैं,उनकी जानकारी बढ़ती जाती है,पर विचारशील मनुष्य के रूप में जीवन जीने की उनकी क्षमता में बहुत ही कम विकास होता है। सर्वथा अशिक्षित मनुष्य भी कुछ-न-कुछ सीखते ही हैं। शिक्षा की प्रक्रिया उन्हें नई-नई जानकारी देने में मदद करती है,पर हमारी शिक्षा सीखने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित नहीं करती,न उन्हें सीखने के लिए अवसर ही प्रदान करती है। कुछ उदाहरण लिए जा सकते हैं।

कलाएँ-अधिकतर विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर चित्रकला एक विषय के रूप में निर्धारित होती है,पर अन्य कलाओं के लिए वहाँ बहुत ही कम स्थान है। भारत में संगीत की बहुत प्राचीन और व्यापक परम्परा है। हमारी शिक्षा संस्थाओं में इसकी उपेक्षा हो रही है। टीवी ने संगीत को और बिगाड़ दिया है। बड़े-बड़े ईनामों के लालच में छोटे-छोटे बच्चों को संगीत प्रतियोगिता के नाम पर फूहड़ गीत गाने और उन पर नाचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है,तथा उनके माता-पिता समेत आम जनता पूरी पीढ़ी को संस्कारहीन होते हुए देखकर तालियाँ बजाती है। महानगरों को छोड़कर कहीं भी संगीत के स्वतंत्र रूप से सीखने की व्यवस्था नहीं है। हमारे गाँवों में लोक-कलाओं की लंबी और समृद्ध परम्परा रही है। उनमें से किसी को भी विद्यालयों में स्थान नहीं है। पहले हर लड़की ढोलक बजाना सीख लेती थी। आज घरों से ढोलक गायब होती जा रही है,और इसी के साथ जीवन से लय भी।

भाषाएँ-भाषा मनुष्य के आन्तरिक जीवन और बाह्य जीवन को जोड़ती है,और जीवन को समझने के लिए माध्यम का काम करती है।मातृभाषा तो बच्चे अपने-आप सीख लेते हैं,यद्यपि उसके साहित्यिक पक्ष का ज्ञान उन्हें अधिकतर विद्यालय में ही होता है। मातृभाषा के बाद अंग्रेज़ी का स्थान है जो हमारी शिक्षा-व्यवस्था में सबसे प्रमुख भाषा बनती जा रही है। अंग्रेज़ी का ज्ञान शिक्षित होने का पर्याय बनता जा रहा है। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हो रही है और उन्हें हीन भाव से देखा जा रहा है। हम यह भूल जाते हैं कि, अंग्रेज़ी जाननेवाला व्यक्ति भी मानसिक रूप से अविकसित मनुष्य हो सकता है। जब ऐसे लोगों के हाथ में देश का नेतृत्व आ जाता है तो राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में गिरावट अवश्यंभावी है। आज हमारा देश सभी क्षेत्रों में नकलचियों का देश बनकर रह गया है। पचास एक वर्ष पूर्व जे.कृष्णमूर्ति ने हताशा के स्वर में पूछा था, -इस देश की सृजनशीलता को क्या हो गया है? प्राचीनकाल में जब संसार के अधिकांश देशों का अस्तित्व भी नहीं था,न विकास का कोई प्रारूप विद्यमान था,हमारे पूर्वजों ने अपनी भाषा संस्कृत के माध्यम से मानव जीवन के गहनतम रहस्यों को खोज लिया था जो आज भी हमारे ही नहीं,सारी मनुष्य जाति के मार्गदर्शक बननेवाले हैं। जैसे कि श्री अरविन्द अपनी पुस्तक भारतीय संस्कृति के आधार में कहते हैं,-प्राचीन भारत में जीवन के प्रत्येक पक्ष पर गंभीर सृजनात्मक कार्य हुआ था,जो आज भी हमारे लिए आदर्श है। एक विदेशी भाषा के अनुपातहीन महत्त्व ने हमारी अपनी भाषाओं की उपेक्षा की हुई है और परिणामस्वरूप भारतीय मेधा का विकास रुक गया है।

अंग्रेज़ी पर अधिकतम ध्यान केन्द्रित होने के कारण हम संसार की अन्य भाषाओं की उपेक्षा कर रहे हैं। किसी भी देश की संस्कृति को उसकी भाषा के माध्यम से ही समझा जा सकता है। अंग्रेज़ी के अलावा अन्य विदेशी भाषाएँ न जानने के कारण हम अन्य देशों से गहरे संबंध नहीं बना पा रहे हैं।

आकांक्षा सक्सेना

हिन्दू धर्म में 16 संस्कार हैं,जिसमें पहला गर्भाधान संस्कार अंतिम सौलहवां अंत्येष्टि संस्कार है,तो फिर बताईए ये सत्रहवां संस्कार कहां से प्रकट हुआ..।

का हो सामाजिक बहिष्कार

दिल-ओ-दिमाग से बहिष्कृत हो मृत्युभोज नामक कुरीति,इस आंसुओं से भीगी दावत का बहिष्कार किया जाना चाहिए क्योंकि, दोस्तों एक तरफ तो हम इंसान चांद, मंगल और प्लूटो पर पहुंचकर अपनी असीम मानसिक क्षमता का परिचय दे रहें हैं,तो दूसरी तरफ़ ऐसा भोज..! हाल ही में चीन देश में एक समय मानव (जिसके हाथों से दिव्य प्रकाशिक किरणें निकल रहीं थी) ने सड़क पर जा रहे रिक्शा चालक की भयंकर सड़क दुर्घटना होने से पहले ही एक सेकण्ड से भी कम समय में रक्षा की। मतलब उस चालक को प्रकाश की गति से भी तीव्र गति से अचानक प्रकट होकर रिक्शे सहित सड़क के दूसरी तरफ रख दिया। यही नहीं, मशहूर हास्य अभिनेता चार्ली चैपलिन की पहली फिल्म के प्रमोशन के वीडियो को ध्यान से देखा गया तो, उस वीडियो में एक महिला फोन पर बात करते हुऐ दिख रही है,जबकि उस समय मोबाईल फोन का आविष्कार नहीं हुआ था तो सोचो यह विचित्र मानव कौन है। दोस्तों यह समय यात्री है। भविष्य के उन्नत मानव,जिन्होंने समय को भी जीत लिया है। जरा सोचिए,मानव जाति आज अपने उन्नत परग्रही पूर्वजों से मिलने के समीकरण तैयार कर रही है,अपने देश की महामशीन से वैज्ञानिक वह दिव्य सूक्ष्म कण ढूंढ रहे हैं जिससे पृथ्वी बनी। आज दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है,हम धोती-कुर्ता को त्याग जींस पैंट पर आ गए, पट्टी कलम-दवात से टेबलेट और लेपटॉप पर आ गए तो चिट्ठी-पत्री से मेल,फेसबुक और व्हॉट्स-एप पर आ गए। यहां तक ही नहीं,कल के गुस्से वाले मां-बाप आज फ्रेण्ड बन गए,देखो समय के साथ-साथ समाज में कितना कुछ बदल गया,पर दुःख इस बात का है कि, मरणोपरान्त होने वाला यह मृत्युभोज खिलाने की परम्परा क्यों नहीं बदली?हम तो बदले,पर हमारे साथ समाज के रुढ़ी विचार आखिर ! क्यों नहीं बदले। पूरे गांव को तेरहवीं खिलाकर खुद कर्ज में डूबकर भूखों मरने की नौबत आ जाती है,वह मंजूर है पर इस कुप्रथा को सब मिलकर बन्द नहीं करा सकते हैं,जबकि इस अंधविश्वासी निंदनीय कुप्रथा का समाज से पलायन होना बहुत आवश्यक है। आप ही बताइए, किस धार्मिक ग्रंथ में लिखा है कि, मृत्युभोज अनिवार्य है..। धरती पर भगवान नारायण के किस अवतार ने बोला कि,तेरहवीं अनिवार्य है? फिर कहां से, और क्यों शुरू की गई यह कुरीति। धर्म के कुछ ढोंगी ठेकेदारों ने निज हित में इस कुप्रथा को जन्म दिया, पर अब तो सभी साक्षर हैं, बुद्धिजीवी हैं तो क्यों नहीं उठती वो आवाज जिसमें सभी का हित है।आपको पता होगा कि,अपने हिन्दू धर्म में 16 संस्कार हैं,जिसमें पहला गर्भाधान संस्कार अंतिम सौलहवां अंत्येष्टि संस्कार है,तो फिर बताईए ये सत्रहवां संस्कार कहां से प्रकट हुआ..। आप और हम मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी में आस्था रखते हैं न, आपको पता ही होगा कि उनको जब अपने प्राणप्यारे पिता के स्वर्गवासी होने का पता चला तो वह जंगल में ही शांत बैठ गए और वचन की लाज रखते हुए अयोध्या नहीं लौटे ।उन्होंने एक ही वक्त कंदमूल फल- खाकर पूरे 12-13 दिन शोक मनाया। यही नहीं,पूरी अयोध्या में महीनों किसी घर कड़ाही नहीं चढ़ी,फिर मृत्युभोज का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।अब सोचिए, हम राम जी को तो मानते हैं, पर उनके चरित्र का कितना अनुसरण करते हैं बोलिए।हम उनके नाम पर राजनिति करते हैं कि,राम मंदिर बनेग्आरे ,दिल में तो राम मंदिर बनाओ तो समाज में कुछ उन्नत परिवर्तन हो सके।हमारे देश में इस मृत्युभोज नामक सामाजिक कैंसर ने न जाने कितने ही गरीब परिवारों को कर्ज में डुबोकर काली नींद सुला दिया है। समाज के इस तेरहवीं नामक वायरस ने आज देश की वो हालत की है कि, गरीब 'त्राहि मामन्' कर रहा है ।आपको पता ही होगा कि,मृत्युभोज में कम-से-कम 25-30 हजार रुपए का कर्ज आता है। अगर यही आंकड़ा लेकर चलें तो 33 लाख मृतकों के मृत्युभोज में लगभग 50 अरब 60 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष खर्च होते हैं। दिखने में छोटी यह धनराशि इतनी बड़ी है, जितना कुछ छोटे राज्यों का सालाना बजट होता है। बताओ,देश का गरीब कैसे अपनी प्रगति करे जब यह कुप्रथा उसका दामन नहीं छोड़े। दोस्तो, यह दकियानूसी विकृत मानसिकता और यह अतिरूढ़िवादी सोच हमेशा से ही हमारे देश की प्रगति और विकास में बाधक रहे हैं। तब तो राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद

सरस्वती,स्वामी विवेकानंद जी जैसे महान समाज सुधारकों ने समाज में बदलाव की एक लम्बी लड़ाई लड़ी और दृढ़ विश्वास से आखिर वो कामयाब भी हुए। आज वो लोग तो हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी प्रेरणा से हम स्वंय ही बदलकर एक नई शुरुआत कर सकते हैं। आपने देखा ही होगा कि, तेरहवीं पर रो-रोकर ही गेहूं छाना-फटका जाता है। रोते हुए ही खाना बनता है और नम आंखों से ही परोसा भी जाता है। क्या हम लोगों के दिल पाषाण हो गए ,जो हम-आप आंसूओं से भीगा भोजन कर आते हैं। जरा पशुओं को देखो कि,उनका साथी बिछुड़ जाए तो वो घास पत्ती तक नहीं छूते..और हम इंसान इतने निर्दयी कब से हो गए कि,भाई की मौत पर भाई ही मृत्युभोज में पकवान खा रहे हैं।

दोस्तों, क्या हम मानवजाति पशुओं से भी ज्यादा नीचे गिर गई है? भगवान श्री कृष्ण जी ने महाभारत के समय कहा है कि जब भोजन कराने वाला प्रसन्नचित्त हो ,तभी उस घर भोजन करो अन्यथा अपनी सोच दूषित और मति भ्रष्ट हो जाती है। हम हिन्दू न तो भगवान राम को मानते हैं,न ही भगवान श्री कृष्ण जी को..हम तो बस अपने फायदे को ही अपना भगवान मानने लगे हैं। एक सच्ची घटना है,मेरे घर के पास ही तीन भाई और पिता रहते थे।पिता ने अपना सब बड़े लड़के को दे दिया और बीच वाला बेटा मजदूरी करके पेट भरता था।बाद में शादी करके दिन काट रहा और सबसे छोटा वाला भाई बेरोजगार दिनभर घूमता, न दोनों भाई मदद करते, न ही पिता। बेचारा थोड़ा-बहुत कमा भी लेता तो, सब उसका पैसा छीन लेते कि तेरी कौन-सी घर- गृहस्थी है। अंतोगत्वा वह बीमार पड़ गया तो,उसकी किसी ने कोई देखभाल नहीं की।ऐसे में 25 साल का वह जवान भाई गर्मी के बुखार से मर गया। उसकी मौत पर सब दहाड़े मार-मारकर रो रहे थे। आश्चर्य तो तब हुआ,जब पूरे गांव के लिए उसकी भव्य 50 हजार रुपए की तेरहवीं की गई। ईमानदारी से आप ही बताईएगा कि,क्या पचास हजार रुपए से उसको कोई दुकान नहीं खुलवाई जा सकती थी,क्या उसका उचित ईलाज और अच्छा भोजन-कपड़े नहीं मिल सकते थे। बहुत दुःख होता है, समाज की इस झूठी शान और झूठे दिखावों को देखकर। इस मृत्युभोज से बोलो किसका भला हुआ, न ही मरने वाले का और न ही उस गरीब कर्जदार परिवार का।

हाँ,भला हुआ सिर्फ उनका जो इस कुप्रथा को बढ़ावा देकर अपनी जेब और पेट दोनों ही भर रहे हैं ,और गरीब को कर्ज के बोझ से आत्महत्या को विवश कर रहे हैं।आखिर,कब सुधरेगें हम ! आखिर यह मौन कब तोड़ेगे हम ? अब समाज अनीति और अन्यायरूपी फायदे लेना बन्द करे तथा आंसूओं से भीगी दावत यानि मृत्युभोज या तेहरवीं जैसी सभी कुप्रथाओं का इक सिरे से बहिष्कार हो। यह किसी को कोई पुण्य देने वाली रीति नहीं, बल्कि दैहिक दैविक और भौतिक कष्टों में उलझाने वाली एवं पतन के मार्ग पर ले जाने वाली खतरनाक बला है। इसके पहले अपने दिलो-ओ-दिमाग से पलायन कराना होगा।दोस्तों घर हमारा है,परिवार हमारा है,यह प्यारा देश हमारा है,तो इसे सुन्दर बनाने की जिम्मेदारी भी तो हम-आपकी ही है।यह पहल भी हम,आप और सम्पूर्ण युवा समाज को करनी होगी,तभी हम बदलावरूपी सूर्य के दर्शन कर पाएँगे।तभी हम आगे आने वाली पीढ़ियों के सुनहरे उन्नत भविष्य की कल्पना कर पाएँगे।

क्या आप जानते हैं हिन्दी से संबंधित अनूठी जानकारियाँ

यहाँ पर हिन्दी से सम्बन्धित सबसे पहले साहित्यकारों, पुस्तकों, स्थानों आदि के नाम दिये गये हैं।

❖हिन्दी में प्रथम डी. लिट् – डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल

❖हिन्दी में प्रथम एमए – नलिनी मोहन सान्याल (वे बांग्लाभाषी थे।)

❖भारत में पहली बार हिन्दी में एमए की पढ़ाई – कोलकाता विश्वविद्यालय में कुलपति सर आशुतोष मुखर्जी ने 1919 में शुरू करवाई थी।

❖विज्ञान में शोध प्रबंध हिन्दी में देने वाले प्रथम विद्यार्थी – डॉ. मुरली मनोहर जोशी

❖अन्तरराष्ट्रीय संबन्ध पर अपना शोध प्रबंध लिखने वाले प्रथम व्यक्ति – डॉ. वेद प्रताप वैदिक

❖हिन्दी में बी.टेक. की प्रोजेक्ट रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले प्रथम विद्यार्थी-श्याम रुद्र पाठक (सन् 1985)

❖डॉक्टर ऑफ मेडिसिन (एमडी) का शोध प्रबन्ध पहली बार हिन्दी में प्रस्तुत करने वाले – डॉ0 मुनीश्वर गुप्त (सन् 1987)

❖हिन्दी माध्यम से एल.एल.एम. उत्तीर्ण करने वाला देश का प्रथम विद्यार्थी – चन्द्रशेखर उपाध्याय

❖प्रबंधन क्षेत्र में हिन्दी माध्यम से प्रथम शोध-प्रबंध के लेखक – भानु प्रताप सिंह (पत्रकार) ; विषय था – उत्तर प्रदेश प्रशासन में मानव संसाधन की उन्नत प्रवृत्तियों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन- आगरा मंडल के संदर्भ में

❖हिन्दी का पहला इंजीनियर कवि – मदन वात्स्यायन

❖हिन्दी में निर्णय देने वाला पहला न्यायधीश – न्यायमूर्ति श्री प्रेम शंकर गुप्त

❖सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में हिन्दी के प्रथम वक्ता – नारायण प्रसाद सिंह (सारण-दरभंगा ; 1926)

❖लोकसभा में सबसे पहले हिन्दी में सम्बोधन- सीकर से रामराज्य परिषद के सांसद एन एल शर्मा पहले सदस्य थे जिन्होंने पहली लोकसभा की बैठक के प्रथम सत्र के दूसरे दिन 15 मई 1952 को हिन्दी में संबोधन किया था।

❖हिन्दी में संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देने वाला प्रथम राजनयिक – अटल बिहारी वाजपेयी

❖हिन्दी का प्रथम महाकवि – चन्दबरदाई

❖हिन्दी का प्रथम महाकाव्य – पृथ्वीराजरासो

❖हिन्दी का प्रथम ग्रंथ – पुमउ चरउ (स्वयंभू द्वारा रचित)

❖हिन्दी का पहला समाचार पत्र – उदन्त मार्तण्ड (पं जुगलकिशोर शुक्ल)

❖सबसे पहला हिन्दी आन्दोलन- हिन्दी भाषी प्रदेशों में सबसे पहले बिहार प्रदेश में सन् 1835 में हिंदी आंदोलन शुरू हुआ था। इस अनवरत प्रयास के फलस्वरूप सन् 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिंदी प्रतिष्ठित हुई।

प्यार के एहसास को धीमें धीमे जगाती फिल्म

ओक्टोबर

परिचय-इदरीस खत्री इंदौर के अभिनय जगत में 1993 से सतत रंगकर्म में सक्रिय हैं इसलिए किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं? इनका परिचय यही है कि,इन्होंने लगभग 130 नाटक और 1000 से ज्यादा शो में काम किया है।

इदरीस खत्री

कलाकार-वरुण धवन, बनिता संधू, गीतांजलि राव,

संगीत-शांतनु मोइत्रा

अवधि- 1 घण्टा 55 मिंट

कुछ फिल्मे प्रेम आधारित होती है और कुछ फिल्मे प्यार की होती है तो यह फिल्म प्यार की कहानी है,

लेकिन जब भी लेखक निर्देशक जटिलताओं के साथ प्यार की कहानी पेश करते है तो अत्यधिक संवेदनाओं (इमोशन्स) ,के चक्कर मे अवसाद(डिप्रेशन)परोस देते है

गुलजार साहब का एक गाना है

सिर्फ एहसास है इसे रूह से महसूस करो प्यार को छू के कोई नाम न दो यह पंक्तियां बरबस ही याद आ गई फिल्म देखते हुवे

सुजीत सरकार विकी डोनर, मद्रास कैफे, पीकू, पिंक के नाम जेहन में दौड़ने लगते है वही लेखिका जुही चतुर्वेदी विकी डोनर, पीकू, मद्रास कैफे लिख चुकी है

दोनो की जोड़ी भी शानदार रही है

तो इस बार भी उम्मीद एक विशेष फिल्म की थी जो कि पूरी तो होती है लेकिन धीमी गति से ओर जब भी धीमी गति की होती है उसके दर्शक सिमट जाते है एक वर्ग विशेष तक ही फिल्म सिमट जाती है

कहानी- एक लड़का डेन(वरुण)बहुत ही लापरवाह होने के साथ उसे यह भी नही , वह होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहा है और इन्टरशिप के दौरान वह एक पांच सितारा होटल पहुचता है लेकिन अनुशासन हीनता ओर लापरवाही के चलते उसे वहा से बार बार निकाल दिए जाने की वार्निंग मिलती है

वही उसकी साथी स्टूडेंट शिवली(बनिता संधू) डेन के बिल्कुल विपरीत है वह अनुशासित ओर कर्मठ है अपने काम को लेकर, विपरीत स्वभाव के दो लोग साथ होते है तो प्रेम पनपना स्वभाविक ही है दोनों के बीच प्रेम की बहुत महीन लाइन खिंच जाती है और एक दिन शिवली हादसे का शिकार हो जाती है और वह कोमा में चली जाती है फिर डेन की जिंदगी मे प्यार की जगह महसूस होती है और वह अपने प्यार को पाने के लिए क्या क्या त्याग, समर्पण, और कोशिशें करता है यह पक्ष भी लाजवाब है

*कभी कभी ज्यादा संवेदनाए(इमोशनल)होना अवसाद(डिप्रेशन)की तरफ ले जाते है बस रह रह कर यही महसूस होता रहा फिल्म के दूसरे भाग में साथ ही फिल्म गुजारिश की याद ताजा होती रही

लेकिन जिस खूबसूरती से सुजीत ने प्यारकी कहानी को दिखया है वह लाजवाब है

फिल्म को रफ्तार धीमी लगती है लेकिन तीर निशाने पर पहुच जाता है

बुरा पक्ष

फिल्म केवल कुछ नौजवानों को पसन्द आएगी क्योकि रफ्तार ओर पटकथा बहुत ही धीमा है फिल्म का बजट फिल्म निकाल लेगी ओर जैसी धीमी रफ्तार की फिल्म है वेसे ही धीमे धीमे जनता को खिंचेगी

"मेरी तरफ से फिल्म को 3 स्टार"

सुधा शर्मा राजिम

चमन उदास है, बहारें तो- बुलाओ कोई।
अधरों पर कलियों की ,
हँसी लाओ तो कोई ।
रूठा- रूठा है सूरज ,
विभा, खोई -खोई
फैला हुआ ये , तमस -घन हटाओ तो कोई।
चिर- प्यासा, समंदर- नदियां हैं ,सूखी -सूखी ,
बिखरी हुई ,लहरों को - लौटाओ तो कोई ।
दिशा -हीन हुआ ,कहीं- कहीं !भटक रहा मानव,
कभी सदपथ चलकर, अरे ! दिखाओ तो कोई ।
धधक रही ,विकारों की- आग हृदय में ,पल -पल,
सदभावों का ,दीपक भी
अब ,जलाओ कोई ।

पुस्तक पर प्रतिक्रिया/ समीक्षा

डा. भारती वर्मा बौड़ाई

पुस्तक–नारी से नारी तक
संपादक–डा0 प्रीति सुराना
संकलनकर्ता–शिखा जैन
प्रकाशक–अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन, इंदौर, मध्यप्रदेश
मूल्य–120/- रुपए

महिला दिवस पर आधी आबादी की गूँज को आवाज़ देने के प्रथम प्रयास के रूप में प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ सुकोमल, साहस की प्रतिमूर्ति नारी का अभिनंदन कर नारी को सौंपते हुए **सुमन आवाज़** द्वारा प्रस्तुत ये **नारी से नारी तक** पुस्तक का अनुपम उपहार स्तुत्य ही नहीं, वरेण्य और अनुकरणीय भी है।

सुमन आवाज़ नारी के सपनों को सच करने, सच करने के प्रयास में आने वाली बाधाओं को दूर कर, संघर्ष करने और साथ देने में सतत कार्यरत है। इसी दृष्टि से वे जीवन के हर पहलू..जिसमें नारी का अतुलनीय योगदान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में शामिल रहता है, उसमें उनके कार्यों को महत्व देने के लिए भी प्रयासशील है।

प्रस्तुत पुस्तक नारी से नारी तक भी इसी शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यदि यह कहा जाए कि यह तो अभी ट्रेलर है, आगे-आगे देखो और क्या-क्या रंग बिखरते हैं....तो गलत नहीं होगा।

प्रकृति ने सृजन का प्रथम अधिकार स्त्री को सौंपा है। नौ माह तक एक जीवन को अपनी कोख में रख संरक्षित करते हुए, उस जीवन की हर धड़कन को अपने भीतर अनुभव करते हुए जब वह प्रसव की कठिन वेदना के मध्य जीवन का सृजन कर मातृत्व को पाती और पूर्ण होती है तो उस सुख के आगे दुनिया के सारे सुख फीके हैं।अतुलनीय है यह सुख।

ठीक उसी तरह अपने आस-पास घट रही घटनाओं, अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए भी जब वह लेखनी, रंग और ब्रश अपने हाथ में लेती है तो उसकी हर रचना चाहे वह कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, आत्मकथा और रंगों से बनाया चित्र हो.... उसे अपनी संतान को जन्म देने जैसा ही सृजन का सुख प्रदान करती है। हर नारी अपने मनोभावों को सबके सम्मुख प्रकट नहीं कर पाती। कहीं संकोच तो कहीं उसका अंतर्मुखी स्वभाव आड़े आता है। ऐसे में वह अपनी लेखनी और रंगों से अपना संसार रचती है। लेखनी और डायरी उसकी अभिन्न सखी बन जाती है और जब भी भाव मन में आड़ते-घुमड़ते हैं तो उसकी डायरी के पृष्ठ भरते चले जाते हैं।

उसके इन्हीं मनोभावों को पुस्तक में सहेज कर महिला दिवस पर दिया यह अनमोल उपहार, जिसमें अट्ठावन रचनाकारों के सचित्र, विस्तृत परिचय के साथ एक-एक रचना भी संग्रहीत है, संग्रहणीय है। इस पुस्तक के द्वारा हर महिला रचनाकार के विषय में जानने का सु अवसर तो मिला ही है, संपर्क सूत्र व फोन नंबर के द्वारा आपसी संपर्क और वार्ता करने का मार्ग भी खुला है।

महिला दिवस पर नारी शक्ति के सृजन को इस संग्रह के द्वारा एक मंच प्रदान करने से अच्छा उपहार और कोई हो ही नहीं सकता था।इतने कम समय में रचनाएँ जुटा कर पुस्तक प्रकाशित करना पुस्तक की संपादक डा. प्रीति सुराना और संकलनकर्ता शिखा जैन के ही बस की बात है। इसके लिए इन दोनों,अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन और सुमन आवाज़.... बधाई और साधुवाद के पात्र हैं।

सादगी लिए पुस्तक का आवरण मनमोहक है। पुस्तक का मूल्य 120/-रुपए भी अधिक नहीं है, सबकी पहुँच के अंदर है। हर महिला रचनाकार को तो यह पुस्तक लेनी ही चाहिए, पुरुष रचनाकार भी पढ़ें और सराहें तथा हर पुस्तकालय तक यह पुस्तक पहुँचे.....इतना प्रयास तो होना ही चाहिए।

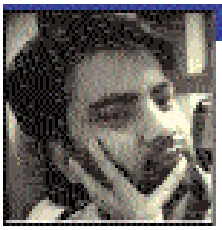

नीतीश मिश्र
भोपाल, म.प्र.

कविताएँ

(1)

भाजपा राम को जानती है
वह भी दशरथ सुत नंदन को
भाजपा राम को जानती है
जो अयोध्या में पैदा हुए थे
और दिल्ली तक कभी कभी पहुंचा देते
भाजपा उपवास को नहीं जानती
भाजपा आमरण अनशन को नहीं जानती
भाजपा मौन को भी नहीं जानती
भाजपा अगर किसी को जानती है तो
केवल मीडिया को
और मीडिया भी उसी राम को जानता है
जिनके नाम पर दंगा फसाद होता है
मीडिया भी देश के भूगोल को नहीं जानती
मीडिया भी भुखमरी नहीं समझती
मीडिया अगर किसी को जानती है तो केवल विज्ञापन
संपादक भी उसी राम को जानता है
जो हाथ मे तीर धनुष लेकर घूमते है
संपादक को भी दर्शन के बारे में कुछ नहीं मालूम
संपादक अगर कुछ जानता है तो केवल
मैनजेमेंट की चाकरी करना।।

(2)

बहुत पहले
किसी मेले में
एक प्रेमपत्र खो गया था
तभी से हर मेले में
वह पत्र खोज रहा हूँ
वह हाथ खोज रहा हूँ
वह आँख खोज रहा हूँ
वह होंठ खोज रहा हूँ
वह चेहरा खोज रहा हूँ
लेकिन आज तक किसी मेले में
कोई भी ऐसा साक्ष्य नहीं मिला
कि मैं दावा कर सकूँ को
मेरा पत्र किसी को मिला होगा ।।

पुस्तक समीक्षा

शिखर चंद जैन

पुस्तक - कॉफी कैफे
लेखिका - रश्मि तारिका
प्रकाशक - शिवना पेपरबैक्स
कीमत - रू. 275

बुक स्टॉल पर किताबें टटोलते ग्राहक या यूं कहें कि पाठक, को सबसे पहले जो चीजें आकर्षित करती है वो हैं, किसी भी किताब का कवर और शीर्षक। इस मामले में रश्मि तारिका की समीक्ष्य पुस्तक बाजी मार लेती है। रेलवे स्टेशन हो या बस स्टैण्ड या फिर सिटी मार्केट की कोई बुक शॉप, अगर कोई पाठक मनोरंजन के उद्देश्य से कहानियों की किताब ढूंढ रहा होगा तो 'कॉफी कैफे' को एक बार उठाकर जरूर देखेगा। अगर बजट की अड़चन नहीं होगी, तो जिस पाठक ने इसे उठा लिया, वो खरीद भी लेगा। कहानियों के शीर्षक में चुंबकीय आकर्षण है और सभी कहानियां आधुनिक परिवेश की हैं। 'एक मुहब्बत ऐसी भी', 'मर्जी का सुख', 'गार्लिक स्टिक्स', 'प्रस्ताव', 'कॉफी कैफे', 'वाह वोमेनिया', 'इमोशंस इन एंड आउट' आदि सभी कहानियां रोचक हैं। रोमांटिक और हल्के फुल्के माहौल वाली मनोरंजन कहानियां पढ़ने के शौकीन पाठक को यह किताब जरूर पसंद आएगी। अक्सर हिंदी के अधिक विद्वान लेखक पाठकों की कमी का रोना रोते हैं। कई बार इसकी वजह वे खुद होते हैं। उनकी भाषा शैली और शब्दावली इतनी कठिन होती है कि पाठक का सिर भन्ना जाए। लेकिन समीक्ष्य पुस्तक की भाषा शैली में बिल्कुल वही प्रवाह है, जो हमारी रूटीन बातचीत में होता है। भाषा शैली में कहीं कोई बनावट नहीं। आजकल पति- पत्नी या प्रेमी- प्रेमिका या ननद -भाभी या हमसब जैसे बातचीत करते हैं ठीक वही अंदाज। हर कहानी में मैसेज देने वाली पंक्तियां भी हैं- 'बुरा मत मानना.... आज सब रिश्ते पीछे छूट गए न? सब अपनी अपनी जिंदगी में मस्त और तुम कहां खड़ी हो आज?' (एक नई सुबह) 'एक मुहब्बत ऐसी भी' में पति पत्नी की स्वाभाविक नोंकझोंक सी है और एक दूसरे के प्रति सच्चा समर्पण भी। कहानियां रोमांटिक और हल्के फुल्के मूड वाली जरूर है लेकिन कोई कहानी छिछली और भौंडी नहीं। सब में कोई न कोई सार्थक संदेश छिपा है। इन कहानियों का लुत्फ उठाने के लिए आपको यह किताब जरूर पढ़नी चाहिए। कुछ उदाहरण देखिए 'वो निशा ही थी...'-- 'हम महिलाएं क्या बहू, पत्नी या मां बनने के बाद अपना दिमागी संतुलन खो देती हैं?' गुमनाम पत्र- कुकर में बनी भाप यदि सही समय पर न निकले तो कुकर ही फट जाता है। फैलफिशर- 'यूं भी औरत तो सदियों से अपने सौंदर्य की तारीफ की भूखी रही है।'

मामला मात्र भाषा का नहीं,

मातृभाषा का है

परिचय–12 फरवरी 1947 को मध्यप्रदेश में ही जन्मे राजकुमार कुम्भज सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित 'चौथा सप्तक' में शामिल महत्वपूर्ण कवियों में रहे हैं?

राजकुमार कुम्भज

जीवन में सामान्य सफलता के लिए सामान्यतः बौद्धिक क्षमता को ही सर्वोत्तम योग्यता स्वीकार किया जाता है और भावनात्मक-संतुलन के गुण की अनदेखी की जाती है, लेकिन आजकल के जटिलतम समाज में किसी भी क्षेत्र की सफलता के लिए अधिक सारगर्भित भूमिका भावनात्मक-संतुलन की ही अधिक है। भावनात्मक-संतुलन की यह उपलब्धि मातृभाषा में पढ़ाई करने से सहज ही उपलब्ध हो जाती है। भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण में भी यही कहा गया है कि दूसरी भाषाओं में शिक्षा से बुद्धि का अपेक्षित विकास नहीं हो पाता, इसलिए यह तथ्य स्वीकार करते हुए कि मातृभाषा मात्र भाषा नहीं है, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई को मातृभाषा से जोड़ा जाना चाहिए।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण की ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि मातृभाषा में पढ़ाई-लिखाई करने वाले बच्चों की ज्ञानग्राह्य क्षमता अन्य भाषा के मुकाबले 40 फीसदी अधिक होती है, जबकि मातृभाषा में पढ़ाई-लिखाई नहीं करने वाले बच्चों का भावनात्मक-संतुलन 50 फीसदी ही विकसित हो पाता है । यही वजह है कि हमारे समकालीन समाज में असंतुलित मानसिकता के साथ ही साथ लोगो में हिंसक प्रवृत्ति के खतरे भी बढ़ते जा रहे है ।

कहा जाता है कि भारत में 780 मातृभाषाएँ अस्तित्व में है, जबकि मात्र 35 मातृभाषाएँ ही ऐसी भाषाएं हैं जिनमें शिक्षा दी जा रही है। मातृभाषा में शिक्षा का अभाव ही सबसे बड़ा है कि भारतीय बच्चों की बौद्धिक क्षमता तो बड़ी है लेकिन समझदारी के विकास का स्तर न्यून ही बना हुआ है। लन्दन से प्रकाशित 'चाइल्ड डेवलपमेंट' नामक पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार बच्चों को मातृभाषा सहित एक से अधिक भाषा सिखाई जाना चाहिए ताकि वे समाज में मेलजोल बढ़ाने में सक्षम हो सकें । अध्ययन में यह भी कहा गया है कि बच्चों को बड़ी मात्रा में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर अर्थात आत्म-विमोह विकार होता है, जिसकी वजह से ये बच्चे अपनी सामाजिकता बढ़ाने में कमजोर हो जाते हैं। इस विकार के शिकार बच्चे किसी से भी आसानी से बात नहीं कर पाते हैं। उनकी इसी आन्तरिक दुविधा के कारण उनके जीवन में सुविधाएँ घटती रहती हैं और इच्छाएँ बदलती रहती हैं। ऐसे में पढ़ाई-लिखाई व मातृभाषा में दिया जाने वाला शिक्षण, अनुपम उपहार साबित हो सकता है।

देश दुनिया में मातृभाषाओं सहित भाषाओं की स्थिति अत्यंत ही चिंताजनक है। इस वक्त दुनिया में छः हजार भाषाएं बोली जाती है, जबकि एक खास भाषाई अनुसंधान के मुताबिक अगले चालीस बरस में चार हजार भाषाओं पर उनके हत्म होने का खतरा मंडरा रहा है। भारत में तो यह खतरा निरंतर बढ़ता ही जा रहा हैं । गत पचास बरस में भारत की तकरीबन बीस फीसदी भाषाएँ समाप्त हो चुकी हैं। वर्ष 1961 की जनगणना के बाद भारत में 1652 मातृभाषाओं का पता चला था, इसके बाद ऐसा कोई सर्वज्ञात सर्वमान्य सर्वेक्षण उपलब्ध ही नहीं हुआ है कि जिसमें इस बारे में कोई अधिकृत आंकड़ा रेखांकित किया जा सके।

सरकारी नियमावली के अनुसार किसी भी भाषा को अनुसूची में शामिल करने के क्षमता सिर्फ तब ही बन सकती है, जबकि उसके बोलने वालों की संख्या कम से कम दस हजार हो। उक्त नियमावली की शर्तों के मुताबिक भारतीय संविधान की आठवी अनुसूची में जो कुल बाईस भाषाएँ शामिल हैं, वे इस प्रकार सूचीबद्ध की जा सकती है। बंगाली, हिन्दी, मराठी, नेपाली, गुजराती, संस्कृत, तमिल, उर्दू, असमी, डोगरी, कन्नड़, बोडो, मणिपुरी, ओड़िया, मैथिली, संथाली, तेलगु, पंजाबी, सिन्धी, मलयालम, कोकणी और कश्मीरी, जबकि भोजपुरी के लिए आन्दोलन जारी है। सिर्फ भोजपुरी ही नहीं, राजस्थानी आदि सहित तकरीबन एक दर्जन भाषाएं बोलने वाले अपनी-अपनी बोली-भाषा के लिए संवैधानिक दर्जे की मांग कर रहे है। भारत में भाषा का मामला हमेशा ही संवेदनशील मुद्दा रहा है। तमिलनाडु में हिन्दी लागू करने का मामला द्रविड आन्दोलन का प्रमुख कारण रहा है। वर्ष 1952 में भाषा के आधार पर ही आंध्र को तमिलनाडु से अलग करने का आन्दोलन हुआ था । बॉम्बे प्रेसीडेन्सी का विभाजन भी गुजराती-मराठी के आधार पर ही किया गया था। फिर भाषा के साथ ही साथ रोजी रोटी का सवाल भी बड़ा सवाल बनता गया।

भाषा का, मानव-स्वभाव और मानव सभ्यता से गहरा सम्बन्ध है। भाषा के बगैर मानव अस्तित्व का कोई औचित्य ही नहीं है। भाषा ही आदमी को आदमी बनाती है और आदमी होने के तमीज सिखाती है। भाषा ही आदमी की पहचान है। भाषा नहीं तो आदमी नहीं, भाषा नहीं तो जीवन नहीं, भाषा नहीं, तो सभ्यता, संस्कृति, भविष्य कुछ भी नहीं। भाषा ही आदमी को सामाजिक बनाती।भाषा सामाजिकता का अनिवार्य उपकरण है, जिस तरह से मानव समूहों की भाषाएँ भी भिन्न-भिन्न है ठीक उसी तरह से जीवन शैलियां और परम्पराएं भी भिन्न-भिन्न होती है। इसलिए न जाने कब से यह लोकोक्ति चली आ रहे है कि 'कोस-कोस पर पानी बदले, नौ कोस पर बानी।'

भाषा का परिवर्तनशील होना प्राकृतिक और बेशक स्वाभाविक है, भारत एक बहुभाषी देश है और वह बहुभाषी होते हुए भी सहज तथा सहिष्णु है, किन्तु मातृभाषा को लेकर कुछ अधिक ही संवेदनशील है, जो कि उसे होना भी चाहिये, किन्तु वैज्ञानिक वैचारिकता के अभाव में वह समस्त संवेदनशीलता मात्र भाषा के लिए किया गया तमाशा बनते देर नहीं लगती है और उसका गंभीर नुकसान पीढ़ियों तक उठाना पड़ता है । अंग्रेज हमें यह समझाने में हद दर्जे तक सफल कहे जा सकते हैं कि भारत में विभिन्न भाषाओं का होना सभ्यता के विकास में एक बहुत बड़ी बाधा है। वे हमें यह समझाने में भी हद दर्जे तक सफल रहे कि हमारी विविध मातृभाषाएँ मात्र ग्रामीणता भरी सोच वाली भाषाएँ हैं, जिनका प्रयोग हमें गंवार साबित करता हैं, अंग्रेजो की इसी सोच ने हमारी सोच बदल दी और हम अपनी ही भाषाओं से हाथ धो बैठे ।

हमने अपनी सोच में अंग्रेजो की सोच को स्वीकार कर लेने में अंग्रेजों से भी कहीं अधिक उदारता का परिचय दिया और अपना तथा अपने बच्चों का भविष्य अंधकारपूर्ण कर लिया । हमने खुली आँखों से स्वीकार कर लिया कि अंग्रेजों द्वारा परोसी गई अंग्रेजी हमें श्रेष्ठता का प्रमाण देती है और हमारी मातृभाषाएँ हमें तीसरे दर्जे में धकेल देने के लिए जिम्मेदार हैं। हमने अपने बच्चों को खुद की ही तरह अंग्रेजी का अनचाहा गुलाम बना दिया। मातृभाषाओं में पारंगत प्रतिभाएं तीन महीने में अंग्रेजी सीख लेने के लिए व्याकुल हो गई। हिन्दी के प्रोफेसर अपने होनहार बच्चों को अंग्रेजी का रट्टा लगवाने लगे। हालात ये हुए कि भाषाई खोखलेपन ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। विश्वभाषा की जुमलेबाजी ने हमसे हमारी मातृभाषाएँ तो छीनी ही है, वरन हमें संवेदनहीन भी बना दिया । हम भावनात्मक संतुलन की सामाजिकता से वंचित होते चले गये। हम न हिन्दी के रहे, न अंग्रेजी के और अपनी मातृभाषा भूलते गये सो मुफ्त में।

केंद्र सरकार के आर्थिक सलाहकार अरविन्द सुब्रह्मण्यम की उपस्थिति में जारी की गई 'असर' (एक गैर सरकारी संगठन) भी ताजा वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि 14 से 18 वर्ष की उम्र के आठवीं पास पच्चीस फीसदी बच्चे अपनी मातृभाषा में लिखी किताब नहीं पढ़ पाते है । इसलिए सामाजिक सन्दर्भ में संवेदनशीलता के साथ बेहतर समझा जा सकता कि मामला मात्रभाषा का नहीं मातृभाषा का है। भारतीय होने की पहली शर्त क्या मातृभाषा नहीं होना चाहिए? वैचारिक मौलिकता को मातृभाषा से अलग कैसे किया जा सकता है?

स्कूल शिक्षा विभाग का नाम हिन्दी में करने हेतु मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन

इंदौर। मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग का नाम स्कूल शिक्षा विभाग है, जबकि मध्यप्रदेश की राज कार्यों की भाषा हिन्दी होने से उपलब्ध हिन्दी शब्द 'शालेय' या 'विद्यालय' उपयोग करना चाहिए क्योंकि 'स्कूल' अंग्रेजी शब्द है। इसी माँग को लेकर देश में हिन्दी भाषा के विकास और विस्तार हेतु कार्यरत संस्थान 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान' द्वारा शनिवार को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया।

चूँकि वर्ष 2015 में दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रदेश में हिन्दी के प्रचार और अनिवार्यता हेतु मुख्यमंत्री द्वारा चिंता जाहिर की गई थी, तथा सूचना पटल व व्यावसायिक संस्थानों के पटल हिन्दी में करवाने की, शासकीय कार्यकलापों और पत्र व्यवहार को हिन्दी भाषा में होने आदि संबंधित कुल 29 महत्वपूर्ण घोषणा की थी। उन्हीं घोषणाओं के आलोक में हिन्दी भाषा के प्रति शासन व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पुनः ध्यान देने की अपेक्षा है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग का नाम 'स्कूल शिक्षा विभाग' है, जबकि 'स्कूल' अंग्रेजी शब्द होने से तथा इस हेतु उपलब्ध हिन्दी शब्द 'शालेय' या 'विद्यालय' उपयुक्त शब्द है। इसी सन्दर्भ में मध्यप्रदेश के हरदा जिले के टिमरनी ग्राम निवासी सामाजिक कार्यकर्ता विवेक शर्मा द्वारा भी उचित मंच पर वर्ष 2016 से लगातार पत्राचार किया जा रहा है, किंतु केवल आश्वासन के अतिरिक्त कोई ठोस परिणाम अभीतक नहीं आएँ है।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के अध्यक्ष डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' ने इसी माँग को उपयुक्त ठहराते हुए कहा कि 'मध्यप्रदेश सरकार द्वारा हिन्दी के प्रति प्रेम सम्मेलनों में ही दर्शाया जाता है, जबकि धरातल पर कार्य करने की आवश्यकता है। पूर्व में भी संस्थान द्वारा शिक्षकों के गणवेश पर राष्ट्र निर्माता की पट्टिका लगाने हेतु अनुरोध किया था, अभी भी हमारा सरकार से अनुरोध है कम से कम मध्यप्रदेश में तो हिन्दी की अवहेलना नहीं की जाएँ।'

संस्थान की महासचिव डॉ. प्रीति समकित सुराना ने कहा कि 'मुख्यमंत्री जी के राज में हिन्दी अपना स्वाभिमान लगातार खोती जा रही है, न हिन्दी में नाम होते हैं , न ही कार्यव्यवहार।' यदि आप हिन्दी का सम्मान नहीं कर सकते तो अपमान करने का अधिकार भी नहीं हैं।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा दिए ज्ञापन में संस्थान के पदाधिकारी समकित सुराना, शिखा जैन, मृदुल जोशी, कैलाश बिहारी सिंघल, संजय जैन (कोचर), बृजेश शर्मा 'विफल', रिंकी पथरिया, कीर्ति वर्मा, अदिति रूसीया आदि सम्मिलित रहे, उक्त जानकारी संस्थान के संवाद सेतु रोहित त्रिवेदी ने दी।

हिन्दी को जनभाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध

हिन्दी ग्राम

इंदौर । विश्व की कोई भी भाषा जैसे अंग्रेजी, जापानी, चाईनीज, फ्रैन्च आदि जब तक बाजार से नहीं जुड़ी तब तक उसका विकास सिमित ही रहा है । उसी तरह संस्कृत बाजार से दुर रही तो उसे विलुप्तता की कगार पर ला पहुँचाया । यही हाल हिन्दी का भी रहा । परन्तु हिन्दी को बाजार मूलक बनाने और उसमें रोजगार के अवसर लाने के उद्देश्य से हिन्दी ग्राम की शुरुआत हुई है।

इंदौर, मध्यप्रदेश निवासी डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' ने हिन्दी में उपलब्ध रोजगार के मंचों को एक स्थान पर लाकर लोगो तक पहुँचाने का जिम्मा लेते हुए नए अवसर पैदा करने के उद्देश्य से 'हिन्दीग्राम.कॉम' की नींव डाली ।

डॉ. जैन का कहना है कि 'जब तक हिन्दी को बाजार नहीं अपनाता लोगों का आकर्षण हिन्दी के प्रति कम रहेगा, जबकि भारत विश्व का दुसरे बड़े बाजार में शामिल हैं ।' डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' अपने हिन्दी प्रेम के लिए मशहुर भी हैं, वर्तमान में मातृभाषा.कॉम के संस्थापक होने के साथ-साथ मातृभाषा उन्नयन संस्थान के अध्यक्ष भी हैं ।

इनके द्वारा देशभर में हिन्दी के प्रचार के लिए हस्ताक्षर बदलो अभियान भी चलाया जा रहा हैं, जिसमें लोगों को हिन्दी में हस्ताक्षर करने की प्रेरणा देकर शपथ दिलवाई जाती हैं ।

हिन्दी ग्राम की सह संस्थापिका डॉ प्रीति सुराना का कहना है कि %हमने मातृभाषा.कॉम में नवोदित व स्थापित रचनाकारों को मंच देकर उनका लेखन तो शुरु करवा दिया परन्तु जब तक वो लेखन आय का जरिया नहीं बन जाता तब तक लोगों में हिन्दी के प्रति जवाबदारी वाला प्रेम नहीं उमड़ रहा था, इसलिए मैंनें हिन्दी ग्राम शुरु किया है, जिसकी परिकल्पना में ही हिन्दी को बाजार की भाषा बनाना है, साथ ही देश या विदेश में हिन्दी जानने वाले के उपलब्ध अवसरों को खोज कर यहाँ उपलब्ध करवाना हैं । जनवरी के पहले सप्ताह तक विश्वस्तरीय ज जानकारीयाँ भी पटल पर हिन्दी में साझा होगी । हम हिन्दी को भारत में निर्मित उत्पादों की निर्माता कम्पनीयों के साथ मिलकर उत्पादों के लेबल तक लाएंगे, हिन्दी से साथ हिन्दुस्तान का परचम विश्व में फैलाएंगे ।'

हिन्दी ग्राम की इकाईयों में 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान(पंजी)', मातृभाषा.कॉम और अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, साहित्यकार कोश भी जुड़े हुए है । संस्था द्वारा हस्ताक्षर बदलो अभियान का भी संचालन किया जा रहा है । फिलहाल हिन्दी के प्रति देशभर में चिन्ताएं बढ़ रही है, इसे देखकर लगता है कि हिन्दी पुनः भारत को विश्व गौरव बना सकती हैं।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान तत्पर हैं हिन्दी विकास हेतु

मातृभाषा उन्नयन संस्थान का एकमात्र उद्देश्य यही है कि, हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाया जाए। इसके लिए हमारे द्वारा पूरे समर्पण के साथ प्रयास किए जा रहे हैं। भारतभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाया जा रहा हैं जिसमें वर्ष 2020 तक 1 करोड़ भारतीयों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देते हुए शपथ दिलवाई जाएगी । इसी के सहित भारत सहित विदेशों के भी हिंदी के हर नवोदित रचनाकार को लेखन का मंच दिया जा रहा है,ताकि विश्व पटल पर हिंदी चमके।

वर्तमान में मातृभाषा उन्नयन संस्थान के माध्यम से 1 लाख लोगों ने अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने का प्रण लिया है । इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.अर्पण जैन 'अविचल' है व महासचिव डॉ.प्रीति सुराना, उपाध्यक्ष संजय जैन (कोचर) कोषाध्यक्ष समकित सुराना, सचिव कैलाश बिहारी सिंघल, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बृजेश शर्मा, कीर्ति वर्मा, अदिति रूसीया व पिंकी परुथी, मृदुल जोशी है । उक्त जानकारी संस्थान के संवाद सेतु रोहित त्रिवेदी ने दी ।

क्या आप को लिखने का शौक है ?

क्या आप अपनी कोई रचना छपवाना चाहते है और कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है । तो लीजिये ! हम आपके इस सपने को साकार करने में आपके सामने उपस्थित हैं ....

तुरंत हमें अपनी रचना के बारे में निम्नलिखित जानकारी भेजें। हमारा ईमेल है antrashabdshakti@gmail.com

आपकी रचना हस्तलिखित है या टाइप्ड ?

पृष्ठ संख्या, छपाई एक रंगी या चार रंगी, क्या कोई तस्वीर आदि तो नहीं है ?, आपकी पाण्डुलिपि में किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है ?, कितनी प्रतियों की आपको आवश्यकता है ?, पुस्तक सजिल्द चाहिये या पेपरबैक ?

आपसे प्राप्त जानकारी के आधार पर हम प्रकाशन लागत खर्च आपको बताएँगे व आपकी स्वीकृति व पूर्ण लागत खर्च मिलने पर पुस्तक प्रकाशित की जा सकेगी।पुस्तक प्रकाशित होने के बाद हम अपनी आवश्यकतानुसार कुछ प्रतियां बिक्री हेतु आपसे ले लेंगे व उनका भुगतान आपको करेंगे। बिक्री हेतु कितनी प्रतियां हम लेंगे इसका किसी भी प्रकार का आश्वासन दे पाना संभव नहीं होगा लेकिन हमारी पूरी कोशिश रहेगी कि पुस्तक की बिक्री में मदद करें।

बस अब जल्द से उपयुक्त जानकारी भेजें।

घरेलु उपाय

1. रोज खाने के बाद छाछ पीने से कोई रोग नहीं होता है और चेहरे पर लालिमा आती है।

2. छाछ में हींग, सेंधा नमक व जीरा डालकर पीने से हरतरह के रोग दूर हो जाते है।

3. नीम के सात पत्ते खाली पेट चबाने से डायबिटीज दूर हो जाती है।

4. 20 ग्राम गाजर के रस में 40 ग्राम आंवला रस मिलाकर पीने से ब्लड प्रेशर और दिल के रोगों में आराम मिलता है।

5. बेसन में थोड़ा सा नींबू का रस, शहद और पानी मिलाकर लेप बनाकर लगाने से चेहरा सुंदर और आकर्षक लगता है।

6. मक्खन में थोड़ा सा केसर मिलाकर रोजाना लगाने से काले होंठ भी गुलाबी होने लगते हैं।

7. मुंह की बदबू से परेशान हों तो दालचीनी का टुकड़ा मुंह में रखें। मुंह की बदबू तुरंत दूर हो जाती है।

8. लहसुन के तेल में थोड़ी हींग और अजवाइन डालकर पकाकर लगाने से जोड़ों का दर्द दूर हो जाता है।

9. लाल टमाटर और खीरा के साथ करेले का जूस लेने से मधुमेह दूर रहता है

10. अजवाइन को पीसकर उसका गाढ़ा लेप लगाने से सभी तरह के चमड़ी के रोग दूर हो जाते हैं।

11. ऐलोवेरा और आंवला का जूस मिलाकर पीने से खून साफ होता है और पेट की सभी बीमारियां दूर होती हैं।

12. बीस ग्राम आंवला और एक ग्राम हल्दी मिलाकर लेने से सर्दी और कफ की तकलीफ में तुरंत आराम होता है

13. शहद आंवले का जूस और मिश्री सभी दस ड्ड दस ग्राम मात्रा में लेकर बीस ग्राम घी के साथ मिलाकर लेने से यौवन हमेशा बना रहता है।

14. अजवाइन को पीसकर और उसमें नींबू का रस मिलाकर लगाने से फोड़े-फुंसी दूर हो जाते हैं।

15. बहती नाक से परेशान हों तो युकेलिप्टस का तेल रूमाल में डालकर सूंघे। आराम मिलेगा।

16. बीस मिलीग्राम आंवले के रस में पांच ग्राम शहद मिलाकर चाटने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।

17. रोज सुबह खाली पेट दस तुलसी के पत्तों का सेवन करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

18. यदि आप कफ से पीड़ित हों और खांसी बहुत परेशान कर रही हो तो अजवाइन की भाप लें। कफ बाहर हो जाएगा।

19. अदरक का रस और शहद समान मात्रा में मिलाकर लेनेसे सर्दी दूर हो जाती है

20. थोड़ा सा गुड़ लेने से कई तरह के रोग दूर होते है, लेकिन इसे ज्यादा नहीं खाना चाहिए चाहे ये कितना ही अच्छा लगता हो।

21. चौलाई और पालक की सब्जी भरपूर मात्रामें खाने से जवानी हमेशा बनी रहती है।

सुख-समृद्धि पाने के लिए कुछ खास उपाय

सुख-समृद्धि पाने के लिए ज्योतिष और वास्तु के नियमों का पालन करने से लाभ मिल सकता है। वास्तु में धन संबंधी परेशानियों को दूर करने के लिए कुछ खास उपाय--

1. भगवान कुबेर और सूर्य देव की कृपा पाने के लिए सोते समय अपना सिर ऐसे रखें कि उठते समय आपके पैर पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर न हो।
2. नियमित रूप से उगते हुए सूर्य को तांबे के लोटे से जल चढ़ाएं। जल चढ़ाते समय सूर्य का मंत्र ऊँ आदित्याय नमः मंत्र का जप करें।
3. हर दिन अपने इष्ट देव की पूजा करें। अगर समय कम हो तो धूप-दीप जलाकर थोड़ी देर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके ध्यान करें।
4. पूजन के समय तांबे के बर्तन में जल भरकर रखें और उसे पूजा के बाद घर के हर भाग में छिड़क दें। इससे पॉजिटिव एनर्जीबनी रहती है।

5. देवी देवताओं पर चढ़ाए गए फूल और हार सूख जाने पर घर में नहीं रहने दें, इसे जल में प्रवाहित कर देना चाहिए।
6. बीमारियों और परेशांनियों से बचने के लिए भोजन हमेशा उत्तर की ओर मुंह करके करना चाहिए।
7. भोजन हमेशा किचन में ही करना चाहिए, इससे राहु का अशुभ प्रभाव कम होता है। बेडरूम और बिस्तर पर भोजन करने से नेगेटिव प्रभाव पड़ता है।
8. हर दिन भोजन बनाते समय पहली रोटी गाय के लिए और अंतिम रोटी कुत्ते के लिए निकालकर रख दें। इससे ग्रहों के अशुभ प्रभाव खत्म हो जाते हैं।
9. नियमित तुलसी के पौधे को जल दें और शाम के समय दीपक जलाएं। इससे घर पर हमेशा लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।
10. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय नहीं सोना चाहिए। ऐसा करना कई तरह के दुखों और परेशानियों का कारण बनता है।

भारत में ऐसे कई गांव हैं जिनके बारे में अजीबोगरीब कहानियां

भारत में कई गांव है जिनके बारे में अजब गजब कहानियां है और लोग इन गांवों को इन्हीं अजीबोगरीब रहस्यों से जाना जाता है।

हिमाचल प्रदेश शहर खिताना अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण जाना जाता है उतना ही यहां की परंपराओं के कारण भी प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में इस दूरदराज इलाके में मलाणा गांव है जिसके बारे में अजीबोगरीब कहानी है। देश भर में एक यही गांव है जहां अकबर की पूजा होती है। यहां कोई कानून नहीं माना जाता है बल्कि गांव ने ही अपने कानून बना रखे हैं। गांव की ही एक संसद है जो सारे फैसले लेती है। इस गांव में किसी बाहरी आदमी के छूने की मनाही है। मतलब, कोई दूसरे शहर या गांव का शख्स यदि यहां के किसी बाशंदे को छूता है तो उस पर एक हजार का जुर्माना ठोक दिया जाता है और ये जुर्माना उस बाहरी शख्स से लिया जाता है जो छूता है।

उत्तरप्रदेश में एक गांव की पूरी दुनिया में चर्चाएं है। यह गांव अपनी एक खासियत की वजह से पूरे देश में पहचाना जाता है। इस गांव का नाम है सलारपुर खालसा जो अमरोहा जनपद के जोया विकास खंड क्षेत्र का एक छोटा सा गांव है। इस गांव की जनसंख्या 3500 है। इस गांव के टमाटर सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। बताया जाता है कि इस गांव में टमाटर की खेती बड़े पैमाने पर होती है। देश का शायद ही कोई कोना होगा, जहां पर सलारपुर खालसा की जमीन पर पैदा हुआ टमाटर न जाता हो।

राजस्थान के जैसलमेर में भी एक गांव भुतहा है जिसका नाम कुलधरा गांव है। वैसे तो ये टूरिस्ट स्पॉट है लेकिन भूतों के भय से 170 साल से वीरान पड़ा है। रात को यहां कोई नहीं आता है। कहते हैं यहां पालीवाल ब्राह्मणों की आवाजें सुनाई देती हैं।

पंजाब के जालंधर शहर ठण्डल नाम से एक गांव है। इस गांव की सबसे खास बात यह है कि गांव के लोगों की पहचान पानी की टंकियों से जाना जाता है। यहां के मकानों की छतों पर आम वाटर टैंक नहीं है, बल्कि यहां पर शिप, हवाई जहाज, घोड़ा, गुलाब, कार, बस आदि अनेकों आकार की टंकिया है। इस गांव के अधिकतर लोग पैसा कमाने लिए विदेशों में रहते है। गांव में खास तौर पर एनआरआईज की कोठियां में छत पर इस तरह की टंकिया रखी है। अब कोठी पर रखी जाने वाली टंकियों से उसकी पहचानी जा रही हैं।

केरल के मलप्पुरम जिले में कोडिन्ही नाम से एक गांव है। जहां जुड़वा जोड़े बड़ी तादाद में है। इसे ट्विंस विलेज के नाम से जाना जाता है। विश्वस्तर पर एक हजार बच्चों में चार जुड़वां होते हैं लेकिन यहां ये प्रतिशत काफी ज्यादा है। यहां एक हजार बच्चों में 45 बच्चे जुड़वां होते हैं।

कर्नाटक के शिमोगा शहर के दस किलोमीटर दूर एक गांव है जिसका नाम है मुत्तुरू गांव। इसगांव के लोग केवल संस्कृत में ही बात करते हैं। बच्चों की सारी शिक्षा दीक्षा संस्कृत में ही की जाती है

साईं बाबा के दरबार से तो सब परिचित हैं। इनके पास ही है शनि शिंगणापुर, जो महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में पड़ता है। यहां शनि का प्रसिद्ध मंदिर हैं। इस गांव में कभी चोरी नहीं होती है। इसलिए गांव के किसी घर में दरवाजे नहीं होते। कहा जाता है कि शनि देव गांव की रक्षा करते हैं।

दुनिया के अजब-गजब कानून

- मैसाच्यूट्स ऐसी जगह से जहां सात में और नहाए बिस्तर पर जाना गैरकानूनी है। लेकिन उससे अलग खास बात ये है कि वहां रविवार के दिन नहाना भी गैरकानूनी है।
- ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया शहर में आप अपने घर का बल्ब खुद नहीं बदल सकते है इसके लिए आपको किसी लाइसेंस शुदा इलेक्ट्रिशियन को बुलाना होगा।
- सैमोओ में खुद के जन्मदिन का तारीख भूलना जुर्म है।
- नेवाडा के यूरेका में गुच्छे वाले मर्दों का महिलाओं को किस करना गैरकानूनी है।
- मिनेसोटा में कपड़े धोने वक्त एक ही वाशिंग लाइन पर पुरुष और महिलाओं के अंतःवस्त्र रखना गैरकानूनी है।
- ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया में रविवार को दिन के वक्त सुर्ख पिंक पैंट्स पहनने पर पाबंदी है।
- स्विटजरलैंड में रात 10 बजे के बाद पुरुषों द्वारा खड़े होकर पेशाब करने को गैरकानूनी कहा गया है।
- ओहियो के ऑक्सफोर्ड में किसी मर्द की तस्वीर के सामने औरतों का कपड़े पहनना गैरकानूनी है।
- लॉस एंजिल्स में एक ही टब में दो बच्चों को स्नान कराना गैरकानूनी है।
- सन फ्रांसिस्को में कार वॉशिंग के दौरान कार को अंडरवेयर से साफ करना गैरकानूनी है।
- ऑस्ट्रेलिया में उस जानवर का नाम लेना गैरकानूनी कृत्य है, जब आप उसे खाना चाहते हैं।
- न्यूयॉर्क में छत से कूदने पर मौत की सजा का प्रावधान है।
- आर्कन्सास में व्हाइट वेडिंग गाउन में दूसरी बार महिलाओं के शादी करने पर मनाही है।

10 भारतीय परंपराएं जो अनूठी होने के साथ उपयोगी भी हैं

भारत अपने आप में एक अनूठा देश है जहां हर चीज को धर्म और समाज के साथ जोड़ दिया गया है। हालांकि ऊपर से देखने पर इनका कोई विशेष महत्व नहीं दिखाई पड़ता परन्तु सूक्ष्म रूप से ये हमें मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक रूप से प्रभावित करते हैं। इसी कारण से हमारे पूर्वजों ने कुछ ऐसे धार्मिक नियम बनाएं जो सामाजिक रूप से समाज में उपयोगी तो थे ही, साथ में हमारे शरीर पर भी उनका अच्छा असर होता है। आइए जानते हैं ऐसी ही 10 परम्पराओं के बारे में...

पुरुषों के सिर पर चोटी क्यों

यदि आप यह मानते हैं कि सिर्फ भारतीय पुरुष ही चोटी रखते हैं तो सबसे पहले यह जान लें कि अन्य एशियाई देशों यथा चीन, कोरिया तथा जापान में भी पुरुषों के सिर पर चोटी रखने की परंपरा है। इसके पीछे भी एक वैज्ञानिक कारण बताया जाता है। सुश्रुत संहिता के अनुसार सिर हमारे सिर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां सहस्त्रार चक्र में शरीर की सभी नसें आकर मिलती है जिसे ब्रह्मरंध्र भी माना गया है। इसी ब्रह्मरंध्र को जागृत करने के लिए पुरुषों में शिखा बांधने की परंपरा शुरू हुई। शिखा रखने से मस्तिष्क का यह हिस्सा सक्रिय हो जाता है और हमारी शक्तियों को बढ़ा देता है।

हमें मंदिर जाकर भगवान की परिक्रमा क्यों करनी चाहिए

भारतीय मंदिरों को वास्तु के विशेष नियमों का पालन करते हुए बनाया जाता है। इसमें मंदिर के गर्भगृह (अथवा मूलस्थान) को इस प्रकार से बनाया जाता है कि वहां पर पृथ्वी की अधिकतम चुंबकीय ऊर्जा उत्पन्न हो सके। गर्भगृह में ही मूर्ति स्थापित की जाती है। साथ ही ईश्वर प्रतिमा के चरणों में तांबे से बने यंत्र, घंटियां, कलश आदि वस्तुएं स्थापित की जाती हैं। तांबा एनर्जी का सुचालक होने के कारण पृथ्वी की सकारात्मक ऊर्जा को प्रतिमा की तरफ आकर्षित करता है। इससे प्रतिमा के चारों तरफ आभामंडल बन जाता है। जब हम प्रतिमा के चारों तरफ परिक्रमा करते हैं तो यह शक्ति हमारे शरीर के अंदर भी प्रवेश करती है। हालांकि यह प्रक्रिया बहुत ही धीमे और अदृश्य रूप में होती है परन्तु लंबे समय तक किसी मंदिर में जाकर परिक्रमा करने पर इसका लाभ स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है।

भारतीय व्रत क्यों करते हैं

आयुर्वेद में बताया गया है कि हमारा शरीर प्रकृति द्वारा बनाई गई स्वसंचालित मशीन है जो 24 घंटे, सातों दिन मृत्यु तक लगातार बिना रुके काम करती रहती है। हमारा पाचन संस्थान भी इसी का एक हिस्सा है। लगातार भोजन करने और उसे पचाने से हमारे पाचन संस्थान पर दबाव पड़ता है जिससे उसमें टॉक्सिक पदार्थ पैदा हो जाते हैं। सप्ताह में एक दिन व्रत करने पर हमारा पेट स्वयं ही इन पदार्थों को बाहर निकाल देता है जिससे शरीर स्वस्थ रहता है। वैज्ञानिकों के अनुसार नियमित रूप से व्रत करने के कई फायदे है, शोध के अनुसार व्रत करने से कैंसर, कार्डियोवस्कुलर डिजीजेज, डायबिटीज, पाचन संबंधी बीमारियां दूर रहती है।

सुबह के समय सूर्य नमस्कार तथा सूर्य को अर्घ्य चढ़ाना

सूर्य नमस्कार करने के लिए कुछ नियम बताए गए हैं, यथा इसे सुबह ब्रह्म मुहूर्त में ही करना चाहिए। इसके पीछे भी कई वैज्ञानिक कारण हैं। सबसे पहला सुबह का समय ब्रह्ममुहूर्त माना जाता है इस समय मस्तिष्क की सक्रियता सर्वाधिक होती है, अतः इस समय किया गया कार्य अधिक एकाग्रता तथा मनोयोग से होता है जिससे उसमें सफलता की संभावना बढ़ जाती है। सुबह सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते समय गिरते हुए जल से सूर्य के दर्शन करना हमारी आंखों के लिए अच्छा रहता है। इससे आंखों की रोशनी बढ़ती है। इसके साथ-साथ सुबह के समय सूर्य नमस्कार करने से पूरे शरीर का योगाभ्यास हो जाता है तथा शरीर को दिन भर के लिए आवश्यक ऊर्जा शक्ति मिल जाती है।

हम चरण स्पर्श क्यों करते हैं

भारतीयों में अपने से बड़ों के चरण छूकर प्रणाम करने की परंपरा है, इसके प्रत्युत्तर में बड़े भी हमारे सिर पर अपना हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं। सबसे पहले तो इस तरह चरण छूने से हम अपने बड़ों के प्रति अपनी भावनाएं तथा आदर दिखाते हैं। इसके साथ ही जब हम अपने हाथों से उनके पैर छूते हैं तथा वो अपना हाथ सिर पर रखकर आशीर्वाद देते हैं तो यह तरह का प्राकृतिक सर्किट बन जाता है जिससे उनकी ऊर्जा का प्रवाह हमारे अंदर होने लगता है। उस समय हमारे हाथ की उंगलियां तथा सिर रिसेप्टर का कार्य करने लगती हैं तथा हम उनमें मौजूद जैविक ऊर्जा को ग्रहण करने लगते हैं। यही कारण है कि सभी लोग अपने से बड़े विशेष तौर पर साधु-संतों के चरण छूकर उनका आशीर्वाद लेना चाहते हैं।

हम तुलसी की पूजा क्यों करते हैं

तुलसी के पेड़ का आयुर्वेद में बहुत महत्व बताया गया है। इसकी पत्तियों में पारा होता है जिसके कारण इसमें बैक्टीरिया को मारने की क्षमता है। प्रतिदिन एक तुलसी का पत्ता खाने से शरीर स्वस्थ रहता है तथा छोटी-मोटी बीमारियों का शरीर पर असर नहीं होता। इसके अलावा यह भी माना जाता है कि तुलसी के निकट सांप, मच्छर तथा मक्खियां जैसे हानिकारण जीवन नहीं आते। ऐसे में इसे घर में रखने पर जहां इन

जीवों से बचाव होता है वहीं आवश्यकता पड़ने पर तुलसी की पत्तियों का उपयोग भी किया जा सकता है। परन्तु तुलसी की पत्तियों को कभी भी दांतों से नहीं चबाना चाहिए वरन उसे पानी के साथ निगल लेना चाहिए अन्यथा दांतों के खराब होने का खतरा बना रहता है।

हम पीपल की पूजा क्यों करते हैं

यदि उपयोग की दृष्टि पीपल का पेड़ आम व्यक्ति के लिए साधारण हो सकता है परन्तु आयुर्वेद के अनुसार इसका दवाईयों में बहुत प्रयोग होता है। परन्तु पीपल का पेड़ ही एक ऐसा पेड़ है जो रात में भी ऑक्सीजन का निर्माण करता है। पीपल के इसी गुण के चलते हिंदू इसे भगवानस्वरूप मानते हैं तथा इसकी पूजा करते हैं।

महिलाएं हाथों में चूड़ियां क्यों पहनती हैं

हाथों की कलाई में नसों का जाल होता है जहां हाथ कर आदमी की धड़कन देखी जाती है। यहां पर सही तरह से दबाव देकर शरीर के रक्तचाप को नियंत्रित किया जा सकता है। इसी कारण से औरतों के लिए चूड़ियां पहनना अनिवार्य किया गया। इससे कलाईयों पर चूड़ियों का घर्षण होता है और उनकी नसों पर दबाव पड़ता है फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है।

विवाहित स्त्रियां मांग में सिंदूर क्यों भरती हैं

विवाहित स्त्रियों द्वारा मांग में सिंदूर भरने का कारण उनके वैवाहिक जीवन से जुड़ा हुआ है। सिंदूर को टर्मेरिक लाइम तथा पारे से मिलाकर बनाया जाता है। पारा जहां शरीर के ब्लडप्रेशर को नियमित करता है वहीं औरतों की कामेच्छा को भी उत्तेजित करता है। इससे मस्तिष्क का तनाव भी दूर होता है। इसी कारण से विधवाओं तथा कुंवारी महिलाओं के लिए मांग में सिंदूर लगाना निषेध किया गया है। परन्तु सिंदूर का पूरा फायदा उठाने के लिए ललाट के ठीक बीच में लगाना

हम नाक और कान क्यों छिदवाते हैं

भारतीय महिलाओं में प्रचलित इस परंपरा का संबंध पूरी तरह से शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। भारतीय चिकित्साशास्त्रियों के अनुसार कान और नाक की कुछ नसों का सीधे दिमाग के सोचने वाले प्रतिक्रिया करने वाले भाग से संबंध होता है। नाक-कान छिदवाने से दिमाग की इन नसों पर दबाव पड़ता है जिससे मस्तिष्क की अतिसक्रियता समाप्त होकर नियंत्रण में आती है।

लघु कथा-

मेरी सच्ची श्रद्धा

सीमा शिवहरे 'सुमन'
भोपाल

अरे कहाँ खो गई !मेरे बच्चों की अम्मा !हाँ तुम्ही से बात कर रहा हूँ! पति देव ने गजाक के लहजे में पूँछा।

कहीं नहीं मैंने अपनी एकाग्र चित्तता से बाहर आकर पति देव से कहा। वो.. मैं ,नदी में दीप विसर्जित करती महिलाओं को देख रही थी।

मैं और मेरा पूरा परिवार नर्मदा नदी के तट पर किसी संत महात्मा के दर्शनार्थ आए हुए थे । बड़े ही योगी महात्मा ,दीन दुनिया से कोई मतलब न रखने वाले, घंटो अपनी कुटिया में बिना खाए पिये साधना और राम जी का ध्यान करने वाले । आज कल के ढोंगी बाबाओं की तरह नहीं कि बड़े-बड़े पंडालों में सैंकड़ो चेले- चपाटों और मीडिया के बीच प्रवचन के नाम पर पैसा और सुर्खीयाँ बटोरने में लगे रहते हों; और बंद दरवाजों में काले कारनामों को भी अंजाम देते हों। सच ! मैंने पति देव के मोबाइल में उनका फोटो देखा था ,बड़ा ही अलौकिक तेज था उनके चेहरे पर। महात्मा जी अपनी कुटिया में,साधना में लीन थे और हम उनके बाहर आने तक इंतजार कर रहे थे ।

ओह! इसमें इतने आश्चर्य वाली तो कोई बात नहीं ,जो तुम मुझे भूलकर खो ही जाओ ! पति देव ने चुटकी लेते हुए कहा। आप भी न....मैं भी यदि आटे के दीपक बना कर लाती तो कितना अच्छा होता ,कहते हैं माँ नर्मदा में जलते हुए दीपक विसर्जित करने से वो प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण होने का वरदान देती हैं। और आपकी वजह से .....

मेरी वजह से ! मेरी वजह से क्यों? मैंने कब मना किया इसके लिए? आप ही तो जल्दी करो ! जल्दी करो ! का राग अलाप रहे थे । मैंने मुस्कुराते हुए ,अपने साड़ी के आँचल को और कसते हुए कहा । ठंड बढ़ती जा रही थी , नदी के जल को छूकर हवाएँ जैसे हम पर बर्फ ही उड़ेल कर जा रही हों । पंछी भी अपने अपने घोंसलों को लौटने लगे थे । उनकी चहचहाहट कानों में मधुर सा संगीत घोल रही थी। पूरा आकाश लालीमा से सराबोर था, सूरज भी घर लौटने की तैयारी करने लगा था। वहाँ भंडारे के लिए भोजन पक रहा था। जिसकी खुशबू भूख भी बढ़ा रही थी।- तुम हर बात पर मुझे ही गलत ठहराती हो ! और यदि तुम बार बार लौट -लौट कर आईने के सामने न जाती, तो इतनी देर में पड़ोसियों के लिए भी दीपक बन गए होते ! पति देव ने चिढ़ते हुए ताना कसा ।

अब छोड़ो ! तुम अपनी गलती तो मानोगी नहीं ! थोड़ी सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लो, अलाव जलाना होगा, वर्ना महात्मा जी के दर्शनों से पहले ही हम जम जाएँगे । और हम ठहाका लगाकर जोर से हँस पड़े । हमारी खनकती हुई आवाज की गूँज से पास ही जूठन खाते हुए सारे कौए उड़ गए। ये क्या? आकाश अंधेरा होने से पहले ही काला सा दिखने लगा,और सामने से आता हुआ सफेद बगुलों का बड़ा सा झुंण्ड जिसमें कौए कहीं लुप्त से होने लगे । ऐसा लगा मानो असत्य पर सत्य की विजय हुई हो।

सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी की गई । अलाव जलते ही और भी लोग उसका आनन्द लेने लगे । महात्मा जी के कुछ चेले चाय बनाकर ले आऐ, ये तो सोने पे सुहागा वाली बात हो गई । परिवार से बातें करते हुए बीच- बीच में पलटकर दिए विसर्जित करती महिलाओं को भी निहार लेती। अलाव की गरमाहट और दिनभर इंतजार के बाद कुर्सी पर ही कब आँख लग गई पता ही नहीं चला। स्वप्न में भी आटे के दीपक ही बना रही थी। पीछे से कंधे पर हाँथ रखते हुए किसी ने जगाया।

सुनो बहन ! मुझे जल्दी अभी पर लौटना है और अंधेरा होने में कुछ वक्त है ,क्या तुम मेरे ये दीपक नदी में विसर्जित कर दोगी? एक अंजान महिला ने मुझे ग्यारह दीपकों से भरी थाली हाँथ में थमाते हुए कहा।

और मैं विस्मित सी एकटक उसे खुशी से देखती रह गई ।आज कुछ और भी मांगती तो शायद वह मिल जाता।

शरीर के कुछ रोचक तथ्य

- हमारा दिमाग अभी भी वैज्ञानिकों के लिए एक अबूझ पहेली है.
- दस वाट के बल्ब की ऊर्जा के बराबर शक्ति प्रदान करने वाले हमारे दिमाग से भेजे गए संदेशों की गति 170 मील प्रति... घंटे होती है.
- अक्सर सुबह को काम के लिए ज्यादा उपयुक्त समझा जाता है पर दिमाग रात को ज्यादा एक्टिव होता है.
- हमारी कलाई से कोहनी की लम्बाई हमारे पैर के बराबर होती है.
- यदि दोनों हाथों को फैलाया जाए तो यह शरीर की लम्बाई के बराबर की लम्बाई होगी.
- चौबीस घंटों में हमारा दिल करीब एक लाख बार धड़कता है. जो पूरे जीवन में करीब तीस करोड़ का आंकड़ा पार करते हुए 400 मिलियन लीटर खून पंप कर शरीर को गतिमान बनाए रखता है.
- जन्म के समय हमारे शरीर में 300 हड्डियां होती हैं जो समय के साथ जुड़ कर 206 रह जाती हैं.
- हमारे सर में ही 22 हड्डियां होती हैं।
- औसतन हम दिन भर में 23000 बार सांस लेकर करीब 0.6 ग्राम कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन करते हैं।
- औसतन हर आदमी करीब एक मिनट तक सांस रोक सकता है. जबकि इसका कीर्तीमान 21 मिनट 29 सेकेण्ड का है.
- हम एक दिन में करीब 5000 शब्द बोल लेते हैं।
- यदि शरीर में एक प्रतिशत पानी की कमी होती है तो हम प्यास महसूस करने लगते हैं।
- आश्चर्य की बात है की आँखें खुली रख कर छींका नहीं जा सकता.
- विश्वास करेंगे कि किसी को जम्हाई लेते देख 55 प्रतिशत लोगों को पांच मिनट में जम्हाई आ जाती है.
- कोई भी इंसान बिना खाए एक महीना रह सकता है पर बिना पानी पिए एक सप्ताह निकालना भी मुश्किल हो जाता है.
- पेट में बनने वाला एसिड इतना तेज होता है की वह रेजर ब्लेड को भी गला सकता है। इसीलिए पेट के अन्दर का अस्तर हर तीसरे-चौथे दिन बदल जाता है.
- हम अपने पूरे जीवन काल में करीब 75000 लीटर पानी पी जाते हैं।
- आम इंसान के सर पर करीब एक लाख बाल होते हैं। चेहरे के बाल शरीर के अन्य हिस्सों के बालों से ज्यादा तेजी से बढ़ते हैं।
- पुरुषों तथा महिलाओं के 70 से 90 बाल रोज झड़ जाते हैं।
- पुरुष दिन भर में करीब 15000 बार आँखें झपकाते हैं जबकि महिलाएं इसकी दुगनी बार।
- अभी तक खोजे गए 118 पदार्थों में से 24 हमारे शरीर में भी पाए जाते हैं।
- हमारे मुंह में रोज करीब एक लीटर लार का निर्माण होता है और पूरे जीवन काल में दस हजार गैलन का।
- सुनने के मामले में हम कई जीव-जन्तुओं से पीछे हैं।
- हमारा लीवर हमारे शरीर के भीतर का सबसे बड़ा अंग है जबकि हमारी खाल शरीर का सबसे बड़ा हिस्सा. जिस पर करीब 640000 संवेदनशील तंतु होते हैं।
- शरीर में उठने वाली हिचकी पांच मिनट तक आ सकती है. इससे ज्यादा देर तक रहने से यह परेशानी का सबब बन सकती है.
- हमारे हाथ के नाखून पैरों की बनिस्पत चार गुना तेजी से बढ़ते हैं। उसमे भी हाथ की बीच वाली उंगली के नाखूनों की बढ़त सब से तेज होती है.
- पुराने समय में पाचन का अभिन्न अंग अपेंडिक्स का, आज के मानव के शरीर में कोई उपयोग नहीं है.
- अभी करीब 13 प्रतिशत लोग वामहस्त हैं.
- नवजात शिशु के सर का भार उसके कुल भार का एक चौथाई होता है.
- हमारे शरीर की हड्डियों का रंग सफेद न हो कर कुछ भूरापन लिए होता है.
- अंगूठे की छाप की तरह हर इंसान की जीभ की भी अलग-अलग छाप होती है
- यदि इंसान के सारे डी एन ए को फैलाया जाए तो उसकी लम्बाई चंद्रमा की दूरी से 6000 गुना होगी.
- हमारे शरीर के भार का दो-तिहाई भार पानी का है. जिसमें खून का 92 प्रतिशत पानी, मस्तिष्क का 75 प्रतिशत पानी और मांसपेशियों का 75 प्रतिशत पानी सम्मिलित होता है.
- जन्म से मृत्यु तक हमारी आँखों का आकार एक जैसा ही रहता है. पर उम्र बढ़ने के साथ-साथ इसका लेंस मोटा होता जाता है. इसीलिए अमुमन चालीस की उम्र के बाद चश्मे की जरुरत पड़ जाती है.
- आँख की रेटिना में करीब 125 मिलियन रॉड और 7 मिलियन कोन होते हैं। रॉड से छाया और कम रोशनी में देखने में मदद मिलती है जबकि कोन तेज रौशनी में देखने और रंगों की पहचान करने में सहायक होते हैं. धारणा के विपरीत हम आँखों से नहीं बल्कि अपने दिमाग से देखते हैं आँखें दरअसल कैमरे का काम करती हैं।

52 पीठों में एक है यह सिद्धपीठ मंदिर

होती थी अनहोनी घटनाएं

सिर पर मुकुट के समान खड़ा पहाड़, उसके नीचे बैठी शक्तिपीठ कंकालीन देवी रियासत काल से ही लोगों के बीच आस्था का केंद्र है। पौराणिक कथा के अनुसार इन्हीं देवी के नाम पर कांकेर का नामकरण हुआ। यहां नवरात्र में दूर-दूर से लोग दर्शन करने के लिए आते है और मां के चरणों में शीश झुकाकर अपनी कामना की मन्नतें मांगते हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां देवी के चरण में आने पर भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

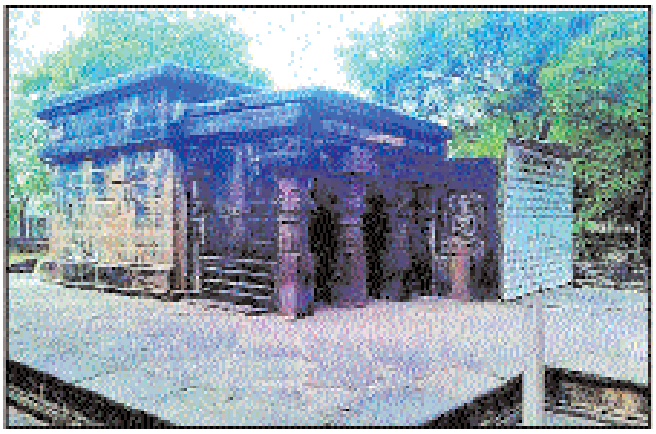

ये है पौराणिक कथा

पौराणिक कथा के अनुसार दक्ष यज्ञ में भगवान शंकर का अपमान देखकर देवी सती को इतना ज्यादा आघात लगा कि उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। यज्ञ में हुए अपमान और सती के वियोग में शंकर भगवान शंकर विक्षिप्त हो गए और सती के शरीर को लेकर पागलों की तरह पृथ्वी पर चक्कर काटने लगे। भगवान शंकर की यह दशा देखकर देवताओं को चिंता हुई और भगवान विष्णु से प्रार्थना करने लगे। इस पर विष्णु ने सुदर्शन चक्र से देवी सती के शरीर को खंड-खंड कर दिया और उनके अंग जहां-जहां गिरे, वहां-वहां शक्तिपीठ बना।

52 शक्ति पीठों में से एक

52 शक्ति पीठों में से एक कंकालीन पीठ के बारे में मान्यता है कि यहां पर सती का कंगन गिरा था। कंगन का अपभ्रंश कंकर हुआ और कंकर से ही इस नगर (प्राचीन में गांव) का नाम कांकेर पड़ा। सोमवंश के पतन के बाद चौदहवीं सदी में कंड्रा वंश के शासन काल में पदादेव के कार्यकाल में यहां मंदिर की स्थापना की गई।

मंदिर में प्रवेश करते ही बेहोश हो जाती थीं

ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर में पहले महिलाएं प्रवेश करते ही बेहोश हो जाती थीं या कुछ ना कुछ अनहोनी हो जाती थी। इस कारण यहां महिलाओं का प्रवेश वर्जित था। 1990-91 में माता की विशेष पूजा-अर्चना की गई और उनसे विनती की गई। इसके बाद महिलाओं का प्रवेश कराया गया।

मंदिर परिसर में चट्टान पर लिखित लिपि रहस्यपूर्ण है। ऐसी मान्यता है कि जो इस लिपि को पढ़ लेगा, उसे खजाने की प्राप्ति होगी। इस लिपि को आज तक किसी के पढ़े जाने का प्रमाण नहीं है। इस लिपि में 84 लाख जीव-जंतुओं के भोजन के खर्च का ब्यौरा लिखा जाना बताया जाता है।

एक और कहानी प्रचलित

इस मंदिर का तार उत्तर प्रदेश के लखनऊ के पास स्थित कड़ा मानिकपुर के लोगों से भी जुड़ा है। कंकालीन मंदिर के पुजारी अभिषेक सोनी ने बताया कि उनके पूर्वज सुखदेव प्रसाद को राजा ने आभूषण बनाने के लिए यहां बुलाया था। कुछ दिनों के पश्चात मां कंकालीन देवी ने स्वप्न में कहा कि मैं जोगी गुफा पहाड़ के नीचे चट्टानों से ढकी हूं। चट्टानों की खुदाई कराकर स्थापना करो। सुखदेव ने यह बात राजा को बताई।

राजा ने इसकी अनुमति नहीं दी और कहा कि मां ने हमको क्यों नहीं बताया लेकिन बार-बार सुखदेव को स्वप्न आते रहे। इस पर पुन-सुखदेव ने आग्रह किया तो राजा ने कहा कि यदि मूर्ति नहीं निकली तो 100 कोड़े लगाए जाएंगे। इस पर सुखदेव ने सहमति दे दी तो राजा ने खुदाई कराई और कंकालीन देवी व भैरो नाथ की मूर्तियां निकली, जिसकी राजा ने विधिवत स्थापना कराई और यह आज कंकालीन देवी के रूप में विख्यात है। आज भी सुखदेव के परिवार के लोग ही पूजा करते हैं और यहीं पर बस गए हैं। आज सुखदेव की पांचवी पीढ़ी के अभिषेक यहां पूजा-पाठ कर रहे हैं।

राष्ट्रवंदना

पाण्डेय गिरिजेश शर्मा 'गिरीश'

हे मातृभूमि है तुझे नमन
हे भूमि सनातन तुझे नमन
सुख वैभव दायिनि मातृभूमि
अति मंगलकारी पुण्य भूमि।
हे मातृभूमि...
तू प्राणों से प्रिय है मुझको,
तेरे हित अर्पित यह काया ।
तेरी रक्षा हित तजूं प्राण ,
मेरे मन को है यह भाया ।
परमेश्वर दें वह शक्ति हमें ,
हम इसकी रक्षा करें सदा ।
इसके रिपुओं का करे नाश ,
प्रभु की प्रिय कौमोदकी गदा ।
यह बने अजेय शक्ति जग की,
ध्वज धर्म सनातन का फहरे ।
यह विश्व बने परिवार एक ,
सुख, शांति,प्रेम इसमें लहरे।
यद्यपि यह पथ कंटकाकीर्ण ,
पर कृपा आपकी करे सुगम ।
परमेश्वर बनें सहाय अगर ,
तो मार्ग न हो कोई दुर्गम ।
आपसी द्वेष को भूल सदा ,
हम बनें एक जुट राष्ट्र हेतु ।
सम्मिलित शक्ति सबकी मिलकर,
फहराये जग में विजय केतु ।

रहस्यमयी और अलौकिक निधिवन

यहाँ आज भी राधा संग रास रचाते है कृष्ण, जो भी देखता है हो जाता है पागल

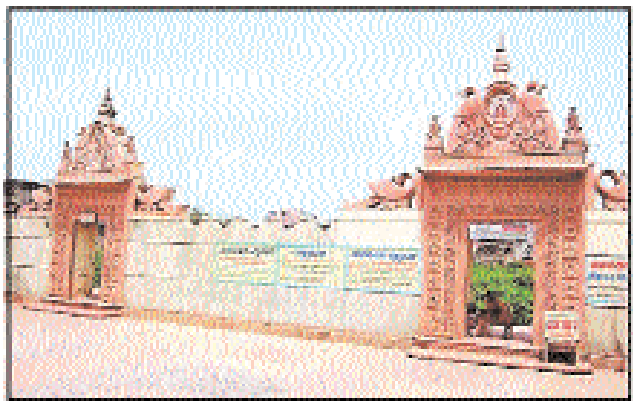

भारत में कई ऐसी जगह है जो अपने दामन में कई रहस्यों को समेटे हुए है ऐसी ही एक जगह है वृंदावन स्तिथ निधि वन जिसके बारे में मान्यता है की यहाँ आज भी हर रात कृष्ण गोपियों संग रास रचाते है। यही कारण है की सुबह खुलने वाले निधिवन को संध्या आरती के पश्चात बंद कर दिया जाता है। उसके बाद वहां कोई नहीं रहता है यहाँ तक की निधिवन में दिन में रहने वाले पशु-पक्षी भी संध्या होते ही निधि वन को छोड़कर चले जाते है।

जो भी देखता है रासलीला हो जाता है पागल

वैसे तो शाम होते ही निधि वन बंद हो जाता है और सब लोग यहाँ से चले जाते है। लेकिन फिर भी यदि कोई छुपकर रासलीला देखने की कोशिश करता है तो पागल हो जाता है। ऐसा ही एक वाक्या करीब 10 वर्ष पूर्व हुआ था जब जयपुर से आया एक कृष्ण भक्त रास लीला देखने के लिए निधिवन में छुपकर बैठ गया। जब सुबह निधि वन के गेट खुले तो वो बेहोश अवस्था में मिला, उसका मानसिक संतुलन बिग? चूका था। ऐसे अनेकों किस्से यहाँ के लोग बताते है। ऐसे ही एक अन्य व्यक्ति थे पागल बाबा जिनकी समाधि भी निधि वन में बनी हुई है। उनके बारे में भी कहा जाता है की उन्होंने भी एक बार निधि वन में छुपकर रास लीला देखने की कोशिश की थी। जिससे की वो पागल हो गए थे। चुकी वो कृष्ण के अनन्य भक्त थे इसलिए उनकी मृत्यु के पश्चात मंदिर कमेटी ने निधि वन में ही उनकी समाधि बनवा दी।

रंगमहल में सजती है सेज

निधि वन के अंदर ही है 'रंग महल' जिसके बारे में मान्यता है की रो? रात यहाँ पर राधा और कन्हैया आते है। रंग महल में राधा और कन्हैया के लिए रखे गए चंदन की पलंग को शाम सात बजे के पहले सजा दिया जाता है। पलंग के बगल में एक लोटा पानी, राधाजी के श्रृंगार का सामान और दातुन संग पान रख दिया जाता है। सुबह पांच बजे जब 'रंग महल' का पट खुलता है तो बिस्तर अस्त-व्यस्त, लोटे का पानी खाली, दातुन कुची हुई और पान खाया हुआ मिलता है। रंगमहल में भक्त केवल श्रृंगार का सामान ही चढ़ाते है और प्रसाद स्वरुप उन्हें भी श्रृंगार का सामान मिलता है।

पेड़ बढ़ते है जमीन की ओर

निधि वन के पेड़ भी बड़े अजीब है जहाँ हर पेड़ की शाखाएं ऊपर की ओर बढ़ती है वही निधि वन के पेड़ो की शाखाएं नीचे की ओर बढ़ती है। हलात यह है की रास्ता बनाने के लिए इन पेड़ों को डंडों के सहारे रोक गया है।

तुलसी के पेड़ बनते है गोपियाँ

निधि वन की एक अन्य खासियत यहाँ के तुलसी के पेड़ है। निधि वन में तुलसी का हर पेड़ जोड़े में है। इसके पीछे यह मान्यता है कि जब राधा संग कृष्ण वन में रास रचाते हैं तब यही जोड़ेदार पेड़ गोपियां बन जाती हैं। जैसे ही सुबह होती है तो सब फिर तुलसी के पेड़ में बदल जाती हैं। साथ ही एक अन्य मान्यता यह भी है की इस वन में लगे जोड़े की वन तुलसी की कोई भी एक डंडी नहीं ले जा सकता है। लोग बताते है कि जो लोग भी ले गए वो किसी न किसी आपदा का शिकार हो गए। इसलिए कोई भी इन्हें नहीं छूता।

वन के आसपास बने मकानों में नहीं हैं खिड़कियां

वन के आसपास बने मकानों में खिड़कियां नहीं हैं। यहां के निवासी बताते है कि शाम सात बजे के बाद कोई इस वन की तरफ नहीं देखता। जिन लोगों ने देखने का प्रयास किया था तो अंधे हो गए या फिर उनके ऊपर दैवी आपदा आ गई। जिन मकानों में खिड़कियां हैं भी, उनके घर के लोग शाम सात बजे मंदिर की आरती का घंटा बजते ही बंद कर लेते हैं। कुछ लोग तो अपनी खिड़कियों को ईंटों से बंद भी करा दिया है।

बंशी चोर राधा रानी का भी है मंदिर

निधि वन में ही बंशी चोर राधा रानी का भी मंदिर है। यहां के महंत बताते हैं कि जब राधा जी को लगने लगा कि कन्हैया हर समय बंशी ही बजाते रहते हैं, उनकी तरफ ध्यान नहीं देते, तो उन्होंने उनकी बंशी चुरा ली। इस मंदिर में कृष्ण जी की सबसे प्रिय गोपी ललिता जी की भी मूर्ति राधा जी के साथ है।

विशाखा कुंड

निधिवन में स्थित विशाखा कुंड के बारे में कहा जाता है कि जब भगवान श्रीकृष्ण सखियों के साथ रास रचा रहे थे, तभी एक सखी विशाखा को प्यास लगी। कोई व्यवस्था न देख कृष्ण ने अपनी बंशी से इस कुंड की खुदाई कर दी, जिसमें से निकले पानी को पीकर विशाखा सखी ने अपनी प्यास बुझायी। इस कुंड का नाम तभी से विशाखा कुंड पड़ गया।

बांकेबिहारी का प्राकट्य स्थल

विशाखा कुंड के साथ ही श्री. बिहारी जी महाराज का प्राकट्य स्थल

भी है। कहा जाता है कि संगीत सम्राट एवं ध्रुपद के जनक स्वामी हरिदास जी महाराज ने अपने स्वरचित पदों का वीणा के माध्यम से मधुर गायन करते थे, जिसमें स्वामी जी इस प्रकार तन्मय हो जाते कि उन्हें तन-मन की सुध नहीं रहती थी। बांकेबिहारी जी ने उनके भक्ति संगीत से प्रसन्न होकर उन्हें एक दिन स्वप्न दिया और बताया कि मैं तो तुम्हारी साधना स्थली में ही विशाखा कुंड के समीप जमीन में छिपा हुआ हूं।

स्वप्न के आधार पर हरिदास जी ने अपने शिष्यों की सहायता से बिहारी जी को वहां से निकलवाया और उनकी सेवा पूजा करने लगे। ठा. बिहारी जी का प्राकट्य स्थल आज भी उसी स्थान पर बना हुआ है। जहां प्रतिवर्ष ठा. बिहारी जी का प्राकट्य समारोह बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। कालान्तर में ठा. श्रीबांकेबिहारी जी महाराज के नवीन मंदिर की स्थापना की गयी और प्राकट्य मूर्ति को वहां स्थापित करके आज भी पूजा-अर्चना की जाती है। जो आज बांकेबिहारी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है।

संगीत सम्राट स्वामी हरिदास जी महाराज की समाधि

संगीत सम्राट स्वामी हरिदास जी महाराज की भी समाधि निधि वन परिसर में ही है। स्वामी हरिदास जी श्री बिहारी जी के लिए अपने स्वरचित पदों के द्वारा वीणा यंत्र पर मधुर गायन करते थे तथा गायन करते हुए ऐसे तन्मय हो जाते की उन्हें तन मन की सुध नहीं रहती। प्रसिद्ध बैजूबावरा और तानसेन इन्हीं के शिष्य थे।

अपने सभारत्न तानसेन के मुख से स्वामी हरिदास जी की प्रशंसा सुनकर सम्राट अकबर इनकी संगीत कला का रसास्वादन करना चाहते थे। किन्तु स्वामी जी का यह दृढ़ निश्चय था की अपने ठाकुर के अतिरिक्त वो किसी का मनोरंजन नहीं करेंगे। इसलिए एक बार सम्राट अकबर वेश बदलकर साधारण व्यक्ति की भांति तानसेन के साथ निधिवन में स्वामी हरिदास की कुटिया में उपस्थित हुए।

तानसेन ने जानबूझकर अपनी वीणा लेकर एक मधुर पद का गायन किया। अकबर तानसेन का गायन सुनकर मुग्ध हो गए। इतने में स्वामी हरिदास जी तानसेन के हाथ से वीणा लेकर स्वयं उस पद का गायन करते हुए तानसेन की त्रुटियों की और इंगित करने लगे। उनका गायन इतना मधुर और आकर्षक था की वन के पशु पक्षी भी वहां उपस्तिथ होकर मौन भाव से श्रवण करने लगे। सम्राट अकबर के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा

हाइकू..

कल्पना भट्ट,
भोपाल

माता व पिता,
ईश्वर ही तो होते हैं..
घर मन्दिर।

घर आँगन,
सजे है बेटियों से..
सम्मान पात्र।

भला ही लागे,
प्रफुल्लित मन से..
हर त्यौहार।

शक का बीज,
एक बार जो बोया..
टूटते रिश्ते।

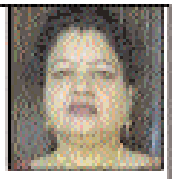

माँ

अलका गुप्ता 'भारती'
मेरठ, (उ.प्र)

ब्रम्हांड है माँ !
अनुभूति प्रथम !
संपूर्ति है माँ !
निःस्वार्थ भाव !
संघर्ष झेलती वो !
है निर्मात्री माँ !
पुनीत भाव !
पवित्र परिभाषा !
पावन है माँ !

ग़ज़ल

मृदुल जोशी
इंदौर

तुम थोड़े-से हिन्दू बन जाओ, मैं कुछ मुसलमां बन जाता हूँ,
तुम मंदिर में अज़ान देना, मैं मस्जिद में पूजा कर आता हूँ।
न परेशां हो कि, मेरा भगवान और तेरा खुदा क्या सोचेगा,
बस एक पल ठहर जा, कुरान में वेद-पुराण रख आता हूँ।
मैं आयत को भजन बना के गा लूँगा, मुसल्ला बिछाकर,
ठहरो ! तुम्हारे सजदे के श्लोक की आयत बना आता हूँ।
कोई इंसानियत का अदु सवाल करे, अपने तरीकों पर,
कहना कि तेरे को तेरे दिल में है खुदा, ठहर बताता हूँ।

कच्चा और पक्का उपवास!

कीर्ति राणा
वरिष्ठ पत्रकार
व विचारक

कम से कम राहुल गांधी और उनके लाली-फली को भाजपा से सीखना चाहिए कि उपवास कैसे किया जाता है।उस गांधी से इस ज़माने के गाँधी सनातन धर्म में उपवास का महत्व भी न समझ सकें तो उनका मंदिर प्रेम आस्था कम धार्मिक पर्यटन ही माना जाएगा। राहुल गांधी के उपवास वाले बैनर में डिजिटल क्रांति के शूरवीरों ने वा की जगह 'हा' करके इसे उपहास बना दिया या दिल्ली के फतेहपुरी चौक वाले चैनाराम हलवाई के यहाँ पूरी और छोले खाते दिल्ली के कांग्रेसी नेताओं को छोले भटूरे ठूँसते हुए दिखा दिया यह सब विधवा विलाप जैसा ही है। इस उपवास कांड के बाद कांग्रेस का वॉर रूम संचालित करने वाली टीम को भी स्वीकार करना चाहिए कि उन्होंने जिस स्कूल में अभी दाखिला लिया है उसमें मास्टर डिग्रीधारियों की फौज पहले से मोर्चा संभाले हुए हैं।

हैरानी तो इस बात की है कि चार घंटे पूरी-छोले या भटूरे नहीं भी खाते तो दम निकल जाता क्या? इटली में जन्मी भारतीय बहू को उपवास के नियम क़ायदे पता न हो यह संभव है लेकिन मोतीलाल वोरा, सत्यव्रत चतुर्वेदी, अशोक गेहलोत, शीला दीक्षित, गुलामनबी आजाद जैसे खुर्राट नेता बस राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ फोटो सेशन के लिए ही हैं या उपवास के नियम इनसे भी नहीं पूछे जाते।

एक तरह से अच्छा ही हुआ कि इस उपवास नौटंकी में कांग्रेस की भद पिट गई ऐसा नहीं होता तो कच्चे उपवास का जवाब पक्के उपवास से देने वाली पार्टी को भी गाइड लाईन जारी कर राज्य से लेकर जिलों तक सतर्क नहीं करना पड़ता। केंद्र से लेकर बीस से अधिक राज्यों में सरकार के बाद भी देशव्यापी उपवास किया जाए तो सोचा जा सकता है कि कांग्रेसमुक्त भारत का सपना देखने के दौरान बीच में चमकने के कारण अभी भी नींद खुल जाती है और विपक्ष अभी उतना पप्पू नहीं हुआ है। विपक्ष ने संसद नहीं चलने दी, इसकी तो आलोचना होना ही चाहिए पर ठंडे दिमाग से यह भी तो सोचा जाए कि सीजेआई के खिलाफ़ चार जजों के गुस्से का ज्वालामुखी अब तक ठंडा क्यों नहीं हुआ। क्यों जस्टिस कुरियन चिट्ठी लिख कर आगाह कर रहे हैं कि न्याय स्तंभ पोला होता जा रहा है।

सब जानते हैं एससी-एसटी एक्ट का दुरुपयोग भी वैसे ही होता रहा है जैसा दहेज प्रताड़ना विरोधी एक्ट का ।फिर ऐसा गुस्सा क्यों फूटा कि दलितों ने आंदोलन के नाम पर देश को हिला कर रख दिया, सवर्णों के आंदोलन में सर्वाधिक हिंसा उन्हीं सुशासन बाबू के बिहार में हुई।ये गुस्सा बेरोज़गारी से हताश युवाओं का तो नहीं था? केंद्रीय मंत्री के पुत्र द्वारा जुलूस की अगुवाई करना, लगातार हिंसा का भड़कना, सुशासन बाबू का बिहार में शांति के लिए मज़ार में चादर चढ़ाना-दुआ माँगना ये सारे प्रसंग क्या भाजपा को बदनाम करने की साजिश माना जाए या भाजपा के सहारे कुर्सी बचाने की मजबूरी? बिहार ही क्यों उत्तरप्रदेश में एनकाउंटर सरकार के रूप में मशहूर हुए योगी आदित्यनाथ महिलाओं के साथ दुष्कर्म-हत्या आदि के मामलों में हरियाणा के खट्टर ही साबित हो रहे हैं। उन्नाव के भाजपा विधायक कुलदीप सेंगर की तरह समाजवादी पार्टी की सरकार के वक्त गायत्री प्रजापति भी ऐसे ही रेप के केस में उलझे थे तब न सिर्फ केवल भाजपा ने आसमान सिर पर उठाया खुद राज्यपाल राम नाईक तक ने प्रजापति के मंत्री बने रहने पर सवाल कर दिया था। कुलवंत सेंगर ने यूपी और भाजपा की साख चमकाने वाला तो काम किया नहीं, फिर क्यों मुँह में दही जमाए बैठे है। नारी अस्मिता का जो हाल वहाँ है उससे बुरा तो जम्मू-कश्मीर में आठ साल की आसिफा के साथ हुआ है, लगातार उसके साथ किए गए गैंगरेप में चार पुलिसकर्मी, एक संगठन प्रमुख संजीराम न सिर्फ शामिल था बाद में इन सब ने मिलकर उस मासूम की उसी पवित्र स्थल पर हत्या भी कर दी।मध्य प्रदेश में सभा मंचों पर तो बेटियों का मामा कहते हुए सीएम खूब सीना फुलाते हैं, बेटियों को सलाह भी देते है कि तुम लोगों के साथ कोई गलत हरकत करे तो ठोको-पीटो मामा तुम्हारे साथ है लेकिन वही मुट्ठी तने हाथ प्रीति रघुवंशी आत्महत्या मामले के कथित आरोपी के पिता-सहयोगी मंत्री रामपाल सिंह के लिए अभयदान देते नज़र आते हैं।जब मोदी-शाह की जोड़ी सभी राज्यों में अपने दल की सरकार देखना चाहते है तो बलात्कार-हत्या-जिंदा जलाने वाली ऐसी घटनाओं से आहत आमजन ये कैसे भूलेंगे कि मप्र, यूपी, हरियाणा हो या बिहार, जम्मू-कश्मीर सभी जगह तो जुबां केसरी है।

कोई दलितों के अपमान पर तो कोई संसद ना चलने देने पर उपवास की राह पर चल पड़ा है।उपवास करने वालों को यह भी याद रखना चाहिए कि अन्ना हज़ारे जितनी ताक़त तो किसी में नहीं होगी। दूसरी बार उपवास किया तो देश तो दूर उसी दिल्ली ने झाँका तक नहीं। कच्चे-पक्के उपवास तो अब चलते ही रहेंगे लेकिन आमजन बीते सालों का हिसाब किताब भी दर्ज करता जा रहा है। यदि वह 65 साल बेवकूफ और इन पाँच साल में ही वह समझदार बना है तो मतदाता का अक्लमंद हो जाना लोकतंत्र के अमर बने रहने की दिशा में अच्छा संकेत ही माना जाएगा।

खौफ

ममा रेप क्या होता है?

सुमिता की नौ वर्षीय बच्ची नंदिनी ने स्कूल से आकर, घर में घुसते ही उस से यह प्रश्न किया तो वह इस छोटी सी उम्र में उसके मुँह से यह शब्द सुनकर स्तब्ध रह गई। बात को टालते हुए ,उसके दिलो-दिमाग को इस विषय से हटाने की कोशिश करने लगी पर जैसे उसकी सुई इसी एक शब्द में अटकी हुई थी। इसके मस्तिष्क में आखिर चल क्या रहा है ,यह जानने के लिए उस ने उससे पूछा -कि तुमने यह शब्द कहां से सुना? तो वह बोली -आज स्कूल में इंटरवल के वक्त मेरी फ्रेंड्स आपस में डिस्कस कर रही थी कि हमें संभल कर रहना चाहिए! कहीं अकेले नहीं जाना चाहिए, नहीं तो हमारे साथ भी रेप हो सकता है जैसे निर्भया दीदी , आसिफा के साथ हुआ, क्यों मम्मा! क्या मेरे साथ भी रेप हो सकता है ? बेटी ने पूछा तो सुमिता ने सहमकर कस कर उसे सीने से लगा लिया और उस की आँखों से आसूँ बहने लगे। बेटी के इस प्रश्नन ने उसे झिंझोड़कर रख दिया इस, प्रश्न का उत्तर तो वह नहीं दे सकी , पर उसके दिलो-दिमाग पर छाए खौफ से वह अनजान भी नहीं थी । उसे लगा आज के इस असुरक्षित माहौल में केवल उसकी बेटी ही नहीं , अपितु जाने कितनी बेटियां, इस खौफ के साए में जीने को विवश हैं , ऐसे में इनके भविष्य का क्या होगा? आए दिन अखबारों में ऐसी खबरें पढ़ने को मिल रही हैं, और जाने कितनी मासूम बच्चियों और उन की माँ के दिल में यह सवाल एक खौफ बनकर गूंज रहा है।

परिचय-सुमन चौधरी सुमन, स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता ,सामाजिक कार्यकर्ता, लिखाएँ-कहानी, कविता, व्यंग्य,यात्रा संस्मरण, सम सामयिक लेख, राष्ट्रीय समाचार पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का नियमित प्रसारण, ऑल इंडिया रेडियो आकाशवाणी से कहानी, कविता एवं वार्ताओं का नियमित प्रसारण। कार्यक्षेत्र-लेखन एवं स्वतंत्र पत्रकारिता, सामाजिक कार्यकर्ता

कितनी सुरक्षित आपकी बेटी ?

रेखा जोशी

परिचय-आजीविका-अध्यापन ,के एल एम् डी एन कालेज फार वीमेन ,फरीदाबाद, हेड आफ डिपार्टमेंट ,भौतिकी विभाग [रिटायर्ड] विधा -छंद मुक्त, गज़ल, लघुकथा, कहानी, गीत, गीतिका, नाटक आदि, प्रकाशन-अनेक सांझा संग्रह में रचनाएँ प्रकाशित, कार्यकाल में बेस्ट टीचर सम्मान

कितनी सुरक्षित है हमारी बेटियाँ इस समाज में, रह रह कर यह सवाल सुमन को कचोट रहा था .उसकी अंतरंग सखी दीपा ने रो रो कर अपना बुरा हाल कर लिया था उसके घर की नन्ही कली को किसी ने मसल दिया था और उसके दुःख से सुमन भी बहुत दुखी थी,उसकी आँखों में भी आंसुओं का सैलाब उमड़ आया था, उसकी जान से भी प्यारी सखी दीपा के घर पर आज मातम छा चुका था। कोई ऐसे कैसे कर सकता है, इक नन्ही सी जान,एक अबोध बच्ची , जिसने अभी जिंदगी में कुछ देखा ही नहीं ,जिसे कुछ पता ही नहीं, एक दरिंदा अपने वहशीपन से उसकी पूरी जिंदगी कैसे बर्बाद कर सकता है। दीपा की चार वर्षीय कोमल सी कली के साथ दुष्कर्म,यह सोच कर भी काँप उठी थी सुमन, कैसा जंगली जानवर था वह दरिंदा, जिसे उस छोटी सी बच्ची में अपनी बेटी दिखाई नहीं दी। सुमन का बस चलता तो उस जंगली भेड़िये को जान से मार देती, गोली चला देती वह उस पर। आज वह नन्ही सी कली मुरझाई हुई अस्पताल में बेहोश अवस्था में पड़ी है।

अपनी जान से भी प्यारी बेटियों की सुरक्षा को लेकर आज पूरा भारत परेशान है ,,बलात्कार जैसी बेहद घिनौनी और अमानवीय घटनाएं तो न मालूम कब से हमारे समाज में चली आ रही है लेकिन बदनामी के डर इस तरह की घटनाओं पर परिवार वाले ही पर्दा डालते रहते है। सुमन की सहेली दीपा ने पुलिस स्टेशन में जा कर एफ आई आर भी दर्ज करवा दी, पर क्या पुलिस उस अपराधी को पकड़ पाएगी? क्या कानून उसे सजा दे पाएगा? कब तक न्याय मिल पाये गा उस कुम्हलाई हुई कली को ऐसे अनेक प्रश्न सुमन के मन में रह रह कर उठ रहे थे। इन सब से उपर सुमन उस नन्ही सी बच्ची को लेकर परेशान थी ,अगर जिंदगी और मौत में झूल रही वह अबोध बच्ची बच भी गई तो क्या वह अपनी बाक़ी जिंदगी समान्य ढंग से जी पाएगी ?

कलम

-सुषमा मलिक

रो पड़ी कलम ओर खोली क्यों अपना दर्द मुझे बतलाती है।
आंसू से लथपथ लब्ज क्यों पगली मेरी धार से लिखवाती है।
अपने भी अब साथ नहीं अब कलम ही तो मेरा हमसाया है।
मालिक ने बता डाले हर दर्द यही तो अब दिल को भाया है।
कलम बोली लिख हिम्मत से क्यों दर्दों को तू यू सहती है।
पोछ डाल हर उस आसू को जो तेरी आंख से बहती है।
आँसू भी तो दिए है अपनों ने इन्हें तू ही बता छिपाऊँ कहाँ।
रास्ते सारे बन्द हुए सूझे ना कुछ भी मालिक जाऊ कहाँ।
अकेली आगे बढ़जा बावरी हर हिम्मत तुझे जुटानी होगी।
एहसान है किसी सहारे का वो पहचान तुझे मिटानी होगी।
सुन सारी बात कलम की, सुषमा ने बस दिल मे ठानी है।
फट जाए चाहे पाँव कांटो से, अपनी राह तुझे बनानी है।।

एक रात

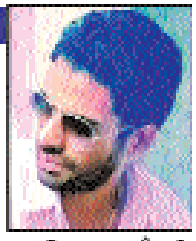

अभिजात चौधरी

उस रात में किसी के घर की बगिया में रात की रानी की कलि खिलने वाली थी , रात का पहला पहर था श्वेत चांदनी मानो यशराज फिल्म्स के हीरोइन के दुप्पटे की तरह बगिया पर लहलहा रही थी । धीमी धीमी हवा कलि की एक एक कर पंखु?याँ खोलने में मानो उसकी मदद कर रही थी । बगिया के बाकि पौधों पर इतनी रौनक नहीं थी ऐसा लग रहा था जैसे दिन भर की मेहनत के बाद सब सुस्ता रहे हों , लेकिन रात की रानी का सौंदर्य देखते ही बनता था । और इस बात को वो किशोरवय कलि जो फूल बनने ही वाली थी शायद जानती थी और इसी लिए इठलाती सी हवा की लहरों के साथ नाचती हुई सी प्रतीत हो रही थी ।

उसी बगिया वाले घर में 12वीं के पेपर ?त्म होने के बाद चैन से अपने हाथों में फोन पक? निशा न ही तो पूरी बैठी थी ना ही सोई थी बस अपने में ही मगन अपनी ही भावनाओं में बहती किसी से चैटिंग करती जा रही थी और मंद ह्न मंद मुस्कुरा रही थी ।

यहीं प्रश्न ये उठता है कि वो 'किसी' कौन है जिससे चैटिंग करती हुई निशा इतनी खो चुकी है कि उसे ये ध्यान ही ना रहा कि उसके कमरे की खि?की जो बगिया में खुलती है , से मच्छर आ कर उसे जगह जगह काट रहे हैं या शायद ध्यान में हो भी पर वो इस 'किसी' को रिप्लाई के लिए थो?ा सा भी इंत?ार नहीं करवाना चाहती इसलिए खि?की बंद करने को उसने जरूरी नहीं समझा ।

समय बीतता गया , रात का दूसरा पहर ह्न कलि एक सुन्दर श्वेत पुष्प में परिवर्तित हो चुकी थी । श्वेत पुष्प चांदनी की आभा पा कर मनमोहक आसमानी छटा धारण किये उतनी ही बे?ुदी में हवाओं की ताल पर नाच रहा था और नाचे भी क्यों ना ? नाचना तो बनता है ज उस हवा के लिए जो इस बेचारे पुष्प के अकेलेपन का एकमात्र साथी था इस खूबसूरत रात में । इसलिए इतना करना तो बनता ही है हवा को उसकी अहमियत का एहसास करवाने के लिए । तो बस उस अकेलेपन के साथी को पुष्प इसलिए ही अपना नृत्य दिखा कर खुश कर रहा था कि कल फिर रात होगी और कहीं उसे अकेला ना रहना प? उस लंबी रात को क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो वो सारे विचार जो दिन भर उसके मन में आएंगे वो किसके साथ साझा करेगा फिर ? ये हमारी रात की रानी का पुष्प ! ये अकेलेपन से बहुत घबराता है इसलिए कोई भी जो इस से थो?ा भी अपनत्व दिखाए ये अपनी खुशियां उसी पर आश्रित छो? देता है । उधर बगिया के पास वाली खि?की से जो दृश्य दिखाई देता है है और जो आवाजें आती है वे हैं ह्न निशा ने चैटिंग बन्द कर दी है लेकिन बातें बन्द नहीं हुई है है । अब 'किसी' ने उसे कॉल कर लिया है । निशा तकिया गोद में लेकर पालथी लगा कर बेड पर बैठी है और बोल रही है ह्न

अब ?

अब कैसे बाबू ?

नाज

समझा करो ।

प्ली?ज

प्ली? प्ली? प्ली?

नहीं ना

देखो ये बिलकुल सेफ नहीं है ।

मान भी जाओ

नहीं

ना

नो

अरे रुको रुको रुको

सुनो तो एक मिनट सुन तो लोज

अच्छा ऐसा करो आ जाओ 5 मिनट ।

हाँ !

कॉल कर लेना घर के बाहर ही ,

नहीं चुप चाप अंदर आ जाना ।

हां

ठीक

गार्डन वाली विंडो मेरे रूम की है ।

हां

ऊँची नहीं है इतनी

हाँ आराम से आ जाओगे ।

अब तो नारा? नहीं हो ना ?

खाओ मेरी कसम ज

ओके

लव यू

वेटिंग फॉर यू

हम्म

बाय

तीसरा पहर । हवा ते? हो गयी है । अब पुष्प को अपनी ही धुरी पर नाचना कष्टदायक लग रहा है , पर हवा उग्र होती ही जा रही है । वो पुष्प की नहीं सुनती । वैसे ही चलती रहती है । पुष्प हिलता रहता है बिना किसी उत्साह के । उसने बोल कर मना नहीं किया और न ही कर सकता थे क्योंकि आने वाली रात कहीं अकेला ना रह जाए यही चिंता है उसके दिमाग में फिर भी उसके हाव ह्न भाव से पता चलता है कि वह इस से आगे नहीं नाचना चाहता पर हवा शायद अंधी है , वो नहीं देखती । अब वो अपनी ही धुन में है । बगिया में पदचाप होती है , लगता है निशा का 'किसी' आ गया है । हां वही है निशा खि?की में ख?ी उसका इंत?ार कर

रही थी । वो उसे खि?की से च?ा कर अपने कमरे में लेती है । निशा के 'किसी' को शायद निशा की ?िक है इसीलिए उसने अंदर जाते ही निशा को मच्छरों से बचाने के लिए खि?की बंद कर ली।

तीसरा पहर शुरू हुआ । हवा ने आंधी का रूप धारण कर लिया । पुष्प का नृत्य अब देखने वाले को नृत्य नहीं लग सकता था , कोई नहीं कह पाता कि ये वही नृत्य है जो थो?ी देर पहले उसने अपनी म?ीं से करना शुरू किया था । अब तो आंधी से उसकी 2 ?ु 4 पंखु?ियाँ भी गिर गयी थी । तभी खि?की खुली ! निशा का 'किसी' खि?की से गार्डन में कूदा , दे? ?दमों से बाहर निकला बिना स्टार्ट किये अपनी बाइक को मो? तक ले गया और वहां से उसे स्टार्ट कर गायब हो गया और इसी के साथ ही चौथा पहर आरम्भ हो गया ।

अब हवा रुक गयी थी ।

सब शांत !

सन्नाटा !

उमस !

पुष्प थका हारा अब स्थिर था । निशा का 'किसी' जल्दी में निशा के कमरे की खि?की बंद करना भूल गया बाहर निकलते व?त । शायद कोई जरूरी काम ही आ गया था तब ही ऐसा हुआ वरना ?िक तो करता ही था जो निशा की ?चांदनी खि?की में से पुनः निशा के कमरे का दृश्य दिखा रही थी । वो भी सो गयी थी । आखिरकार सब सो चुके थे पर चाँद जो अब तक अकेला ये सब देख रहा था और जिसने मुझे ये सब बताया वो फिर भी कुछ देर और जागा । सुबह होने को थी । पूर्व में लालिमा देख कर निश्चिन्त हो कर कि आगे ये देख-भाल वाली ड्यूटी सूरज संभाल लेगा ; चाँद सोने चला गया ।

सूरज आया । उसकी पहली कुछ किरणें एक साथ ही पुष्प और निशा पर प?ी । लेकिन ये क्या ??

ना ही पुष्प में और ना ही निशा में वो सौंदर्य वो श्वेत आभा वो स्वभाविक चंचलता वो आसमानी छटा कुछ भी नहीं था । चाँद अगर ये देख पाता तो अवश्य ही उसे बहुत ही आश्चर्य और दुःख होता । पुष्प की पंखु?ियों पर जंग के से निशान से थे मतलब वो मुरझा रहा था । अब पुष्प को ग्लानि महसूस हो रही थी कि अगली रात अकेला ना रहे इसलिए उसने इतना सब बिना किसी शर्त के किया हवा के लिए परन्तु वो तो अगली रात देख ही नहीं पायेगा , फिर क्यों ? वो रुकना चाहता था आने वाली रात तक नयी कलियों को बताना चाहता था कि हवा की बातों में ना आये , उसके लिए कुछ ना करे , वो दुष्ट है । परंतु ये हो ना सका । निशा का कुछ पता नहीं लग पाया क्योंकि धूप के कारण उसने खि?की बन्द कर ली थी तो उसे ग्लानि थी या नहीं कोई जान नहीं पाया , हो भी सकती है ; शायद इसी लिए वो धूप का सामना नहीं कर पायी थी ।

अच्छा है चाँद सो गया था वरना जिसने ऐसे सौंदर्य को बनते देखा था उसे उज??ते देखता तो दोबारा वहां आने से ही मना कर देता । आखिर कौन इस तरह पतन का प्रत्यक्षदर्शी होना चाहेगा बताइये ?

नींव बने मातृभाषा

नीता त्रिपाठी
'परिणीति'

परिचय-शिक्षा-एम.ए./बी. एड./ पत्रकारिता, कविता एवं लेख। जान्हवी,विद्या भारती एवं ओम पत्रिका में लेख एवं कविताएं प्रकाशित हुई है। अपनी कविता एवं लेख के माध्यम से जन जागृति का कार्य करना है।

सात स्वरों से सजे गीत को, मातृभाषा में हम गाएं।
निज भाषा में ज्ञानार्जन कर, स्वयं ही मंजिल पाए ।
संस्कार की नींव सदा, अपनी भाषा में ही डालें ।
त्यागें अंग्रेजी के दासत्व को, मातृभाषा को स्वामी बनाएं।
कोटी-कोटी अनुयायी बनकर,निज भाषा का परचम लहराएं।
जगत गुरू के सिंहासन पर, मातृभाषा को बिठायें ।
नई सृष्टि के नए प्रहरी, निज भाषा बन कर उभरे ।
तुमको है शत बार नमन,मातृभाषा की स्थिति सुधरे।
अपनी संस्कृति का रक्षण कर, शिशु का सर्वांगीण विकास करें ।
मातृभाषा सर्वोच्च हमारा, जन- जन यह गुणगान करे।
पढ़े दूसरी भाषाओं को, निज भाषा को हम ना भूलें।
निज भाषा को लक्ष्य बना कर,संघर्ष शिखर को नर छू ले।

परमात्मा

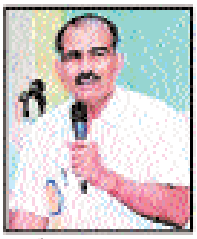

गोपाल नारसन

परिचय-आपने कला व विधि में स्नातक के साथ ही पत्रकारिता की शिक्षा भी ली है,तो डिप्लोमा,विद्या वाचस्पति मानद सहित विद्यासागर मानद भी हासिल है। वकालत आपका व्यवसाय है और राज्य उपभोक्ता आयोग से जुड़े हुए हैं।

परमात्मा तो एक है
उसी के अनेक नाम
राम कहो,कृष्ण कहो
अल्लाह या शिव नाम
ओम वही,गॉड वही
महावीर ,वही सतनाम
परमात्मा को जो याद करे
पा जाये चारो धाम
पिता एक ही वह सबका
रखता सबका ध्यान
जो जिस रूप मे पुकारे
उसी मे दर्शन का हो भान
पतित से पावन करता वह
करते हम उसका गुणगान।

POCSO एक्ट क्या है

कैसे बच्चों को यौन शोषण से संरक्षण प्रदान करता है?

पॉक्सो कानून क्या है?

पॉक्सो, यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण करने संबंधी अधिनियम (Protection of Children from Se&ual Offences Act POCSO) का संक्षिप्त नाम है.पोक्सो एक्ट- 2012 के अंतर्गत बच्चों के प्रति यौन उत्पीड़न और यौन शोषण और पोर्नोग्राफी जैसे जघन्य अपराधों को रोकने के लिए, महिला और बाल विकास मंत्रालय ने पोक्सो एक्ट- 2012 बनाया था.

वर्ष 2012 में बनाए गए इस कानून के तहत अलग-अलग अपराध के लिए अलग-अलग सजा तय की गई है. पास्को अधिनियम की धारा 7 और 8 के तहत वो मामले पंजीकृत किए जाते हैं जिनमें बच्चों के गुप्तांग से छेड़छाड़ की जाती है, इस धारा के आरोपियों पर दोष सिद्ध हो जाने पर 5 से 7 साल तक की सजा और जुर्माना हो सकता है. इस एक्ट को बनाना इसलिए भी जरूरी था क्योंकि बच्चे बहुत ही मासूम होते हैं और आसानी से लोगों के बहकावे में आ जाते हैं. कई बार तो बच्चे डर के कारण उनके साथ हुए शोषण को माता पिता को बताते भी नहीं है.

इस एक्ट के प्रावधान इस प्रकार हैं

यौन शोषण की परिभाषा- इसमें यौन उत्पीड़न और अश्लील साहित्य, सेक्सुअल और गैर सेक्सुअल हमला (penetrative and non-penetrative assault) को शामिल किया गया है.

1. इसने भारतीय दंड संहिता, 1860 के अनुसार सहमती से सेक्स करने की उम्र को 16 वर्ष से बढ़ाकर 18 वर्ष कर दिया है.इसका मतलब है कि-

-यदि कोई व्यक्ति (एक बच्चा सहित) किसी बच्चे के साथ उसकी सहमती या बिना सहमती के यौन कृत्य करता है तो उसको पोक्सो एक्ट के अनुसार सजा मिलनी ही है.

-यदि कोई पति या पति 18 साल से कम उम्र के जीवनसाथी के साथ यौन कृत्य कराता है तो यह अपराध की श्रेणी में आता है और उस पर मुकदमा चलाया जा सकता है.

2. यह अधिनियम पूरे भारत पर लागू होता है और 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को यौन अपराधों के खिलाफ संरक्षण प्रदान करता है.

3. पॉक्सो कानून के तहत सभी अपराधों की सुनवाई, एक विशेष न्यायालय द्वारा कैमरे के सामने बच्चे के माता पिता या जिन लोगों पर बच्चा भरोसा करता है, उनकी उपस्थिति में की कोशिश करनी चाहिए.

4. यदि अभियुक्त एक किशोर है, तो उसके ऊपर किशोर न्यायालय अधिनियम, 2000 (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) में मुकदमा चलाया जाएगा.

5.यदि पीड़ित बच्चा विकलांग है या मानसिक रूप से या शारीरिक रूप से बीमार है, तो विशेष अदालत को उसकी गवाही को रिकॉर्ड करने या किसी अन्य उद्देश्य के लिए अनुवादक, दुभाषिया या विशेष शिक्षक की सहायता लेनी चाहिए.

6. यदि अपराधी ने कुछ ऐसा अपराध किया है जो कि बाल अपराध कानून के अलावा अन्य कानून में भी अपराध है तो अपराधी को सजा उस कानून में तहत होगी जो कि सबसे सख्त हो.

7. इसमें खुद को निर्दोष साबित करने का दायित्व अभियुक्त (accused) पर होता है. इसमें झूठ आरोप लगाने, झूठी जानकारी देने तथा किसी की छवि को खराब करने के लिए सजा का प्रावधान भी है

8. जो लोग यौन प्रयोजनों के लिए बच्चों का व्यापार (child trafficking) करते हैं उनके लिए भी सख्त सजा का प्रावधान है.

9. सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय बाल संरक्षण मानकों के अनुरूप, इस अधिनियम में यह प्रावधान है कि यदि कोई व्यक्ति यह जानता है कि किसी बच्चे का यौन शोषण हुआ है तो उसके इसकी रिपोर्ट नजदीकी थाने में देनी चाहिए, यदि वो ऐसा नहीं करता है तो उसे छह महीने की कारावास और आर्थिक दंड दिया जा सकता है.

10. यह अधिनियम बाल संरक्षक की जिम्मेदारी पुलिस को सौंपता है. इसमें पुलिस को बच्चे की देखभाल और संरक्षण के लिए तत्काल व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी दी जाती है. जैसे बच्चे के लिए आपातकालीन चिकित्सा उपचार प्राप्त करना और बच्चे को आश्रय गृह में रखना इत्यादि

11. पुलिस की यह जिम्मेदारी बनती है कि मामले को 24 घंटे के

अन्दर बाल कल्याण समिति (CWC) की निगरानी में लाये ताकि CWC बच्चे की सुरक्षा और संरक्षण के लिए जरूरी कदम उठा सके.

12. इस अधिनियम में बच्चे की मेडिकल जांच के लिए प्रावधान भी किए गए है, जो कि इस तरह की हो ताकि बच्चे के लिए कम से कम पीड़ादायक हो. मेडिकल जांच बच्चे के माता-पिता या किसी अन्य व्यक्ति की उपस्थिति में किया जाना चाहिए, जिस पर बच्चे का विश्वास हो, और बच्ची की मेडिकल जांच महिला चिकित्सक द्वारा ही की जानी चाहिए.

13. इस अधिनियम में इस बात का ध्यान रखा गया है कि न्यायिक व्यवस्था के द्वारा फिर से बच्चे के ऊपर जुल्म न किये जाएँ. इस एक्ट में केस की सुनवाई एक स्पेशल अदालत द्वारा बंद कमरे के कैमरे के सामने दोस्ताना माहौल में किया जाने का प्रावधान है. यह दौरान बच्चे की पहचान गुप्त रखने की कोशिश की जानी चाहिए.

14. विशेष न्यायालय, उस बच्चे को दिए जाने वाली मुआवजे की राशि का निर्धारण कर सकता है, जिससे बच्चे के चिकित्सा उपचार और पुनर्वास की व्यवस्था की जा सके.

15. अधिनियम में यह कहा गया है कि बच्चे के यौन शोषण का मामला घटना घटने की तारीख से एक वर्ष के भीतर निपटाया जाना चाहिए.

सरकार द्वारा बच्चों के यौन शोषण के लिए पॉक्सो एक्ट में किया गए प्रावधान 2012 में किये गए थे जो कि बहुत लेट से किये गए हैं. पोक्सो के अंतर्गत बच्चों के खिलाफ यौन अपराध के 6118 मामले 2012 से 2016 के बीच दर्ज किये गए है. इसमें 85त मामले अभी भी कोर्ट में लंबित पड़े हुए है जबकि अपराधी को सजा मिलने की दर सिर्फ 2प्रश है जो कि किसी भी तरह से ठीक नही ठहराया जा सकता है. सरकार को इस एक्ट में और जरुरी सुधार करने होंगे ताकि पीड़ित को जल्दी से जल्दी न्याय मिल सके. ज्यादातर मामलों में देखने में आया है कि बच्चों का शोषण जान-पहचान के लोग ज्यादा करते हैं और घर के लोग उन पर शक भी नही करते हैं. इसलिए माता- पिता का यह दायित्व बनता है कि जिन लोगों के साथ बच्चे खेल रहे हैं उन पर पूरी नजर रखें.

बस तू ही है

मेरी चाहत, मोहब्बत, वफा,
बस तू ही है।
मेरी राहत, इबादत, सफा,
बस तू ही है।
मेरी तिश्नगी, दीवानगी, सबा,
बस तू ही है।
मेरी तड़प, इंतजार, इजहार,
बस तू ही है।
दिल से कहूँ, ए दिल तुझको,
मुझमे बस तू ही है।

डॉ. वासीफ काजी
इंदौर

मैं स्त्री हूँ

डॉ.नीना जोशी

जब भी यह सवाल कोई पूछता है,
मैं सोच में पड़ जाती हूँ,
बात यह नहीं, कि मैं,
उम्र बताना नहीं चाहती हूँ,
बात तो यह है, की,
मैं हर उम्र के पड़ाव को,
फिर से जीना चाहती हूँ,
इसलिए जवाब नहीं दे पाती हूँ,
मेरे हिसाब से तो उम्र,
बस एक संख्या ही है,
जब मैं बच्चों के साथ बैठ,
कार्टून फिल्म देखती हूँ,
उन्ही की, हम उम्र हो जाती हूँ,
उन्ही की तरह खुश होती हूँ,
मैं भी तब सात-आठ साल की होती हूँ,
और जब गाने की धुन में पैर थिरकाती हूँ,
तब मैं किशोरी बन जाती हूँ,
जब बड़ों के पास बैठ गप्पे सुनती हूँ,
उनकी ही तरह, सोचने लगती हूँ,
दरअसल मैं एकसाथ,
हर उम्र को जीना चाहती हूँ,
इसमें गलत ही क्या है?
क्या कभी किसी ने,
सूरज की रोशनी, या,
चाँद की चांदनी, से उम्र पूछी?
या फिर खल खल करती,
बहती नदी की धारा से उम्र पूछी?
फिर मुझसे ही क्यों?
बदलते रहना प्रकृति का नियम है,
मैं भी अपने आप को,
समय के साथ बदल रही हूँ,
आज के हिसाब से,
ढलने की कोशिश कर रही हूँ,
कितने साल की हो गयी मैं,
यह सोच कर क्या करना?
कितनी उम्र और बची है,
उसको जी भर जीना चाहती हूँ,
एकदिन सब को यहीं से विदा लेना है,
यह पल, किसी के भी जीवन में,
कभी भी आ सकता है,
फिर क्यों न हम,
हर पल को मुट्ठी में, भर के जी ले,
हर उम्र को फिर से, एक बार जी ले..

भारत में न्यूज पोर्टल (न्यूज वेबसाईट) की कानूनन मान्यता

साल 2014 से ही भारत देश में सुचना एवं प्रसारण के क्षेत्र में नवाचार लगातार हो ही रहे है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आईटी प्रेम ही डिजिटल इण्डिया के दिवास्वप्न को साकार करने का जज्बा दे रहा है ।

1 जुलाई 2015 को प्रधानमंत्री ने डिजिटल इंडिया परियोजना की शुरुआत की थी। डिजिटल इंडिया यानी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वो सपना, जो साकार होने वाला है, जिसके जरिए पूरे देश के सशक्तिकरण व देश को इंटरनेट से जोड़ कर वैश्विक स्तर पर भारत को स्थापित करने की तैयारी है । इसकी शुरुआत वाले मौके पर टेलीकॉम मंत्री रविशंकर प्रसाद ने भी कहा था कि डिजिटल इंडिया भारत की तस्वीर बदलने वाली योजना साबित होगी।प्रसाद ने यह भी कहा कि मेक इन इंडिया के बिना डिजिटल इंडिया पूरा नहीं हो सकता।

डिजिटल इंडिया का मूल उद्देश्य है कि भारत के हर गांव में होगा इंटरनेट, हर सुविधा होगी ऑनलाइन। न हर जगह दस्तखत की टेंशन, न अस्पताल की लंबी लाइन। कुछ ही सालों में ये सारी बातें हकीकत बन जाएंगी और इस सपने को साकार करने की शुरुआत जुलाई 2015 में हो चुकी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने ड्रीम प्रोजेक्ट डिजिटल इंडिया की शुरुआत दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में की थी । दिग्गज उद्योगपति समेत करीब 10 हजार लोग इस समारोह में शामिल हुए थे। इसी के बाद यह मांग भी लगातार उठने लगी थी कि जब केंद्र सरकार देश भर में डिजिटल क्रांति का सूत्रपात कर ही रही है तो मीडिया इससे अछूता क्यों रहें। अमरीका जैसे विकसित राष्ट्र ने 30 जून 2000 में तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की अगुआई में इलेक्ट्रानिक हस्ताक्षर को कानूनी मान्यता दे कर उस राष्ट्र के सम्पूर्ण डिजिटल होने का प्रमाण दे दिया था उसी तरह हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार देश में डिजिटल भारत के सपने को साकार करने में जुटे है , डिजिटल शिक्षा, डिजिटल पेमेंट, डिजिटल वित्तीय सेवाएँ, शासकीय प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण आदि इसमें शामिल है । इसी लिए भारत में मीडिया संस्थानों ने भी स्वयं को डिजिटल युग के साथ-साथ कदमताल करने के उद्देश्य से तैयार करना शुरू कर दिया । किन्तु दुविधा आज भी इसके कानूनी गहत्व की है ।

सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने वेबसाइटों पर विज्ञापन के लिए एजेंसियों को सूचीबद्ध करने एवं दर तय करने की खातिर दिशानिर्देश और मानदंड तैयार तो किए हैं ताकि सरकार की ऑनलाइन पहुंच को कारगर बनाया जा सके।

और एक बखान भी दिया जिसमे यहां कहा गया कि दिशानिर्देशों का उद्देश्य सरकारी विज्ञापनों को रणनीतिक रूप से हर महीने सर्वाधिक विशिष्ट उपयोगकर्ताओं वाले वेबसाइटों पर डालकर उनकी दृश्यता बढ़ाना है। नियमों के अनुसार, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय (डीएवीपी) सूचीबद्ध करने के लिए भारत में निगमित कंपनियों के स्वामित्व एवं संचालन वाले वेबसाइटों के नाम पर विचार करेगा।

हालांकि विदेशी कंपनियों के स्वामित्व वाली वेबसाइट को इस स्थिति में सूचीबद्ध किया जाएगा कि उन कंपनियों का शासन कार्यालय भारत में कम से कम एक साल से पंजीकृत हो एवं संचालन कर रहा हो।

नीति के तहत डीएवीपी के पास सूचीबद्ध होने के लिए वेबसाइटों के लिए तय नियमों में हर महीने उनके विशिष्ट उपयोगकर्ताओं की जानकारी देना शामिल है, जिसकी गहराई से जांच की जाएगी और भारत में वेबसाइट ट्रैफिक की निगरानी करने वाले किसी अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त तीसरे पक्ष से सत्यापित कराया जाएगा। इसी नीति के तहत वेबसाइट डीएवीपी द्वारा ऑनलाइन बिलिंग से संबंधित महत्वपूर्ण रिपोर्ट उपलब्ध कराने के लिए काम पर रखे गए किसी तीसरे पक्ष एड सर्वर (3-पीएएस) के जरिए

सरकारी विज्ञापन दिखाएगा। इस तरह के हर वेबसाइट के विशिष्ट उपयोगकर्ताओं के आंकड़े की हर साल अप्रैल के पहले महीने में समीक्षा की जाएगी।

परन्तु विज्ञापन नीति के अतिरिक्त भी महत्वपूर्ण विषय न्यूज पोर्टल या कहें न्यूज वेबसाइटों की कानूनन मान्यता की है । जिस प्रकार भारत में समाचारपत्र प्रकाशित करने के लिए तमाम तरह की मान्यताएं लेनी होती है जिनमे भारत सरकार के अधीनस्थ 'भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय' की ही महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसके पंजीयन होने के बाद ही उसे टाइटल और आरएनआई नंबर मिलता है और फिर समाचार पत्र का प्रकाशन होता है ।

किन्तु न्यूज पोर्टल के लिए फिलहाल सरकार ने कोई व्यवस्था नहीं की है । किन्तु यही हम सुचना और प्रसारण मंत्रालय के आदेशों की माने तो उस विभाग में वेबसाइटो के संचालन की सूचना आवश्यक है तथा उनके लिए उन्होंने भी कुछ नियम तय किये है जो उनके विज्ञापन नीति का हिस्सा भी है।

आइए जानते हैं क्या हैं शर्तें

1. विज्ञापन उन्हीं को दिया जाएगा जो वेबमीडिया और पोर्टल कम से कम 3 साल से चल रहे हों।
2. ऐसे वेबसाइट और पोर्टल जिनके दर का निर्धारण केंद्र सरकार के DAVP से किया गया हो।
3. वेबमीडिया और पोर्टल राज्य के जनसंपर्क विभाग में रजिस्टर्ड होना चाहिए।
4. विज्ञापन मान्यता के आवेदन के लिए वेबसाइट-पोर्टल को अपना रजिस्ट्रेशन सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय में कराना होगा।
5. विज्ञापन वितरण के उद्देश्य से वेब माध्यमों को 3 कैटगरी में बांटा जाएगा।
6. सरकारी विज्ञापन उसी वेबसाइट और पोर्टल को दिया जाएगा, जिसके पास हर महीने कम से कम ढाई लाख HIT आते हों।
7. HIT की गणना के लिए पिछले 6 महीने का रिकार्ड देखा जाएगा।
8. इसके लिए भारत में वेबसाइट ट्रैफिक मॉनीटरिंग करने वाली कंपनी के रिकार्ड मान्य होंगे।

राष्ट्रीय स्तर पर कोई संस्थान ऐसा नहीं बना जो भारत में संचालित वेब न्यूज पोर्टल की रीति-नीति बना पाएं, केवल पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी, भारत सरकार) ही कुछ नियम बना पाया परन्तु वो भी पोर्टल को कानून के दायरे में लाने में असमर्थ रहा । इसके अलावा मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा, झारखण्ड,उत्तरप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश की राज्य सरकारों ने वेब मीडिया के पत्रकारों को प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रतिनिधियों की भांति 'प्रेस अधिमान्यता' की सुविधा राज्य मुख्यालय एवं मण्डल/ जिला स्तर पर प्रदान की है। परन्तु ये राज्य सरकारे भी पोर्टल को नियमानुसार कानुनी दायरे में लाने में असमर्थ है। ये विज्ञापन नीति जरुर बना पाई परन्तु पोर्टल को कानुनी नहीं कर पा रही है।

न्यूज पोर्टल बनवाएं

e NEWS PORTALS

कम खर्च में अधिक आय पायें

वेब पोर्टल की प्राथमिक लागत मूल्य डोमेन, होस्टिंग और डेवलपमेंट को मिला लिया जाए तो 6000 रुपयों से 25 हजार रुपयों के बीच आती है, सालाना खर्च 3000 रुपये से 6000 रुपयों तक आता है। इसी में गूगल द्वारा प्राप्त एड सेंस आदि की कमाई जोड़ी जाए तो इस खर्च की तुलना में कहीं अधिक है। इसी लिए वेब पत्रकारिता को भारत में पत्रकारिता के स्वर्णिम भविष्य के रूप में भी देखा जा रहा है। आय के साथ साथ प्रचलन और तत्परता जैसे वांछनीय गुणों के रहते वेब पत्रकारिता भविष्य के गर्भ में उन्नति का पुष्ट दस्तावेज़ साबित होगी।

उपरोक्त तरीकों के अलावा अन्य तरीकों के बारे में विस्तृत से जानने के लिए

www.enewsportals.com

के कांटेक्ट में जा कर फार्म भरिए। उक्त सन्दर्भ में कोई भी प्रश्न हो तो आप इसी वेबसाइट के कांटेक्ट मेन्यू में जा कर प्रश्न पूछ सकते है। हमारी टीम आपके सवालों का जल्दी ही जवाब देगी।

यदि आप न्यूज पोर्टल बनवाना चाहते है तो आज ही संपर्क करें -

eNewsPortals.com

संपर्क सूत्र-+917067455455 मेल- info@enewsportals.com, enewsportals.com@gmail.com-

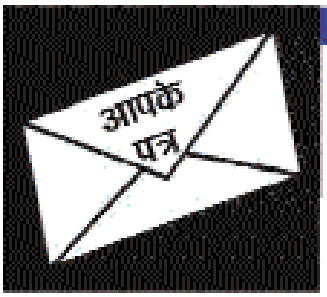

पिंकी परुथी 'अनामिका'

बेहतरीन आवरण पृष्ठ, हल्का गुलाबी और हल्के नीले रंग से *नारी से नारी तक*, एक कोमल अहसास कराता है। पॉन्ड्स की खुशबू, लवमे की कोमलता, जॉनसन एंड जॉनसन का बेबी टच, यॉओ। आज हाथ में आते ही , इस अद्भुत संग्रह के, आल्हादित हूँ।

प्रीति जी मेरी आदर्श हैं साहित्यिक क्षेत्र में, साथ ही शिखा जी का समर्पण और इन दोनों द्वारा *घुमन आवाज,आधी आबादी की गूँज*, का संपादन, संकलन, और प्रकाशन उत्साहित कर रहा है। आप दोनों ही बधाई और सम्मान की पात्र हैं। आपने नारियों को समर्पित यह अंक निकाला है, जो देश भर की 58 नारियों की रचनाओं का संकलन, परिचय सहित, सभी को मोती बनाकर एक माला में पिरोने जैसा है।

कुछ बहनों से परिचित हूँ, कुछ को पुस्तक में देखकर जाना। संवेदनशील हृदयों का संगम, लेखनी को सम्मान देने का प्रयास और एक साझा मंच प्रदान करने के लिए हृदयतल से धन्यवाद।

पृष्ठ संख्या 49 पर मेरी रचना *माँ*, को पढ़कर याद आया कि हाँ, यह रचना तो मैंने ही लिखी थी। प्रीति जी ने कब , कहाँ से उठाकर , उसे सम्मान दिया , यह एक सरप्राइज ही था।

शिखा जी का संपादकीय, *यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता*, सशक्त लेख है, आधी आबादी के लिये, आधी आबादी के साथ । प्रथम प्रयास ही लाजवाब है, शेष के लिये, अग्रिम शुभकामनाएँ।

मेघा जी का गीत *चनिता*, नारी जीवन को आलोकित करती उत्कृष्ट रचना।

राधा जी का *आधार बिन*, समाज में फैली बुराइयों पर बेहतरीन तंज है।

हेमलता जी की *अनमोल धरोहर*, नारी के विभिन्न स्वरूपों को समर्पित रचना है।

शिरीन जी की *चरित्रहीन*, स्त्री के चरित्र पर छींटाकशी करने वालों पर करारा तमाचा है।

सरिता जी की *नानी*, बचपन, नानी का घर और मधुर स्मृतियाँ । वाह।

सुशीला जी का *पर मेरी तो रात यहीं है*, बेहतरीन अभिव्यक्ति, स्त्री और संतोष पर्यायवाची हैं एक दूसरे के।

शालिनी जी का *बजूर*, प्रश्नचिन्ह छोड़ती सार्थक रचना।

अंकिता जी *मैं उड़ चली*, चंचलता और उन्मुक्तता का मिश्रण।

राजकुमारी जी की *लौट आया बचपन*, पोती के साथ समय बिताने से बचपन लौट आया, बहुत खूब।

शिखा श्रीवास्तव जी की *इक्कीसवीं सदी की स्त्रियाँ*, सदी कोई सी भी हो, स्त्री की परिस्थितियों में विशेष अंतर नहीं। दोषी स्वयं भी हैं, अब चुप होकर सहना नहीं है बल्कि मुखर होना है।

डॉ प्रभा जी की *समान धरातल पर*, वर्किंग मेन और वुमेन की जिंदगियों पर आधारित शानदार रचना।

अनिता जी की *बेटियाँ*, लाजवाब गज़ल, बेहतरीन सृजन।

नीमा जी की *दहेज कल और आज*, सामाजिक चेतना का आव्हान करता है।

सुमन जी की लघुकथा *गुरु दक्षिणा*, प्रेरणास्पद कहानी है। पूजा, अर्दली और फिर यही सिलसिला जारी रहे तो हर निर्धन बच्ची को उच्च शिक्षा मिलती जाय। बेहतरीन गुरु दक्षिणा।

सुनीता जी का *पनोरम छंद*, खोती हुई, क्षीण होती हुई मानवीयता, नैतिकता पर सार्थक सृजन।

मंजू जी के *दोहे में सर्दी*, रोचक दोहे हैं।

कविता जी की कविता *एक आंदोलन हो जाए*, देशभक्ति के नाम पर सिर्फ आंदोलन हो जाते हैं, दिखावा मात्र होता है, बुराइयाँ जस की तस हैं। बहुत खूब।

प्रमिला जी का *नव सृजन सी बेटियाँ*, खूबसूरत रचना बेटियों को समर्पित।

रमा जी की *गज़ल*, जागृति जगाती है ।

रीता जी की *हिन्दी कैसे बने जन जन की भाषा*, सरल , सुगम और व्यावहारिक उपाय हैं। बहुत खूब।

शुभा जी की *जन्नत*, किस तरह कश्मीर , जो हमारी जन्नत है, उसे राजनीतिक रणनीति और सियासी दाँव पेंच में उलझकर जहन्नुम सा बना दिया है। गज़ब की भावाभिव्यक्ति, बधाई हो आपको।

रश्मि जी की *फजीहत*, टूटे हुए दिल के बेशुमार दर्द। बहुत खूब।

प्रतिभा जी का लेख *नारी तुम केवल श्रद्धा हो*, नारी की अस्मिता पर प्रहार का प्रत्युत्तर देता हुआ शानदार लेख।

नविता जी की *जननी की पीड़ा*, नारी की सहनशीलता और सहृदयता का सजीव चित्रण है।

भारती जी की *नाव*, कठिनाइयों से जूझते हुए निरंतर आगे बढ़ने की सतत प्रक्रिया को दर्शाती है आपकी रचना, सकारात्मक सोच का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कुसुम जी की *सही*, मेहनत करने वाला इंसान कभी विपत्ति से नहीं घबराता, आत्मविश्वास जगाती है आपकी रचना।

सीमा शिवहरे जी की , *हमारी सीमा तय है*, औरत के लिए समाज द्वारा तय सीमाएँ और उनकी पराकाष्ठा दर्शाती है यह रचना।

डॉ मीनू पाण्डेय जी की *जिन्दगी*, जिन्दगी को लेकर सशक्त अभिव्यक्ति।

डॉ वर्षा जी की *मौन*, छंदमुक्त रचना की शानदार प्रस्तुति। वाह , द्वंद्व के चलते मन में उमड़ते घुमड़ते भाव, सशक्त लेखनी।

पूनम झा जी की लघुकथा *अदृश्य फफोले*, अपनी नन्ही जान को खो देने का दर्द, ऊपर से लोगों के निष्ठुर से बोल दिल में अदृश्य फफोले के समान उभर आते हैं , जब जब भी उन पुरानी घटनाओं को हम याद करते हैं, बहुत सुन्दर और मार्मिक चित्रण।

अंशु जी की *एसिड अटैक के खिलाफ एक खूबाल* , बेहतरीन गज़ल।

मीना जी की *महिला जीवन*, नारी जीवन के भिन्न-भिन्न स्वरूप और उनका महत्व, और स्वयं को संतुष्ट करती हुई सी रचना, बहुत खूब।

सुधा जी का संस्मरण *तुम आबाद रहो , मेरा क्या?*, समाज में फैले हुए अंधविश्वास और दुर्व्यवहार का बखूबी चित्र खींचा है।

डॉ उषा किरण जी, की *रसवंती निशा*, सुन्दर भाव और शब्द संयोजन से रची गई खूबसूरत रचना।

आयुषी जी की *माँ मुझसे तू बोलना*, माँ को समर्पित बेहद खूबसूरत सृजन।

इंजी. आशा जी का लेख *साइड इफेक्ट*, जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रकृति और पर्यावरण पर हो रहे साइड इफेक्ट विषय को लेकर बहुत अच्छिया लेख।

मीनाक्षी जी की *प्यार के फूल*, नफ़रत को मिटाने और प्यार को बढ़ाने का सुन्दर संदेश देती हुई खूबसूरत रचना।

रेखा जी का *नारी सशक्तिकरण*, बेहतरीन लेख है।

ज्ञानीसिंह जी की *तैयारी नए साल की*, नए साल में नया लिखने के लिए कविमन तैयार है। बहुत खूब।

कविता जी की लघुकथा *अंतर*, देवर भाभी के बीच में किसी पार्टी को लेकर संवाद और भाभी सुनंदा का बुद्धिमानी से उत्तर , तारीफे काबिल है।

माधुरी जी का *महिला सक्षमीकरण*, गज़ब का लेख है, सशक्त और प्रभावशाली है, उदाहरण के साथ और विस्तृत तथा खुले विचारों सहित , लेखनी को नमन।

अंजली जी की *आज दिल की हर बात कहाँ हैं*, आत्मविश्वास, स्वावलंबी, सक्षम , सफल नारी की शानदार अभिव्यक्ति।

नीरजा जी की, *मैं हूँ नीर से जन्मी नारी*, एक एक शब्द कोमल अहसास कराता हुआ, विभिन्न धर्म निर्वाह करते हुए, स्वयं की अस्मिता को बचाते हुए, आगे बढ़ती है नारी और धरती को तृप्त करती है, जन्म सार्थक करती है नीरजा कमलिनी।

मेरी रचना *माँ* , आपके समीक्षार्थ।

अविंना जी की *प्रेम गिरह*, प्रेम रस में डूबी हुई सुन्दर रचना।

डॉ नीना की *स्त्रीत्व*, अपने अस्तित्व की तलाश करती हुई स्त्री की भावना।

डॉ दीप्ति की *बेटी घर की फुलवारी*, दो कुलों का मान, घर की शोभा हैं बेटियाँ, साथ ही भ्रूण हत्या रोकने का संदेश देती है आपकी रचना।

आरती जी की *सूना जीवन*, एक माँ के अकेलेपन को , उसके भावों को बखूबी निभाया है।

डॉ लता की लघुकथा *तार होते रिश्ते*, दिल को झकझोर देने वाली कहानी, मजबूर माँ, वहशी बाप , नाबालिग लड़की, बाल विवाह , हर जगह प्रश्न चिन्ह। बेहद मार्मिक, रोना आ गया।

आभा सिंह जी की *औरत*, छंदमुक्त सशक्त रचना, बेहतरीन अभिव्यक्ति।

रमा जी की *भारतीय नारी की दशा*, निर्णय न ले पाने का अधिकार, इज्जत से खिलवाड़, सब हो रहा है, फिर भी आज की नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है, आसमान छू रही है। लेकिन डर भी रही है, कहीं खत्म हो, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

पूनम आनंद जी की *जश्न आज़ादी*, देशप्रेम पर लाजवाब अभिव्यक्ति।

कीर्ति जी की *महिला दिवस*, उत्कृष्ट सृजन है, पुरुष समाज पर कटाक्ष करते हुए महिला दिवस , सिर्फ एक ही दिन मनाने पर, पुरुष को कोई दिक्कत नहीं है क्योंकि आखिर हर जगह चलती तो उसी की है। बहुत खूब।

अर्पणा जी की *तू कुछ खुदा सा है*, इश्क, प्यार, मोहब्बत, रूहानी अहसास , गज़ब , बहुत खूब।

रागिनी जी की *मक्खियाँ नहीं पूजी जाती*, शानदार गज़ल, बेहतरीन अभिव्यक्ति, परिश्रम का महत्व दिखाती रचना।

बीना जी की *बाल विवाह अभिशाप है*, शीर्षक ही बता रहा है विषय, शब्दों का चुनाव और संयोजन लाजवाब है।

प्रज्ञा जी की *माँ नर्मदा*, अति सुन्दर प्रार्थना है, माँ नर्मदा के जन्मोत्सव पर, भक्तिमय दृश्य प्रकट किये हैं कविता के माध्यम से। सादर वंदन।

अदिति जी की *प्रार्थना*, मनोहारी स्तुति है , ईश्वर से, परोपकार हो उद्देश्य, न कोई आहत हो कर्म से मेरे, न माँगना पड़े किसी से कभी हाथ फैलाकर, बस जितना दो संतोष से रहूँ, इतने सुन्दर भावों से सजाई गई है रचना। वाह।

अंतिम पृष्ठ पर हस्ताक्षर बदलो अभियान के तहत पाठक फोटोकॉपी करा के अभियान को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं।

पूरी पुस्तिका मन को भा गई। अनंत शुभकामनाएँ।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए,राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी । भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करूँगी।

मै हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,

हस्ताक्षर- .....

भवदीय,

हस्ताक्षर- .....

नाम-.....

पिता का नाम-.....

पता-.....

.....

संपर्क-.....

व्हाट्सअप-.....

अणुडाक (ईमेल)-.....

एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर

क्या आप बनना चाहते हैं भाषा सारथी

क्योंकि

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें जुटकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा,
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा,
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करनी होगी,
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी,
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा,
- हिन्दी भाषीयों की मदद करना होगी,
- हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगीताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होग
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना,कार्ययोजना बनाकर लोगो को हस्ताक्षर बदलनें के लिए प्रेरित करना ।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ जो हिन्दी के लिए करनी होगी,

यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़िए,

मातृभाषा उन्नयन संस्थान *हिन्दी ग्राम* व *अंतरा-शब्दशक्ति* से

सम्पर्क करें

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *हिन्दी ग्राम*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
प्रधान सम्पादक- *खबर हलचल न्यूज*

डॉ.प्रीति समकित सुराना
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *अन्तरा शब्दशक्ति*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
निदेशक- *खबर हलचल न्यूज*

भारतीय सेना के शूरवीरों को समर्पित

शौर्य फिल्मों का प्रदर्शन

26 अप्रैल से **1** मई, 2018

प्रतिदिन सांय 6.00 बजे

शौर्य स्मारक, अरेरा हिल्स, भोपाल

26 अप्रैल 2018

Any Task, Any Time, Any Where

निर्माता/निर्देशक - एम.एन. घाटे

27 अप्रैल 2018

Search Light on Leadership

निर्माता - मोहन वाधवानी

निर्देशन - रवि प्रकाश

28 अप्रैल 2018

For the High Seas

निर्माता - मुशीर अहमद

निर्देशक - जी.आर. ठाकुर

29 अप्रैल 2018

I.T.P.B. Conquer Everest

निर्माता - वाई.एन. इंजीनियर

निर्देशन-विनोद कुमार, भीमसेन भोंसले

30 अप्रैल 2018

बुद्ध पूर्णिमा

शासकीय अवकाश

1 मई 2018

Ready for Action

निर्माता - एज़रा मीर

निर्देशक - शांति वर्मा

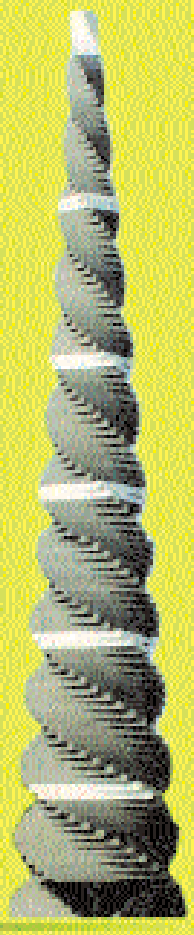

शौर्य स्मारक अवलोकन समय - प्रतिदिन दोपहर 12.00 से सांय 7.00 बजे तक (अवकाश - बुधवार)

प्रवेश सहयोग राशि : भारतीय नागरिक (10 वर्ष से अधिक) 10/-, विदेशी नागरिक (10 वर्ष से अधिक) 250/-, संस्थाओं के लिए (20 से अधिक समूह) 5/- विकलांग, सैनिक/पूर्व सैनिक (परिचय पत्र के आधार पर) निःशुल्क, फोटोग्राफी (बिना फ्लैश एवं स्टैण्ड के) 50/-

दूरभाष : 0755-2578633

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग, स्वराज संस्थान संचालनालय

E-mail - swarajbhavan@gmail.com, shauryasmarak@gmail.com, radioazadhind@gmail.com

www.facebook.com/shauryasmarakwarmuseum, http://www.facebook.com/radioazadhind

देश का चैनल देश के लिये

रेडियो आज़ाद हिन्द 90.8MHz

प्रसारण : प्रतिदिन प्रातः 7.00 से रात्रि 10.00 बजे

For online radio visit : www.radioazadhindfm.org

For listening on mobile : MP Mobile app & mixlr app

शौर्य स्मारक के आगंतुकों से साक्षात्कार का प्रसारण

प्रतिदिन प्रातः 10.20 बजे

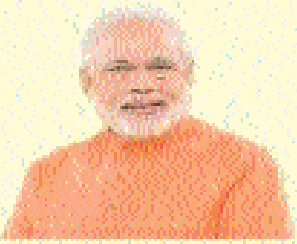

वित्तीय सेवा विभाग
वित्त मंत्रालय
भारत सरकार
www.financialservices.gov.in
प्रधानमंत्री
वय वंदना योजना
विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों के लिए
Plan No.842
UIN: 512G311V01
मासिक पेन्शन के लिए 8% प्रतिवर्ष प्रभावी प्राप्ति
(8.30% प्रतिवर्ष के समकक्ष)
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
हमारे देश के वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण के लिए भारत सरकार द्वारा विशिष्ट प्रबंधक के रूप में एलआईसी के सहयोग से एक अनुदानित एवं आकर्षक पेन्शन योजना की घोषणा की जाती है.
न्यूनतम - ₹ 1,50,000/- (मासिक पेन्शन के लिए),
अधिकतम - ₹ 7,50,000/-
न्यूनतम पेन्शन : ₹ 1000/- प्रतिमाह,
अधिकतम पेन्शन : ₹ 5,000/- प्रतिमाह.
www.licindia.in
Follow us : LIC India Forever
IRDAI Regn No.: 512
LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
जिन्दगी के साथ भी, जिन्दगी के बाद भी.
प्रधानमंत्री के सपनों को साकार करने की दिशा में भारतीय जीवन बीमा निगम का एक और प्रयास.